fo|kFkh dh dye ls

राष्ट्रीय समस्याएं व उनका समाधान

(अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता)

प्रकाशक

vf[ky Hkkjrh; v.kqor U;kl] ubZ fnYyh

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

संस्करण : 2017
आशीर्वचन : महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

सम्पादक मण्डल : सम्पतमल नाहाटा
प्रमोद घोड़ावत
विजय वर्धन डागा

कार्यकारी सम्पादक : महेन्द्र शर्मा

संयुक्त सम्पादक : रमेश काण्डपाल

मूल्य : ₹100.00

प्रकाशक : अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

मुद्रक : इंद्रप्रस्था प्रैस (सी.बी.टी.)
4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002

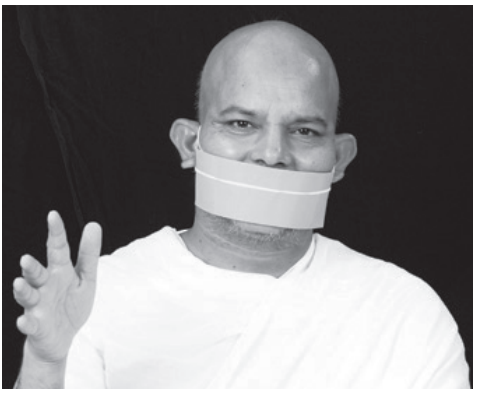

vkpk;l Jh egkJe.k

।। अर्हम् ।।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में मानवजाति को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत संयम, नैतिकता और चरित्रनिष्ठा से जुड़ा आन्दोलन है। उसे स्वीकार कर आदमी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

'अणुव्रत न्यास' गत अनेक वर्षों से शिक्षा जगत् में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रयत्नशील है। प्रस्तुत पुस्तक उसी प्रयत्न का प्रतिफल है। इसका रसास्वादन कर जनता आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त हो। शुभाशंसा।

पावापुरी, बिहार

vkpk;l egkJe.k

समस्याएं हैं तो समाधान भी

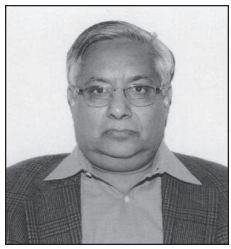

lEirey ukgkVk

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी पुस्तक 'अहिंसा और शांति' में लिखा है कि मनुष्य का जीवन समस्या संकुल है। वह अगणित समस्याओं से भरा हुआ है। इतनी समस्याएं हैं कि एक जीवन क्या अनेक जीवन बीत जायें तो भी उनका समाधान न हो। जिस दिन समस्याएं नहीं रहेंगी, वह क्या करेगा? अपना समय कैसे बितायेगा? एक जाल सा बिछा हुआ है। समस्याएं भी चलती हैं, समाधान भी चलते हैं। जीवन का यही क्रम है समस्याएं आती रहें, सुलझती रहें। जहां से समस्या आती हैं वहीं से समाधान भी आता है। अगर हम समस्याओं को वर्गीकृत करें तो दो प्रकार की समस्याएं सामने आती हैं–यथार्थ की समस्या और कल्पना की समस्या। जितनी भौतिक समस्याएं हैं, आर्थिक समस्याएं हैं, वे यथार्थ की समस्याएं हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि ध्यान के द्वारा इनका सीधा समाधान हो जाएगा। खेती किये बिना पेट नहीं भरेगा। जो भौतिक समस्याएं हैं, पदार्थ की समस्याएं हैं, उनका समाधान श्रम और बुद्धि के द्वारा होगा।

काल्पनिक समस्याएं मानसिक समस्याएं हैं। मनुष्य न केवल यथार्थ की समस्याओं से ही घिरा हुआ है किन्तु मानसिक समस्याओं से भी वह पीड़ित है। गलत मान्यताएं, गलत धारणाएं, गलत सामाजिक मूल्य–ये सब मानसिक समस्याएं हैं। दहेज की समस्या, मिलावट की समस्या और इस प्रकार की अन्य जितनी भी समस्याएं हैं। मानसिक समस्याएं हैं। ऐसे मापदण्ड बना लिए हैं, ऐसे मूल्य निर्मित कर लिए हैं, जिनकी पूर्ति के लिए बहुत कुछ भुगतना पड़ता है।

यथार्थ की समस्या और मानसिक समस्या के साथ जुड़ी है भावनात्मक समस्या। ध्यान का मुख्य प्रयोजन मानसिक एवं भावनात्मक समस्याओं को सुलझाना है। यह मानना समीचीन नहीं है कि ध्यान के द्वारा सब कुछ सुलझ सकता है या धन के द्वारा सब कुछ हो सकता है। दोनों की अपनी सीमाएं हैं।

कुछ लोग ऐसे हैं जिनके सामने भौतिक समस्याएं नहीं हैं, आर्थिक समस्याएं नहीं हैं किन्तु मानसिक व भावनात्मक समस्याओं से ग्रस्त हैं। यही दुख है और दुख का कारण है। ध्यान चंचलता की समस्या को मिटा सकता है किंतु यथार्थ की समस्या को नहीं। बहुत सारे वैर–विरोध, शत्रुता, आपसी झंझट, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कलह मानसिक और काल्पनिक समस्याओं के कारण होते हैं। अणुव्रत की विचारधारा के द्वारा की इनसे निपटा जा सकता है। जहां ध्यान का मूल्य है, उसका अंकन करें। जहां श्रम का मूल्य है, वहां उसका अंकन करें। इन दानों सच्चाइयों का समान मूल्यांकन ही जीवन को समस्याओं से सर्वथा मुक्त बना सकता है।

आचार्य तुलसी ने स्थितियों को उबारने के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत आंदोलन एक मानवीय आचार–संहिता है। वर्तमान युग में राष्ट्रीय हित के लिए जितना सहायक अणुव्रत आन्दोलन हो सकता है, उतना शायद दूसरा हमें खोजना होगा। अणुव्रत का नियम है, मैं जाति के आधार पर किसी को ऊंचा–नीचा नहीं मानूंगा, संप्रदाय के आधार पर किसी से घृणा नहीं करूंगा। जब तक हमारे जीवन में ये मूलभूत बातें नहीं आतीं, तब तक हम एकता की बात सोच भी नहीं सकते। एक शब्द में कहा जाये तो विखंडित व्यक्तित्व द्वारा एकता की बात सोची नहीं जा सकती। हमारा व्यक्तित्व खण्डित व्यक्तित्व है। अखंड व्यक्तित्व के द्वारा ही एकता और अंखडता का स्वर सार्थक हो सकता है।

आज की यह अपेक्षा है अखंड व्यक्तित्व का निर्माण किया जाये। शिक्षा संस्थान और धर्म शक्ति दोनों पर दायित्व है अखंड व्यक्तित्व के निर्माण का, समग्र व्यक्तित्व के निर्माण का। व्यापक दृष्टिकोण, उदार चिन्तन,

चरित्र का विकास, तपस्या और सहिष्णुता की शक्ति ये सारी बातें उस व्यक्तित्व में समाविष्ट हैं।

वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिए अहिंसा यात्रा के माध्यम से गांव–गांव, शहर–शहर में पदयात्रा कर रहे हैं एवं इस यात्रा के माध्यम से नशामुक्ति, नैतिकता व सद्भावना का संदेश दे रहे हैं। पूज्यवर के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने हेतु अणुव्रत न्यास कृत–संकल्पित है। अणुव्रत अनुशास्ता के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने में इस विशाल प्रतियोगिता से जहां हजारों बच्चे जुड़ रहे हैं, वहीं अणुव्रत न्यास के कर्मठ कार्यकर्ता इस मिशन को फलीभूत करने के लिए अथक श्रम कर रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'राष्ट्रीय समस्याएं व उनका समाधान' विद्यार्थियों द्वारा लिखित निबंधों के लेखन–कौशल का उत्कृष्ट नमूना है। मैं इस पुस्तक में संकलित विद्यार्थी लेखकों, पुस्तक में अपना श्रम लगाने वाले अणुव्रत कार्यकर्ताओं का हृदय से धन्यवाद करता हूं कि हम सब मिलकर आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के सपनों को साकार करने में अपना सहयोग दें एवं पुनः भारत को सर्वोच्च स्थान पर आसीन करें।

lEirey ukgkVk
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, दिल्ली

çekn ?kkMkor

बुनियाद पर ध्यान केन्द्रित हो

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी 20वीं सदी के एक विशिष्ट महापुरुष थे। उनका कर्तृत्व बहुमुखी था। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम उन्होंने एक सफल धर्मक्रांति की। उन्होंने नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा, राष्ट्रीय समस्या व उसके समाधान के लिए जन जागरण का सघन अभियान चलाया। वे कहते थे राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का आधार विद्यार्थी हैं।

मनुष्य का जीवन एक भवन की तरह है। जिस प्रकार भवन की मजबूती उसकी नींव की मजबूती पर निर्भर करती है, उसी प्रकार आदर्श विद्यार्थी जीवन की बुनियाद सशक्त होनी जरूरी है। यदि विद्यार्थी–अवस्था में सुसंस्कारों का वपन नहीं हो तो जीवन कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। इसलिए अध्यापकों और अभिभावकों को बच्चों में सुसंस्कार वपन की दृष्टि से पूर्ण सजग रहना चाहिए। इसी से एक स्वस्थ समाज और विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

विद्यार्थी जीवन वृक्ष की कोमल टहनी जैसा होता है। उसे अपनी इच्छानुसार झुकाया जा सकता है, मोड़ा जा सकता है। पर वही टहनी जब मोटी हो जाती है, तब उसे झुकाना, मोड़ना कठिन हो जाता है। इस रूपक के माध्यम से दृश्टव्य है कि विद्यार्थी जीवन के इस स्वर्णिम अवसर का उपयोग करते हुए छात्र–छात्राएं चारित्रशीलता, नीतिनिष्ठा, विनय, अनुशासन के पथ पर अग्रसर हों। इन संस्कारों के अभाव में उनका भविष्य धुंधला बन जाता है, जो कि न उनके स्वयं के लिए काम्य है और न समाज व राष्ट्र के लिए।

बच्चों को सुसंस्कारित करने के लिए भारतीय शिक्षा–पद्धति में उन्हें व्यापक और उदार नैतिक शिक्षा देने का क्रम रहा है, लेकिन दुर्भाग्य से आज वह क्रम बंदप्रायः हो गया है। उसी का यह दुष्परिणाम है कि आज की नई पीढ़ी में अनुशासनहीनता जैसी बुराइयां पनप रही हैं। यह क्रम पुनः प्रारंभ करके इन अवांछनीय प्रवृत्तियों को बढ़ने से रोका जा सकता है।

विद्यार्थी वर्ग संस्कारों की दृष्टि से स्वयं जागरूक रहे। आज राष्ट्र में जो नैतिक अधःपतन हो रहा है, उसे रोकने के लिए उसकी यह जागरूकता निर्णायक भूमिका निभाएगी। यदि एक–एक विद्यार्थी यह संकल्प कर लेता है कि मैं किसी अनैतिक आचरण को अपने जीवन में स्थान नहीं दूंगा, अनुशासनहीनता और उच्छृंखलता जैसी प्रवृत्तियों से कोसों दूर रहूंगा तो राष्ट्र की तस्वीर स्वतः बदल जायेगी। समाज और राष्ट्र के भावी कर्णधार आज के विद्यार्थी ही हैं। उनका जीवन बुराइयों से जिस सीमा तक अछूता रहेगा, वे समाज और राष्ट्र की उतनी ही अच्छी सेवा कर सकेंगे। अणुव्रत आंदोलन विद्यार्थियों की नैतिक एवं चारित्रिक चेतना जागृत करने का अभियान चला रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि राष्ट्र के विद्यार्थी बड़ी संख्या में इस अभियान के साथ जुड़ रहे हैं।

'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' इस दिशा में विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण का जो कार्य कर रहा है वह अपने आप में एक सफल प्रयास है। लाखों विद्यार्थियों का भाग लेना यह दर्शाता है कि अणुव्रत की बात उनके लिए उपयोगी सिद्ध हो रही है। 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' के कार्यकर्ता इस भगीरथ प्रयास में सतत् प्रयत्नशील हैं। विद्यालयों के विद्यार्थियों के माध्यम से चरित्र निर्माण के इस विराट प्रयास को जन–जन तक पहुंचाने हेतु जो श्रम कर रहे हैं वह सराहनीय है। अणुव्रत एक ऐसा माध्यम है जिससे राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान हो सकता है एवं अणुव्रत के दो आयाम जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के सहयोगी हैं।

çekn ?kkMkor
राष्ट्रीय संयोजक
अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक / लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	गरीबी छू रही है आसमान	हर्षित कौशिक	3
2.	प्रशासनिक ढांचे को बदला जाए	सौरभ डूडी	7
3.	प्रदूषण मानव जाति के लिए जहर	अनन्या	11
4.	भाषा की समस्या से हो जाते हैं झगड़े	लक्षिता	15
5.	समस्याओं का निदान सिर्फ कानून से नहीं	अभिक गुप्ता	19
6.	न्याय व्यवस्था में भी भ्रष्टाचार	नीलम बोरा	23
7.	जागरूक बनें, अपना कर्तव्य समझें	प्रतिभा बैद	27
8.	प्रतिभा पलायन को रोकना होगा	हरगुन सिंह	31
9.	पीने के पानी की गंभीर समस्या	साक्षी एम. रंधे	34
10.	आपस में मिलकर रहने की जरूरत	आर.एस. दुर्गेश राय	37
11.	जनता के धैर्य की परीक्षा न ली जाए	अदिति मित्तल	41
12.	नारी आगे बढ़ेगी तो देश भी बढ़ेगा	हिमांशी	46
13.	दोषपूर्ण शिक्षा भी जिम्मेदार	साक्षी राधे मोहन मिश्रा	49

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
14.	किसी के स्वास्थ्य से न हो खिलवाड़	निशा चांडक	52
15.	बढ़ती ही जा रही है बेरोजगारी	अर्पिता सिंह	57
16.	चुनौतियां हैं, पर समाधान जरूरी	उर्वशी शर्मा	60
17.	राजनेता ही भ्रष्टाचार की जड़	टी सोनल चोपड़ा	64
18.	युवा बदल सकते हैं राह	पूजा कुमारी	66
19.	साफ–सफाई पर हो विशेष ध्यान	साक्षी शर्मा	70
20.	अशिक्षा को किया जाए दूर	अभिनंदन कुमार	74
21.	बढ़ती कीमतों से गरीब का जीना दूभर	साक्षी शाक्या	78
22.	गांवों की तरफ कोई ध्यान नहीं	उज्जवल सिंह	81
23.	कोशिशें बहुत, पर आतंक नहीं मिट रहा	कनिष्का जैन	83
24.	जातिवाद का जहर, देश पर कहर	रितिका	86
25.	जमाखोरों पर हो कठोर कार्रवाई	कैलाश गोयल	90
26.	दहेज एक मानसिक कोढ़ है	अपूर्वा मलिक	93
27.	कदाचार से दूर रहें व सदाचार के पास	आदित्य	96
28.	पानी का सही हो उपयोग	सपना	99
29.	योजनाओं के नाम पर ठेंगा	परमहंस सिंह	102
30.	प्रदूषण से आ रही हैं दैवीय विपत्तियां	तनिषा गौतम	106

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक / लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
31.	शिक्षा प्रणाली में 'डोनेशन' बंद हो	राहुल सिवाच	110
32.	भ्रष्टाचार के पंजे में सेना भी	आश्विनी धनंजय दात्तरे	114
33.	किसानों पर कौन देगा ध्यान?	आशावरी गायकवाड़	118
34.	सर्वशिक्षा के दावे खोखले	अंकित कुमार	122
35.	परस्पर प्रेम व भाईचारा हो	अंकिता कस्वां	126
36.	पानी की बर्बादी नहीं, उसे बचाएं	तुबा बेगम	130
37.	आफत लेकर आई कमरतोड़ महंगाई	चिन्मयी शर्मा	134
38.	बड़े–बड़े वादे हो गए बेमानी	निशा कुमारी दास	137
39.	वृद्धाश्रमों की जरूरत क्यों?	ज्योती मंगेश खेडेकर	141
40.	युवाओं में नशे की आदत चिंताजनक	प्रज्ञा सिंह चौहान	145
41.	रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएं	मुस्कान	149
42.	मजदूरी के लिए मजबूर हैं नौनिहाल	शैफाली कोटनाला	153
43.	स्वार्थ छोड़ मिल कर चलना होगा	मयंक सिंह	156
44	ऐसी शिक्षा हो, रोजगार दे जो	मनप्रीत सिंह	159
45.	नशाबंदी के लिए सब हों एकजुट	आदित्य वर्मा	162
	English		
46.	India is secular country	Apurva	167
47.	Terrorism is one of the growing problems	Sree Lakshmi A.S.	170

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक / लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
48.	Money can give us luxury but not relief	Diksha Kushwaha	174
49.	Child labour destroys childhood	Archit Gupta	177
50.	Communal violence in India is alarming	Krishangi Kaushik	181
51.	Educated people secure a respectable position	Saksham Jain	184
52.	Terrorism must be strictly abandoned	Udith Krishnan	188
53.	Unemployment is a serious problem	Chaitanya Lonare	190
54.	Poverty is responsible for malnutrition	Vijaya Bohra	193
55.	Crop insurance is a must	Amrit S.	196
56.	India suffers from over population	Pooja	199
57.	Agriculture must be profitable	Aniket Purshottam Pandey	202
58.	Corruption is wide spread in India	Dipanshu Sharma	206
59.	Every problem has a solution	Zainab Ali	209
60.	Corruption is a major problem	Rudhi Gupta	211

हिन्दी

गरीबी छू रही है आसमान

◈ gf"kr dkf'kd नौवीं
रेनबो इंग्लिश सी. सै. स्कूल
सी–3, जनकपुरी, दिल्ली

विकास और तरक्की के नजरिए से दरिद्रता एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि भारत में दरिद्रता आसमान छू रही है। इसकी वजह से लोगों को बहुत-सी परेशानियां झेलनी पड़ती हैं क्योंकि वह अपनी सारी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते। इसकी वजह से खराब स्वास्थ्य, शिक्षा का ना मिलना और अन्य कई समस्याएं भी जन्म लेती हैं।

rरक्की और विकास ही एक देश की जरूरत है। आज के युग में, एक देश को अच्छा तभी माना जाता है जब उस देश में तरक्की और विकास होता हो। एक देश को विकासशील तभी कहा जाता है जब हर क्षेत्र में वह देश तरक्की करे और दिन–प्रतिदिन एक नई सफलता को छूए।

वैसे तो एक विकसित देश के दो ही पहलू होते हैं– तरक्की एवं विकास। परंतु एक देश में विकास व तरक्की की राह में अनेक समस्याएं आती हैं जो कि किसी राष्ट्र के विकास में रोड़े अटकाती हैं। आजकल हम लोग अपनी दिनचर्या में ही सैकड़ों समस्याओं का सामना करते हैं और उनमें से कई समस्याएं ऐसी हैं जो कि पूरे राष्ट्र की समस्या है। यही वह समस्याएं हैं जिनकी वजह से हमारा देश विकसित नहीं हो पा रहा है। आइए, इनमें से कुछ समस्याओं के बारे में विस्तार से जानें।

nfjærk% इनमें से एक प्रमुख समस्या है दरिद्रता। दरिद्रता एक ऐसी नाकामी है जिससे एक व्यक्ति अपनी व अपने परिवार की रोजमर्रा की

जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। किसी व्यक्ति के पास धन, भोजन, मकान, कपड़े व अन्य चीजें न होना भी दरिद्रता कहलाता है। भारत में दरिद्रता का मुख्य कारण है बेरोजगारी। भारत में बेरोजगारी इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि उसकी वजह से लोग दिन–प्रतिदिन और ज्यादा गरीब होते जा रहे हैं।

विकास और तरक्की के नजरिए से दरिद्रता एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि भारत में दरिद्रता आसमान छू रही है। इसकी वजह से लोगों को बहुत–सी परेशानियां झेलनी पड़ती हैं क्योंकि वह अपनी सारी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते। इसकी वजह से खराब स्वास्थ्य, शिक्षा का ना मिलना और अन्य कई समस्याएं भी जन्म लेती है। महात्मा गांधी के अनुसार– ''आलस्य दरिद्रता का मूल है।''

cky etnjh% ऐसी ही एक और समस्या है बाल मजदूरी। यह भी हमारे देश की गंभीर समस्या है क्योंकि हमारे देश में काफी बच्चे ऐसे हैं जो कि पढ़ने की जगह मजदूरी करते हैं। कई दफा तो बच्चों को खतरनाक कामों में भी लगाया जाता है जो उनकी सेहत के लिए नुकसानदायक है। ऐसा ही एक उदाहरण है चूड़ी बनाने वाली फैक्ट्री (बैंगल मेंकिग फैक्टरी), जिसमें छोटे–छोटे बच्चों से काम करवाया जाता है और उन्हें बहुत बदसलूकी से मारा भी जाता है। उनको तनख्वाह भी बहुत कम दी जाती है।

इन सभी कारणों की वजह से ही भारत के बच्चों का भविष्य अंधकार में है। इन सब चीजों को रोक देना चाहिए ताकि हमारे देश के बच्चे एक बेहतर जीवन व्यतीत कर सकें। भारत में कुल 1.26 करोड़ बाल मजदूर हैं जो कि 50 रु. से भी कम तनख्वाह पर काम करते हैं।

fyx vlekurk% यह भी हमारे पूरे राष्ट्र की समस्या है। जैसा कि आप सब जानते हैं कि भारत में लड़का व लड़की में बहुत समय से भेदभाव किया जाता रहा है जो कि आज तक कायम है। प्राचीनकाल से ही मां–बाप अपनी लड़की को बोझ समझते हैं और आज 21वीं सदी में भी लोग उसी प्रथा को मानते आ रहे हैं। भारत में लड़कियों

को शुरू से ही कम सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, जैसे पूरी शिक्षा न मिल पाना आदि।

आज के युग में लड़कियों पर अनेक प्रकार की पाबंदियां लगाई जाती हैं जो कि नहीं लगानी चाहिए और उन्हें अच्छी से अच्छी सुविधाएं देनी चाहिए तथा उन्हें भी लड़कों के बराबर अवसर मिलने चाहिए ताकि वह भी आगे बढ़ सकें।

fuj{kjrk % राष्ट्रीय समस्याओं की सूची में एक और नाम आता है निरक्षरता। निरक्षरता का अर्थ है ज्ञान न होना। यह एक बहुत जरूरी चीज़ है किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व निखारने के लिए। आज भी भारत में सभी व्यक्ति शिक्षित नहीं हैं और इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसे पढ़ाई के लिए पैसों का न होना, पिछड़े इलाके की वजह से विद्यालय न होना या कोई अन्य मुख्य कारण भी हो सकता है।

शिक्षा आज के समय में बहुत जरूरी है क्योंकि इसके बिना आजकल कुछ भी संभव नहीं है। इसी विषय में भारत सरकार ने कई योजनाएं भी बनाई हैं। उनमें से एक है कि 14 वर्ष व उससे छोटे बच्चों को मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाएगी।

भारत की साक्षरता दर है 74.06 प्रतिशत जो कि अन्य देशों से काफी कम है। अंदोरा और फिनलैंड जैसे देश 100 प्रतिशत दर के साथ सूची में सबसे ऊपर हैं। शिक्षा भारत की तरक्की के लिए बहुत जरूरी है।

lek/kku

इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हमें कुछ कदम उठाने पड़ेंगे वरना ये राष्ट्रीय समस्याएं हमेशा–हमेशा के लिए हमारे देश की समस्या बन जाएंगी। उनमें से कुछ उपाय हैं।

- महिलाओं को शिक्षा न मिलना भी एक राष्ट्रीय समस्या है और हमें ज्यादा से ज्यादा प्रयास करने होंगे जिससे भारतीय महिलाएं शिक्षित हो सकें और अपने देश का गौरव बढ़ा सकें। महिलाओं को शिक्षा देने हेतु भारतीय सरकार द्वारा कई योजनाएं प्रारंभ की गई हैं, जैसे बेटी

बचाओ, बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय आदि। इन सभी योजनाओं के तरत महिलाओं को शिक्षा प्रदान की जा रही है।

- लड़कों व लड़कियों में असमानता नहीं करनी चाहिए क्योंकि लड़कियों में भी उतनी ही प्रतिभा है जितनी लड़कों में है परंतु उन्हें पूरा मौका नहीं मिलता। जितनी भी विकसित सूची में देश आते हैं उनमें लिंग समानता है और वहां पुरुष व महिला कदम से कदम मिलाकर चलते हैं और भेदभाव नहीं करते। भारत में लड़कियों पर कई प्रकार की रोक लगा दी जाती है जो कि एक विकासशील देश के लिए अच्छा नहीं है।
- भारत में शिक्षा का अभाव है जिसके कारण ये सारी समस्याएं उत्पन्न होती हैं और जनता को परेशान करती हैं। हमें कुछ ऐसे तरीके अपनाने होंगे जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग शिक्षा प्राप्त करें। शिक्षा की वजह से 'बाल मजदूरी', जाति–पाति भेदभाव व अन्य चीजें खत्म हो जाएंगी और हमारा देश प्रगति की राह पर चलेगा।

अंततः मैं यही कहना चाहूंगा कि हमें वह सारे प्रयास करने होंगे जिससे यह सारी समस्याएं खत्म हो जाएं व हमारा देश आगे बढ़े क्योंकि अगर अभी यह प्रयास नहीं किए गए तो बहुत देर हो जाएगी और हमारा देश दलदल में बुरी तरह फंस जाएगा। ◈

प्रशासनिक ढांचे को बदला जाए

◈ lkjÒ MMh बारहवीं
राजकीय फोर्ट उ.मा. विद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

अयोग्य जन प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार जनता को होना चाहिए। चुनाव में खड़े होने वाले व्यक्ति की सम्पत्ति तथा आचरण की जांच होनी चाहिए। राजनीति में अपराधियों का प्रवेश रुकना चाहिए। पूंजीवादी आर्थिक नीति को, जो विदेशी पूंजी पर आधारित है, बदलकर जनवादी, स्वदेशी अर्थनीति को अपनाया जाना चाहिए। प्रशासन में शुचिता और पारदर्शिता होनी चाहिए।

jkष्ट्र में आज कई तरह की समस्याएं हैं जिनमें बेरोजगारी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या आदि। इनमें से हम एक विषय पर चर्चा करेंगे जो भ्रष्टाचार की समस्या है।

'आचारः परमोधर्मः' भारतीय संस्कृति का सर्वमान्य संदेश रहा है। सदाचरण को व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का आधार मानने के कारण ही भारतभूमि ने विश्व में प्रतिष्ठा पाई थी। आज देश के सामने उपस्थित समस्याएं और संकट भ्रष्ट आचरण के ही परिणाम हैं।

Ò"Vkpkj D;k g\ सत्य, प्रेम, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, अक्रोध, विनय, दया, अस्तेय (चोरी न करना) शूरता आदि ऐसे गुण हैं जो प्रत्येक समाज में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। इन गुणों की उपेक्षा करना या इसके विरोधी दुर्गुणों को अपनाना ही आचरण से भ्रष्ट होना या भ्रष्टाचार है। किंतु आज भ्रष्टाचार से हमारा तात्पर्य अनैतिक आचरण द्वारा जनता के धन की लूट से है।

Ò"Vkpkj dk fofo/k : i : आज भ्रष्टाचार देश के हर वर्ग और क्षेत्र में छाया हुआ है। चाहे शिक्षा हो, चाहे धर्म, चाहे व्यवसाय हो, चाहे राजनीति, यहां तक कला और विज्ञान भी इस घृणित व्याधि से मुक्त नहीं है। सरकारी कार्यालयों में जाइए तो बिना 'सुविधा शुल्क' के आपका काम नहीं होगा

Ò"Vkpkj dh 0;kidrk : भारत में भ्रष्टाचार का कारण वह औपनिवेशिक जनविरोधी केन्द्रीयकृत प्रशासनिक ढांचा है जो देश को अंग्रेजों के साम्राज्य से विरासत में मिला है। नेतृत्व की कमजोरी के कारण इसको जनोपयोगी बनाने का प्रयास ही नहीं हो सकता है। भ्रष्टाचार निरंतर फैलता गया है। जब से भारत में वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण की नीतियां बनी हैं, तब से घोटालों की बाढ़ आई है। कुछ समय पूर्व ही राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, आदर्श हाउसिंग सोसाइटी घोटाला, अवैध खनन घोटाला, आईपीएल घोटाला, नोट के बदले वोट घोटाला आदि सामने आ चुके हैं।

तमिलनाडु में सत्ता पर कब्जा बनाये रखने के लिए प्रत्येक परिवार को रंगीन टेलीविजन सेट बांटे गये। चुनाव आयोग के आदेश पर वाहनों की तलाशी लेने के क्रम में कई करोड़ रुपये अब तक पकड़े जा चुके हैं। आयोग को हाईकोर्ट की शरण लेनी पड़ी है क्योंकि यह अवैध धन पुलिस वाहनों में भरकर ले जाया जाता है। एक बस पकड़ी गई जिसमें करोड़ों रुपये मिले। इस धन का उपयोग वहां के वोटरों को भ्रष्ट करने के लिए किया जाता था।

Ò"V jktuhfrK % 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत के अनुसार भ्रष्टाचार शासकों से जनता की ओर फैल रहा है। अकेले टू जी घोटाले में सरकारी धन की जो लूट हुई है, उससे सभी भारतीय परिवारों को भोजन दिया जा सकता है। शिक्षा के कानूनी अधिकार को हकीकत में बदला जा सकता है।

ljdkjh tufojks/kh uhfr;k % सरकार की आर्थिक नीतियां, जिनको उदारवाद या आर्थिक सुधार का 'शुगर कोटेड' नाम देकर पेश किया

गया है, जन विरोधी है। इसके द्वारा जनता के धन को कानूनी वैध रूप देकर लूटा जा रहा है। अमेरिका में नौकरी पैदा करने के लिए हम अपने कृषि तथा रिटेल व्यापार क्षेत्र को उनके लिए खोल रहे हैं। सरकार ने कानूनों में परिवर्तन करके भ्रष्टाचार को कानूनी रूप दे दिया है। अब उसको भ्रष्टाचार कह ही नहीं सकते। जैसे सट्टा गैर कानूनी है पर शेयर बाजार तथा वायदा बाजार का सट्टा पूरी तरह कानूनी है।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजीकरण भी भ्रष्ट मुनाफाखोरी के लिए किया गया है। मंदी से राहत देने के नाम पर सरकार ने प्राइवेट कंपनियों तथा उद्योगपतियों को करोड़ों रुपयों की शुल्क तथा टैक्स की छूट प्रदान की है। वैसे जनता को पेट्रोल, रसोई गैस, खाद आदि पर सब्सिडी के लिए सरकार के पास धन नहीं है। भारत सरकार को अमेरिका में नौकरियां पैदा करने की चिंता ज्यादा है।

जल, जंगल, जमीन, खनिज, प्राकृतिक संसाधन आदि को कानून बदलकर कंपनियों तथा पूंजीपतियों को लुटाया जा रहा है। किसानों, मजदूरों, गरीबों, आदिवासियों का शोषण हो रहा है। इसी का दुष्परिणाम नक्सलवाद के रूप में सामने आ रहा है। देश की सभी पार्टियों के नेता तथा बड़े अधिकारी इन नीतियों के समर्थक हैं।

fuokj.k d mik; % भ्रष्टाचार की इस बाढ़ से जनजीवन की रक्षा केवल चारित्रिक दृढ़ता ही कर सकती है। समाज और देश के व्यापक हित में जब व्यक्ति अपने नैतिक उत्तरदायित्व का अनुभव करे और उसका पालन करे तभी भ्रष्टाचार का विनाश हो सकता है। भ्रष्टाचार का अंत करने के लिए वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था को बदलना भी जरूरी है। इसके लिए आई.ए.एस. अधिकारियों को प्राप्त शक्तियों में कमी करना आवश्यक है। निर्वाचित जन प्रतिनिधियों की योग्यता, आयु तथा कर्त्तव्यपरायणता तय होनी चाहिए।

अयोग्य जन प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार जनता को होना चाहिए। चुनाव में खड़े होने वाले व्यक्ति की सम्पत्ति तथा आचरण की

जांच होनी चाहिए। राजनीति में अपराधियों का प्रवेश रुकना चाहिए। पूंजीवादी आर्थिक नीति को, जो विदेशी पूंजी पर आधारित है, बदलकर जनवादी स्वदेशी अर्थनीति को अपनाया जाना चाहिए। प्रशासन में शुचिता और पारदर्शिता होनी चाहिए।

अतः भारत में भ्रष्टाचार की दशा अत्यंत भयावह है। बड़े–बड़े पूंजीपति, राजनेता तथा प्रसाशनिक अधिकारियों का गठजोड़ इसके लिए जिम्मेदार है। इससे मुक्ति के लिए निरंतर सजग रहकर प्रयास करना जरूरी है। सौभाग्य से समाजसेवी अन्ना हजारे तथा योगगुरु स्वामी रामदेव ने जो मुहिम शुरू की है, वह भ्रष्टाचार के अंत का आधार बन सकती है। जनता को सजग–सतर्क रहकर उनका समर्थन और सहयोग करना चाहिए। ◈

प्रदूषण मानव जाति के लिए जहर

◈ vuU;k सातवीं
आदर्श पब्लिक स्कूल
एफ ब्लॉक, बालीनगर, दिल्ली

वातारण में रसायन तथा अन्य सूक्ष्म कणों के मिश्रण को वायु प्रदूषण कहते हैं। सामान्य वायु प्रदूषण कार्बन मोनोआक्साईड, सल्फर डाईआक्साईड, क्लोरोफलोरो कार्बन और उद्योग और मोटर से निकलने वाले नाइट्रोजन आक्साईड जैसे प्रदूषकों से होता है। धुआंसा वायु प्रदूषण का परिणाम है। धूल और मिट्टी के सूक्ष्म कण सांस के साथ फेफड़ों में पहुंचकर कई बीमारियां पैदा कर सकते हैं।

iर्यावरण में दूषक पदार्थों के प्रवेश के कारण प्राकृतिक संतुलन में पैदा होने वाले दोष को प्रदूषण कहते हैं। प्रदूषण पर्यावरण और जीव–जंतुओं को नुकसान पहुंचाता है। प्रदूषण का अर्थ है हवा, पानी, मिट्टी आदि अवांछित द्रव्यों से दूषित होना जिसका सजीवों पर प्रत्यक्ष रूप से विपरीत प्रभाव पड़ता है।

यह सर्वप्रथम 1980 के वर्ष में नोट किया गया कि ओजोन स्तर का विघटन संपूर्ण पृथ्वी के चारों ओर हो रहा है। दक्षिण ध्रुव विस्तारों में ओजोन स्तर का विघटन 40–50 प्रतिशत हुआ है। इस विशाल घटना को ओजोन छिद्र (आजोन होल) कहते हैं। मानव आवास वाले विस्तारों में भी ओजोन छिद्रों को फैलाने की संभावना हो सकती है परंतु यह इस बात पर आधार रखता है कि गैसों की जलवायुकीय परिस्थिति वातावरण में तैरती अशुद्धियों के अस्तित्व पर है।

पृथ्वी का वातावरण स्तरीय है। पृथ्वी के नजदीक लगभग 50 किमी ऊँचाई पर स्ट्रेटोस्फीयर है जिसमें ओजोन स्तर होता है। यह स्तर

सूर्य प्रकाश को पार बैंगनी (CUV) किरणों को शोषित कर उसे पृथ्वी तक पहुंचने से रोकता है। आज ओजोन स्तर का तेजी से विघटन हो रहा है। वातावरण में स्थित क्लोरोफलोरोकार्बन (CCFC) गैस के कारण ओजोन स्तर का विघटन हो रहा है। प्रदूषण के कुछ मुख्य प्रकार निम्नवत हैं–

ok;| çn"k.k % वातावरण में रसायन तथा अन्य सूक्ष्म कणों के मिश्रण को वायु प्रदूषण कहते हैं। सामान्य वायु प्रदूषण कार्बन मोनोआक्साईड, सल्फर डाईआक्साईड, क्लोरोफलोरो कार्बन और उद्योग और मोटर से निकलने वाले नाइट्रोजन आक्साईड जैसे प्रदूषकों से होता है। धुआंसा वायु प्रदूषण का परिणाम है। धूल और मिट्टी के सूक्ष्म कण सांस के साथ फेफड़ों में पहुंचकर कई बीमारियां पैदा कर सकते हैं।

ty çn"k.k % जल में अनुपचारित घरेलू सीवेज के निकलने और क्लोरीन जैसे रासायनिक प्रदूषकों के मिलने से जल प्रदूषण फैलता है। जल प्रदूषण पौधों और पानी में रहने वाले जीवों के लिए हानिकारक होता है।

Òfe çn"k.k % ठोस कचरे के फैलने और रासायनिक पदार्थों के रिसाव के कारण भूमि में प्रदूषण फैलता है।

çdk'k çn"k.k % यह अत्याधिक कृत्रिम प्रकाश के कारण होता है।

/ofu çn"k.k % अत्याधिक शोर, जिससे हमारी दिनचर्या बाधित हो और सुनने में अप्रिय लगे, ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।

jfM;ks/keh çn"k.k % परमाणु ऊर्जा उत्पादन और परमाणु हथियारों के अनुसंधान, निर्माण और तैनाती के दौरान उत्पन्न होता है।

ok;| çn"k.k % अर्थात् हवा में ऐसे अवांछित गैसों, धूल के कणों आदि की उपस्थिति, जो लोगों तथा प्रकृति दोनों के लिए खतरे के कारण बन जाए, दूसरे शब्दों में कहें तो प्रदूषण अर्थात् दूषित होना या गंदा होना। वायु का अवांछित रूप से गंदा होना अर्थात् वायु प्रदूषण है।

ok;| çn"k.k d| lekU; dkj.k

- वाहनों से निकलने वाला धुआं।
- औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला धुआं तथा रसायन।
- आणविक संयंत्रों से निकलने वाली गैसें तथा धूल–कण।
- जंगलों में पेड़–पौधों के जलने से, कोयले के जलने से तथा धूल–कण तेल शोधन कारखानों आदि से निकलने वाला धुआं।

ok;| çn"k.k dk çÒko % वायु प्रदूषण हमारे ऊपर अनेक प्रभाव डालता है। उनमें में कुछ हवा में अवांछित गैसों की उपस्थिति से मनुष्य, पशुओं तथा पक्षियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे दमा, सर्दी, खांसी, अंधापन, श्रवण शक्ति का कमजोर होना, त्वचा रोग जैसी बीमारियां पैदा होती हैं।

लंबे समय के बाद इससे जनिक विकृतियां उत्पन्न हो जाती हैं और अपनी चरम सीमा पर यह घातक हो सकती है।

वायु प्रदूषण में सर्दियों में कोहरा छाया रहता है जिसके कारण धुएं तथा मिट्टी के कणों का कोहरे में मिलना होना है। इससे प्राकृतिक दृश्यता में कमी आती है तथा आंखों में जलन होती है और सांस लेने में कठिनाई होती है।

ty çn"k.k % जल प्रदूषण का अर्थ है पानी में अवांछित तथा घातक तत्वों की उपस्थिति से पानी का दूषित हो जाना जिससे की वह पीने योग्य नहीं होता।

- मानव मल का नहरों आदि में विसर्जन।
- सफाई तथा सीवर का उचित प्रबंध न होना।
- विभिन्न औद्योगिक इकाइयों द्वारा अपना कचरा तथा गंदा नदियों–नहरों में विसर्जन करना।

- कृषि कार्यों में उपयोग होने वाले जहरीले रसायनों तथा खादों का पानी में घुलना।
- नदियों में कूड़े–कचरे, मानव शवों और पारंपरिक प्रथाओं का पालन करते हुए उपयोग में आने वाले प्रत्येक घरेलू सामग्री का जल स्त्रोत में विसर्जन।

अतः कहा जा सकता है कि प्रदूषण की समस्या से यदि समय रहते नहीं निबटा गया तो यह मानव जाति के लिए जहर का कार्य करेगा, जिसकी जिम्मेदारी हम सब को होगी। ◈

भाषा की समस्या से हो जाते हैं झगड़े

◈ yf{kr k आठवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
हुडा सैक्टर–14, भिवानी, हरियाणा

भाषा लोक व्यवहार का सशक्त साधन है। भावों को प्रकट करने, विचार को बोधगम्य बनाने तथा जगत व्यवहार को चलाने का विश्वव्यापी माध्यम है। एक-दूसरे को भली-भांति जानने-पहचानने और समझने की कुंजी है। इसी के बल तथा आश्रय से मनुष्य इधर प्राणियों से भिन्न और पृथक होकर अपने आप को सभ्य एवं सांस्कृतिक कहलाने का दम भरता है।

Vाजादी के बाद से ही देश का बंटवारा होने के कारण हमारे राष्ट्र को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। हिंदू और मुसलमानों के बीच मारकाट होने पर जन और धन दोनों को ही हानि पहुंची। राष्ट्रीय समस्याएं तभी से मुंहबाये खड़ी हैं। कोई भी राष्ट्र तभी प्रगति कर सकता है जब उस देश में एकता होगी।

Ò"Vkpkj % भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है– 'बिगड़ा हुआ आचरण'। भारत में भ्रष्टाचार चर्चा–आन्दोलनों का प्रमुख विषय रहा है। आजादी के एक दशक बाद से ही भारत भ्रष्टाचार की दलदल में धंसा नजर आने लगा था और उस समय संसद में इस बात पर बहस भी होती थी। 21 दिसंबर, 1963 को भारत में भ्रष्टाचार के खात्मे पर संसद में हुई बहस में डॉ. राममनोहर लोहिया ने जो भाषण दिया था वह आज भी प्रासंगिक है।

आज देश में लोग रिश्वत देते व लेते हैं। यह एक अपराध है। देश को यह समझना चाहिए कि हर काम सिर्फ रिश्वत देकर ही सफल

नहीं होता, मेहनत व सच्चाई के बल पर भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

हमारे देश को पूरी तरह भ्रष्टाचार ने दबोच रखा है। व्यक्तिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि हम यह समझें कि भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का उत्तरदायित्व अब हम पर ही है। तब निःसंदेह हम भविष्य में भ्रष्टाचार को हटाकर इस देश की नई कल्पना कर सकते हैं। भ्रष्टाचार के पूर्णतया उन्मूलन से पूर्व हमें इस पर विचार करना होगा कि वे क्या कारण हैं जिसके फलस्वरूप समाज में धनाड्य एवं सुशिक्षित उच्च पदासीन व्यक्ति अधिक संख्या में भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

आज हमारे देश को चाहिए की वह इस भ्रष्टाचार से मुक्त हो सके। आज देश के सभी लोगों को जागरूक होना ही पड़ेगा। हम अगर कहीं पर भी कुछ गलत होता देखते हैं तो फौरन जाकर पुलिस को सूचना देते हैं। परंतु कई लोग उस गलत कार्य में उनका साथ देते हैं। यह एक अपराध है। अगर राष्ट्र की प्रगति करनी है तो भ्रष्टाचार पर नकेल डालनी ही होगी।

cjkstxkjh % बेरोजगारी का अर्थ है कि 'रोजगार हाथ में न होना'। इसका अर्थ यह भी है कि लोगों को उनकी अपनी चाहत तथा योग्यता के अनुसार कार्य उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। भारत की जनसंख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है परंतु यहां पर्याप्त कार्यों की कमी है। शहरों में हजारों युवक–युवतियों नौकरी की तलाश में पूरे–पूरे दिन भटकते रहते हैं परंतु उन्हें कोई नौकरी प्राप्त नहीं होती। भारतीय रोजगार कार्यालय में करोड़ों शिक्षित युवकों के नाम दर्ज हैं।

बेरोजगारी का एक मुख्य कारण जाति के अनुसार नौकरी मिलना है। कई लोग जो नीची जाति के होते हैं उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती है यह जुर्म है।

cjkstxkjh dk lek/kku % हमारी शिक्षा प्रणाली भी बेरोजगारी को बढ़ावा दे रही है। यदि बचपन से ही बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा दी जाए तो बेरोजगारी धीरे–धीरे लुप्त हो जाएगी। कहा जाता है कि

बीमारी का इलाज उसके कारणों में ही होता है, उसी प्रकार हर समस्या का समाधान उसी के अंतर्गत होता है।

Òk"kk;h leL;k % भाषा लोक व्यवहार का सशक्त साधन है। भावों को प्रकट करने, विचार को बोधगम्य बनाने तथा जगत व्यवहार को चलाने का विश्वव्यापी माध्यम है। एक–दूसरे को भली–भांति जानने–पहचानने और समझने की कुंजी है। इसी के बल तथा आश्रय से मनुष्य इधर प्राणियों से भिन्न और पृथक होकर अपने आप को सभ्य एवं सांस्कृतिक कहलाने का दम भरता है।

इन जैसी बातों तथा विशेषताओं के रहते भी अभी तक ऐसी कोई विश्वव्यापी भाषा नहीं बन पाई है। भाषा भेद किसी न किसी रूप और मात्रा में हर किसी में और सब समय रहता है। मध्यकाल में क्षेत्रीय बोलियां अपने विकास–पथ तथा उन्नति–मार्ग पर भी बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ती और अग्रसर होती जा रही थी। हर 10 से 20 किलोमीटर बाद भाषाओं में परिवर्तन आता ही रहता है। भारत में भाषायी समस्या एक बड़े स्तर पर है। भाषायी समस्या धर्म व जातियों में लड़ाई का कारण बन जाती है। इसका असर छोटे–छोटे बच्चों पर पड़ता है। कई लोग अपनी भाषा को लेकर अकड़ में रहते हैं।

Òk"kk;h leL;k dk lek/kku % आज हमारा देश एक नाजुक दौर से गुजर रहा है। इसका कारण है भाषायी समस्या। यह हमारे लिए एक खुली चुनौती बन गई है। इसके लिए पर्याप्त सजगता, सतर्कता तथा सक्रियता की अपेक्षा है। हमारी एक भूल हमें रसातल में पहुंचा सकती है। भाषा वही जीवित रहती है जो जनता द्वारा प्रयुक्त की जाती है। वह न तो महापुरुषों द्वारा गढ़ी–मढ़ी जाती है, न किसी कोश द्वारा सिखाई जाती है।

भाषायी समस्या को जड़ से उखाड़ने के लिए बस एक चीज़ की जरूरत है और वह है सबकी भाषा को एक बनाना। इसकी वजह से न तो धर्मों और जातियों में लड़ाई होगी और न ही बच्चों पर बुरा असर पड़ने का खतरा।

हम सबको अच्छी भाषा में बात करनी चाहिए फिर चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का हो। आप सब ने वो कहावत सुनी ही होगी 'कर भला, हो भला'। अगर आप दूसरों से अच्छी भाषा में बात करेंगे तो वह भी आपसे अच्छे से बात करेगा। हम सबको अपनी भाषा सुधारने की भी कोशिश जरूर करनी चाहिए। क्या पता इस प्रयास से इस देश से यह समस्या ही दूर हो जाए। ◈

समस्याओं का निदान सिर्फ कानून से नहीं

◈ **vf0d x|rk** आठवीं
रेनबो इंग्लिश सी. सैकेंडरी स्कूल
सी–3, जनकपुरी, दिल्ली

मद्यपान एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो समाज के साधनों को कुंठित कर देती है, इससे गरीब अधिक गरीब होता जाता है और धनी और अधिक धनवान। कुछ देर की उत्तेजना के लिए व्यक्ति शराब पीता है किंतु मद्यपान समाज के नैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट करने में मुख्य भूमिका निभाता है।

çत्येक समाज अपने सदस्यों की आकांक्षाओं और इच्छाओं की पूर्ति का साधन होता है। समाज–धर्म यही है कि उसका प्रत्येक सदस्य प्रसन्न हो और समाज के साधनों का उपयोग सभी व्यक्ति समान रूप से कर सकें। इसके लिए समाज कतिपय नियम व मान्यताएं निर्धारित करता है। किंतु समय के साथ–साथ जब सामाजिक मान्यताओं का ह्रास होने लगता है तो कुछ शक्तिशाली व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए समाज के साधनों और सुविधाओं का उपयोग करने लगते हैं। अधिकांश व्यक्ति साधनहीन हो जाते हैं तो समाज में अनेक बुराइयां प्रवेश कर लेती हैं, अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

हर समाज के अपने नियम होते हैं। जो व्यक्ति उनका पालन करता है वह अच्छा सामाजिक व्यक्ति समझा जाता है परन्तु कुछ व्यक्ति उनका उल्लंघन करते हैं, वे ही सामाजिक समस्याओं के जन्मदाता होते हैं। वस्तुतः हम कह सकते हैं कि मनुष्यों अथवा समूहों के व्यवहार से उत्पन्न दशाएं, जो बुनियादी सामाजिक मूल्यों के लिए चुनौती हैं

तथा जिस चुनौती के प्रति सचेत होकर समाज के बहुसंख्यक लोग अपेक्षित रचनात्मक कार्य करने की आवश्यकता का अनुभव करते हैं, सामाजिक समस्याएं कही जाएंगी।

परतंत्रता के कारण हमारे समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियों ने जन्म ले लिया। वही कुरीतियां आज हमारे सामने चुनौती बनकर खड़ी हैं, इसके साथ–साथ बदली हुई परिस्थितियों में नैतिक मूल्यों में भी बदलाव आया है। अतः नई आर्थिक–सांस्कृतिक और सामाजिक बुराइयां भी उत्पन्न हो गई हैं। इनमें मुख्य हैं– जातिगत भेदभाव, नारी–शोषण, दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, सामाजिक शोषण, बेकारी, जनसंख्या–वृद्धि, मद्यपान।

tkfrxr ÒnÒko % जातिगत भेदभाव यानी ऊंची जाति–नीची जाति। इस भेदभाव से मानवता का दृष्टिकोण धूमिल होता है, अनेक प्रतिभा–संपन्न युवक अपनी प्रगति से वंचित रह जाते हैं। वास्तव में समाज के किसी भी युवक का विकास समाज या राष्ट्र का विकास है, अतः पूरा राष्ट्र उस प्रगति से वंचित हो जाता है।

ukjh&'kk"k.k % कभी हमारे देश में नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त थे किंतु आज पुरुष उसे सेविका से अधिक नहीं समझता और उस पर अनेक प्रकार के अत्याचार करता है। जिस नारी को त्याग और ममता की प्रतिमूर्ति समझा जाता रहा है, जो पुरुष की जन्मदात्री है, आज वह पुरुष द्वारा ही शोषण का शिकार हो रही है। यद्धपि संविधान में नारी को पुरुषों के समान ही अधिकार दिए गए हैं फिर भी वह उन अधिकारों से वंचित है और आज उसे पुरुष की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता है।

ngt &çFkk % दहेज की काली प्रथा ने तो नारी–समाज को पीड़ा दी है। हमारा सभ्य समाज उस दृष्टि से नारी–जाति से जंगलियों जैसा व्यवहार करता रहा है। कितनी ही युवतियां प्रतिदिन दहेज की बलिवेदी पर जलाई जा रही हैं, फिर भी हमारी आंखें बंद हैं और दहेज का यह दानव बुद्धि पर ताला डाले बैठा है। दहेज के इस अभिशाप के कारण

सुयोग्य और सुंदर कन्याओं को अयोग्य और असुंदर युवकों के साथ बांध दिया जाता है और वे निरीह जंतु की तरह उनका बोझ ढोती रहती हैं।

Ò"Vkpkj % समाज की आर्थिक समस्याओं में भ्रष्टाचार की समस्या सुरसा की तरह मुंह खोले खड़ी है और समाज का शक्तिशाली हनुमान उसके जबड़ों के बीच में फंसा हुआ है। सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत लिए कोई काम नहीं होता, यद्यपि 'रिश्वत लेना और देना' कानूनी अपराध है किंतु आज यह हक के रूप में चल रही है। अपना काम कराने के लिए आप रिश्वत देने को विवश हैं, इस रिश्वत के कारण भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है।

cdkjh % हमारे देश में शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार की बेकारी है। जब व्यक्ति समर्थ और इच्छा होते हुए भी रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता है तो अपना पेट भरने के लिए वह दूसरे रास्ते अपनाता है। वस्तुतः बेकारी की समस्या समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है और सबसे बड़ी समस्या भी।

vu'kklughurk % जब छात्र को यह पता हो कि उसका भविष्य अंधकारमय है, उसे खाली और बेकार बैठकर अपना जीवन नष्ट करना है तो वह विद्यालयों में अनुशासनहीनता की स्थितियां पैदा करता है, इसी प्रकार जब पढ़ा–लिखा युवक नौकरी की खोज में मारा–मारा फिरता है और नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता तो वह सड़कों पर आवारागर्दी करता है। इस अनुशासनहीनता से समाज के नियम भंग होते हैं, परिणामतः सामाजिक समस्याएं बढ़ती ही चली जाती हैं।

tula[;k&of) % जनसंख्या–वृद्धि हमारे समाज की ऐसी समस्या है जिसका निदान हमारे ही हाथ में है किंतु अज्ञानवश हम इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। वस्तुतः समाज की सभी समस्याओं का मूल कारण जनसंख्या में अनपेक्षित वृद्धि है। सरकार विविध प्रकार के प्रयासों से इस समस्या को रोकने का प्रयास कर रही है परंतु सामाजिक–चेतना के अभाव में इस समस्या से छुटकारा पाना असंभव है।

e|iku % मद्यपान एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो समाज के साधनों को कुंठित कर देती है। इससे गरीब अधिक गरीब होता जाता है और धनी और अधिक धनवान। कुछ देर की उत्तेजना के लिए व्यक्ति शराब पीता है किंतु मद्यपान समाज के नैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट करने में मुख्य भूमिका निभाता है।

lkekftd 'kks"k.k % सामाजिक शोषण हमारे समाज की प्रमुख बुराई है। हमारे संविधान ने शोषण–मुक्त समाज की कल्पना की है जिससे हर व्यक्ति को समान सुविधाएं मिलेंगी, किंतु स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हम समाज से आर्थिक शोषण समाप्त नहीं कर पाए हैं, अपितु शोषण की यह खाई और भी गहरी होती जा रही है।

यदि हम अपने समाज और राष्ट्र का कल्याण चाहते हैं, यदि हम भारत के प्रबुद्ध सदस्य हैं, यदि हम देश के अच्छे नागरिक हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम समाज से इन बुराइयों को दूर करें। समाज की समस्याओं का निदान केवल कानून बनाकर नहीं हो सकता, केवल शक्ति और हथियारों के बल पर नहीं हो सकता, इसके लिए आवश्यक है कि समाज में मानसिकता को बदला जाए। जब समाज का हर सदस्य इन बुराइयों को दूर करने के लिए कृतसंकल्प और कटिबद्ध हो जाएगा, तभी इनका निदान खोजा जा सकता है, अन्यथा ये बुराइयां घुन की तरह समाज के शरीर को चाट जाएंगी और समाज का यह ढांचा चरमरा कर गिर पड़ेगा। ◈

न्याय व्यवस्था में भी भ्रष्टाचार

◈ uhye ckjk ग्यारहवीं
गुरुकुल इण्टरनेशनल
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

भारत का संविधान पूरे विश्व का सबसे बड़ा संविधान माना जाता है। यहां प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षित रखने और उसे सम्मान दिलाने के लिए न्याय व्यवस्था बनाई गई है। परंतु न्याय को भी लोगों ने अब खरीदना शुरू कर दिया है। अमीर अपराधी दण्ड पाने से पहले ही पैसे के दम पर बच जाते हैं और गरीब को न्याय मिलने में महीनों का समय लग जाता है।

Òारत एक विकासशील देश होते हुए कई समस्याओं के कारण विकसित होने से चूक रहा है। आज हमारे देश के सामने जो समस्याएं फण फैलाए हुए हैं, वे हैं भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, बढ़ती जनसंख्या आदि। सभी लोग इनके दुष्प्रभाव जानने के बावजूद इन्हें कम करने की बजाय बढ़ावा दे रहे हैं। वे राष्ट्र के बारे में कुछ अच्छा तो नहीं सोच सकते क्योंकि उनका ध्यान केवल अपने फायदों की ओर है।

दिन पर दिन बढ़ती जा रही समस्याओं के कारण निर्दोष लोगों को ही इनका भुगतान करना पड़ रहा है। निरंतर बढ़ती जा रही जनसंख्या भी भारत के लिए समस्याएं पैदा कर रही है; जरूरतें बढ़ रही हैं परंतु जरूरतों को पूरा करने वाल कम हो रहे हैं। परेशानियां बढ़ती जा रही हैं और समाधान नहीं मिल रहे हैं।

Ò"Vkpkj dk c<rk Lo:i % भारत में आज सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार का बोलबाला है, यहां का रिवाज ही रिश्वत देना और लेना हो गया है। स्वयं कानून के रक्षक ही सबसे बड़े भ्रष्टाचारी हैं। इसका

प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बहता है। जब प्रधानमंत्री स्वयं भ्रष्टाचार घोटाले में लिप्त हो तो उस देश का चपरासी तो भ्रष्ट होगा ही। यही स्थिति भारत की हो चुकी है।

सरकारी सर्वेक्षण बताते हैं कि योजना के लिए दिया गया 85 प्रतिशत पैसा तो अधिकारी ही खा जाते हैं। भारत भ्रष्टाचार का विशाल वट वृक्ष बन चुका है। बिना लाइसेंस का वाहन चालक कहता है 'तो फिर क्या हो गया?', नकल करने वाला छात्र कहता है– ''इसमें बुराई क्या है?'' मिलावट करने वाला कहता है, ''थोड़ी मिलावट तो सारे करते हैं'', इन सभी या औरों की बातों से कह सकते हैं कि भ्रष्टाचार भारतीयों के खून में समा चुका है केवल लालच के कारण।

***vijk/kh* jkturk %** भारतीय प्रशासन की लाचारी इससे साफ है कि आज तक किसी राजनेता, अपराधी राजनेता को सजा नहीं हो पाई है। गोखले जैसे लोग राजनीति के श्रृंगार थे। किंतु आज उनकी जगह घोटाले, रिश्वतखोर, खूंखार अपराधियों ने ले ली है। कई राज्यों में पुलिस सेना के होते हुए भी चुनावों में नामी–गिरामी लोगों के द्वारा गोलाबारी के दम पर चुनाव जीत जाते हैं। आश्चर्य की बात यह कि पहले अपराधी सरकार से डरते थे, वे अब स्वयं संसद भवन में पहुंच गए हैं।

cjkstxkjh dh leL;k % राष्ट्रीय समस्याओं में से एक महत्वपूर्ण समस्या है बेकारी। लोगों के पास हाथ तो है पर काम नहीं, प्रशिक्षण है पर नौकरी नहीं, योजनाएं और उत्साह है पर अवसर नहीं। बेरोजगारी का अर्थ ही योग्यता के अनुसार अवसर न मिलना। पूरे देश में हर क्षण बेरोजगारों की फौज जमा होती है। सौ नौकरियों के लिए लाखों आवेदन पत्र जमा होते हैं।

बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण है बढ़ती जनसंख्या, और दूसरा कारण है भारत में विकास के साधनों का अभाव होना। शासन के पास यदि धन और योजनाएं हों तो सब हाथों को काम मिल सकता है परंतु दुर्भाग्य से न उचित साधन हैं, न ईमानदार नेता। सभी गरीबों के नाम

पर अपना पेट भरने में लगे हैं। देश के कर्णधारों की गलत योजनाएं भी बेरोजगारी को बढ़ा रही है।

dkykckt kjh&egxkÃ % बाजार में महंगाई तभी बढ़ती है जब मांग अधिक हो किंतु दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मांग तब बढ़ती है जब जनसंख्या में वृद्धि हो अर्थात् उपभोग करने वालों की संख्या बढ़ जाए।

महंगाई बढ़ने के कुछ बनावटी कारण भी होते हैं, जैसे–कालाबाजारी। बड़े–बड़े व्यापारी धन के बल पर आवश्यक वस्तुओं का भंडारण कर लेते हैं जिससे बाजार में वस्तुओं की कमी हो जाती है। वस्तुओं के देश में होने के बावजूद उनकी कमी के कारण कीमतें आसमान छूती हैं।

महंगाई बढ़ने का दुष्परिणाम गरीबों और निम्न मध्यवर्ग को होता है। इससे उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ता है और उन्हें अपना पेट मारना पड़ता है या बच्चों की पढ़ाई–लिखाई जैसी आवश्यक सुविधा छिन जाती है, परिणामस्वरूप देश का विकास मंद पड़ता है।

U;k; e nj % शासन और अनुशासन एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। पूरा देश चलाने के लिए अनुशासन और नियम व्यवस्था की जरूरत होती है। भारत का संविधान पूरे विश्व का सबसे बड़ा संविधान माना जाता है। यहां प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षित रखने और उसे सम्मान दिलाने के लिए न्याय व्यवस्था बनाई गई है। परंतु न्याय को भी लोगों ने अब खरीदना शुरू कर दिया है। अमीर अपराधी दण्ड पाने से पहले ही पैसे के दम पर बच जाते हैं और गरीब को न्याय मिलने में महीनों का समय लग जाता है। आज भरे बाजार में मारकर भागना बाएं हाथ का खेल होता है। ये सब घटनाएं प्रशासन के भ्रष्ट होने और अनुशासनहीन होने का परिणाम है। कई बार न्याय में देरी होने के कारण इंसान सोचने लगता है उसे न्याय मिलना असंभव है।

Òh[k ekxu dh leL;k % भीख मांगना मानवता पर अभिशाप है। यह एक व्यवसाय के रूप में फल रही है। कोई मनुष्य शौक से भिखारी नहीं बनता, किसी की विवशता उसे भिखारी बनाती है तो कोई जन्मजात होता है। लेकिन जैसा कि यह व्यापार बन चुका है,

कुछ लोगों को जबरन भीख मांगने पर मजबूर किया जाता है। कई बार जो गैंग भीख व्यवसाय चलाते हैं, अपहरण किए हुए लोगों के हाथ या पांव काट देते हैं।

leL;kvk dk lek/kku

प्रत्येक समस्या का समाधान उसके कारणों में छिपा रहता है। अतः राष्ट्र की इन समस्याओं का काफी सीमा तक समाधान हो सकता है। नियमों का कठोरता से पालन कराना चाहिए। हर भ्रष्टाचारी को उचित दण्ड दिया जाना चाहिए ताकि शेष सबको भ्रष्टाचार करने का परिणाम पता चले।

बेरोजगारी को कम करने के लिए आधुनिक यंत्रों की बजाय पैतृक उद्योगों–व्यवसायों को बढ़ावा दिया जाए, रोजगार की पूर्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, मशीनीकरण पर नियंत्रण, कंप्यूटरीकरण पर नियंत्रण, रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि समाधानों को शीघ्रता से लागू किया जाना चाहिए।

जनसंख्या रोकना सबसे आवश्यक कदम है। इसके लिए हर नागरिक अपना परिवार सीमित करे। लड़के–लड़की को एक समान मानने से भी जनसंख्या नियंत्रण हो सकता है। जिस प्रकार महंगाई बढ़ती जा रही है वस्तुओं की बढ़ती कीमतों में वृद्धि रोकने के ठोस उपाय किए जाने चाहिए।

इन सभी के अलावा विकराल रूप लिए हुए प्रदूषण को रोकना अत्यंत आवश्यक है। इसका सर्वोत्तम उपाय है जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाना चाहिए ताकि लोग गांव छोड़कर नगरों की ओर न दौड़ें। सरकार को चाहिए कि नगरों की सुविधाएं गांवों तक पहुंचाई जाए। ◈

जागरूक बनें, अपना कर्तव्य समझें

◈ çfrÒk cn आठवीं
हीरालाल सोभागमल रामपुरिया
उच्च माध्य. विद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

कुछ वर्ष पहले पुरुषों के मुकाबले में महिलाओं की संख्या में भारी गिरावट थी। यह महिलाओं के खिलाफ अपराधों के बढ़ने के कारण था, जैसे कन्या भ्रूणहत्या, दहेज के लिये हत्या, बलात्कार, गरीबी, अशिक्षा, लिंग भेदभाव आदि। समाज में महिलाओं की संख्या को बराबर करने के लिए लोगों को बड़े स्तर पर कन्या बचाने के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है।

Òारत एक विशाल देश है जहां विभिन्न धर्मों, जातियों व वेश–भूषा धारण करने वाले लोग निवास करते हैं। दूसरे शब्दों में अनेकता में एकता हमारी पहचान और हमारा गौरव है। परंतु अनेकता अनेक समस्याओं की जननी भी है। देश में व्याप्त प्रांतीयता, भाषावाद, संप्रदायवाद या जातिवाद इन्हीं विभिन्नताओं का दुष्परिणाम है। इसके चलते आज देश में लगभग सभी राज्यों से दंगे फसाद, मारकाट, लूट–खसोट आदि के समाचार प्रायः सुनने व पढ़ने को मिलते हैं।

भ्रष्टाचार एक जहर है जो देश, संप्रदाय व समाज के गलत लोगों के दिमाग में फैला होता है। इसमें केवल छोटी–सी इच्छा और अनुचित लाभ के लिये सामान्य जन के संसाधनों की बरबादी की जाती है। इसका प्रभाव व्यक्ति के विकास के साथ ही राष्ट्र पर भी पड़ता है और यही समाज और समुदायों के बीच असमानता का बड़ा कारण है। साथ ही यह राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से राष्ट्रीय प्रगति और विकास में बाधा भी है।

किसी भी क्षेत्र में बच्चों द्वारा अपने बचपन में दी गई सेवा को बाल मजदूरी कहते हैं। इसे गैर–जिम्मेदार माता–पिता की वजह से या कम लागत में निवेश पर अपने फायदे को बढ़ाने के लिए मालिकों द्वारा जबरदस्ती बनाए गए दबाव की वजह से जीवन जीने के लिए जरूरी संसाधनों की कमी के चलते बच्चों द्वारा स्वतः किया जाता है। सामाजिक, बौद्धिक, शारीरिक और मानसिक सभी दृष्टिकोण से बाल मजदूरी बच्चों की वृद्धि और विकास में अवरोध का काम करती है।

आतंकवादी हिंसा एक गैर कानूनी तरीका है जो लोगों को डराने के लिए आंतकवादियों द्वारा प्रयोग किया जाता है। आज आतंकवाद एक सामाजिक मुद्दा बन चुका है। इसका इस्तेमाल आम लोगों और सरकार को डराने–धमकाने के लिए हो रहा है। बहुत आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न सामाजिक संगठन, राजनीतिज्ञ और व्यापारिक उद्योगों द्वारा आतंकवाद का इस्तेमाल किया जा रहा है। लोगों का समूह जो आतंकवाद का समर्थन करते हैं, उन्हें आतंकवादी कहते हैं।

कुछ वर्ष पहले, पुरुषों के मुकाबले में महिलाओं की संख्या में भारी गिरावट थी। यह महिलाओं के खिलाफ अपराधों के बढ़ने के कारण था जैसे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज के लिये हत्या, बलात्कार, गरीबी, अशिक्षा, लिंग भेदभाव आदि। समाज में महिलाओं की संख्या को बराबर करने के लिऐ लोगों को बड़े स्तर पर कन्या बचाने के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है।

किसी भी व्यक्ति या इंसान के लिये गरीबी अत्याधिक निर्धन होने की स्थिति है। यह एक पराकाष्ठा की स्थिति होती है जब छत, जरूरी भोजन, कपड़े, दवाइयों आदि जैसी जीवन को जारी रखने के लिये महत्वपूर्ण चीजों की कमी एक व्यक्ति को महसूस होती है। निर्धनता व्याप्त होने के सामान्य कारण हैं–अत्याधिक जनसंख्या, जानलेवा व संक्रामक बीमारियां, प्राकृतिक आपदा, कम कृषि पैदावार, बेरोजगारी, जातिवाद, अशिक्षा, लैंगिक असमानता, पर्यावरणीय समस्याएं।

देश में अर्थव्यवस्था की बदलती प्रवृत्ति, अस्पृश्यता, लोगों की अपने अधिकारों तक कम या सीमित पहुंच, राजनीतिक हिंसा, प्रायोजित अपराध, भ्रष्टाचार, प्रोत्साहन की कमी, अकर्मण्यता, प्राचीन सामाजिक मान्यताएं आदि भी निर्धनता के कारण हैं। भारत में निर्धनता को सरकारी समाधानों के द्वारा घटाया जा सकता है।

इन समस्याओं का समाधान ढूंढना केवल सरकार का ही दायित्व नहीं है अपितु यह पूरे समाज तथा समाज के सभी नागरिकों का उत्तरदायित्व है। इसके लिये जनजागृति आवश्यक है जिससे लोग जागरूक बनें व अपने कर्तव्यों को समझें। युवाओं व भावी पीढ़ी पर यह जिम्मेदारी और भी अधिक बनती है। आवश्यकता है कि देश के सभी युवा समाज में व्याप्त इन बुराइयों का स्वयं विरोध करें तथा इन्हें रोकने का हर संभव प्रयास करें। यदि यह प्रयास पूरे मन से होगा तो इन सामाजिक बुराइयों को अवश्य ही जड़ से उखाड़ फेंका जा सकता है। ◈

प्रतिभा पलायन को रोकना होगा

यदि हमारे देश में भी विदेशों की भांति नौकरियां तथा आकर्षक वेतन आदि उपलबध हों तो इस समस्या पर कुछ हद तक रोक लग सकती है। इसके लिए प्रशिक्षित तथा प्रतिभावान युवकों को अपने देश के प्रति प्रेम और निष्ठा उत्पन्न करनी होगी तथा अपने देश को सुदृढ़ बनाने के लिए देश की आर्थिक व्यवस्था को सुधारने हेतु अपना योगदान देना होगा।

◈ gjxu flg दसवीं
रिचमण्ड ग्लोबल स्कूल
पश्चिम विहार, दिल्ली

Òारत एक विशाल देश है। भौगोलिक दृष्टि से देखें तो हमारा देश अनेक क्षेत्रों में बंटा हुआ है। जितना बड़ा देश है, उसकी समस्याएं उससे भी कई गुना अधिक हैं। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी समस्याएं होती हैं, इसी प्रकार हमारा देश भारत भी अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा है। इस समय भारत ऐसी समस्याओं से जूझ रहा है कि यदि इनका समाधान शीघ्र ही न निकाला गया तो ये समस्याएं हमारे देश को खोखला कर देंगी। ये समस्याएं हैं भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, तस्करी, बढ़ती जनसंख्या, गरीबी, प्रदूषण, भिक्षावृत्ति, मध्यपान और प्रतिभा पलायन आदि।

Ò"Vkpkj dh leL;k % किसी भी देश या समाज की उन्नति का आधार–स्तंभ वहां के निवासियों की सच्चरित्रता, परिश्रमशीलता तथा उनके नैतिक मूल्य होते हैं। हमारे देश ने ही विश्व को मानवता, नैतिकता तथा सदाचार का पाठ पढ़ाया परंतु आज पूरे देश में चारों ओर स्वार्थ, लोभ और बेईमानी का बोलबाला है। इसी कारण आज

भ्रष्टाचार रूपी रोग सभी सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में एक असाध्य रोग की भांति अपनी जड़ें जमा चुका है।

मर्यादा से हटकर स्वार्थपूर्ण दूषित आचरण ही भ्रष्टाचार कहलाता है। कोई भी विभाग भ्रष्टाचार से आज अछूता नहीं है। भाई–भतीजावाद, मिलावट, अनुचित ढंग से मुनाफाखोरी, चोर–बाजारी, सरकारी साधनों का अनुचित प्रयोग भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण हैं। इसके कारण आज हमारे समाज का पतन हो रहा है और देश खोखला होता जा रहा है।

lek/kku % भ्रष्टाचार का निराकरण करना असंभव नहीं है। कठोर कानून नियंत्रण एवं आत्मानुशासन द्वारा इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। यदि सरकार जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, समान सुविधाएं जनता को उपलब्ध करवाए तो काफी हद तक भ्रष्टाचार दूर हो सकता है।

c<rh tula[;k dh leL;k % जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है। यदि जनगणना के आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो यह देखकर हमें हैरानी होती है कि पिछले दस वर्षों में हमारी जनसंख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही है। यदि इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि होती रही तो इसके बहुत भयंकर परिणाम होंगे। आज सरकार को बढ़ती जनसंख्या की वजह से भोजन, कपड़ा, आवास, शिक्षा एवं रोजगार के साधनों का प्रबंध करना मुश्किल होता जा रहा है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के कई कारण हैं–जैसे लड़कियों का अल्पायु में विवाह, गरीबी, अशिक्षा, अज्ञान, भाग्यवादी होना, पुत्र की चाह होना तथा मुत्युदर में कमी होना है।

lek/kku % जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाना अत्यंत आवश्यक है। हमें शिक्षा के प्रचार तथा प्रचार के अलावा जनसंख्या माध्यमों से छोटे परिवार के लाभों से परिचित करवाना होगा। परिवार नियोजन के कार्यक्रमों का प्रसार करना होगा। नसबंदी एवं गर्भनिरोधक उपायों के बारे में लोगों को जागरूक करना होगा।

vkradokn dh leL;k % आतंकवाद एक ऐसी कुत्सित प्रवृत्ति है जिससे कुछ लोग अपनी अमानवीय इच्छाओं की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह कर, उन्हें मासूम व निर्दोष लोगों का रक्त बहाने को विवश कर देते हैं। इसके कारण हजारों परिवार अपने घर–द्वार त्यागने को विवश हो गए हैं। कितनी स्त्रियां, विधवाएं एवं अरबों की धन–सम्पत्ति राख हो चुकी है। आए दिन आतंकवादियों की गतिविधियों ने सरकार का अमन–चैन नष्ट कर दिया है। आज कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन रक्तपात, आगजनी, तोड़फोड़ या रेलगाड़ी एवं बस के यात्रियों को गोलियों से भून देने के समाचार न मिलते हों।

lek/kku % आतंकवाद किसी समस्या या प्रश्न का हल नहीं है। बातचीत एवं राजनैतिक, आर्थिक कदम उठाकर इस समस्या का समाधान संभव है। प्यार, शांति एवं विश्वास के पथ को अपनाकर जो व्यक्ति गुमराह हो गए हैं, उन्हें वापस मानवता की राह पर लाया जा सकता है। अतः इस समस्या का समाधान शांतिपूर्ण उपायों द्वारा संभव है।

egaxkbZ dh leL;k % रोटी, कपड़ा और मकान मानव की मूलभूत आवश्यकताएं हैं। ये बिना धन के पूर्ण नहीं हो सकतीं। इनकी पूर्ति हो जाने के बाद ही मनुष्य भौतिक सुख की कोई वस्तु खरीद सकता है। परंतु आज जिस गति से महंगाई बढ़ती चली जा रही है उससे मूलभूत आवश्यकताएं ही पूरी नहीं हो पा रही हैं। कीमतों का बढ़ना ही महंगाई है। आज भारत की अनेक समस्याओं में से महंगाई भी विकट समस्या बन चुकी है। महंगाई अनेक कारणों से बढ़ती है, जैसे भ्रष्टाचार, जनसंख्या में वृद्धि होना, व्यापारी वर्ग द्वारा मुनाफाखोरी एवं जमाखोरी करने की प्रवृत्ति आदि।

lek/kku % इस कमरतोड़ महंगाई को रोकने के लिए हमें भ्रष्टाचार, प्रशासनिक व्यय में कमी, कालाबाजारी और मुनाफाखोरी जैसे तत्वों को रोकना होगा। जहां तक हो सके कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए। कीमतें सरकार द्वारा निश्चित की जाएं और पूरे देश में एक वितरण प्रणाली हो। हमें जनसंख्या पर भी रोक लगानी होगी। हमें समय रहते ही उचित कदम उठाने होंगे इसी में हमारे राष्ट्र का कल्याण है।

fÒ{kkofÙk dh leL;k % भारत में यह समस्या अत्यंत गंभीर है। बस स्टेंडों, रेलवे स्टेशनों, चौराहों तथा अन्य अनेक स्थानों पर भिक्षावृत्ति करते लोगों को देखा जा सकता है। इस समस्या का जन्म अत्याधिक निर्धन, जनसंख्या की अधिकता तथा शारीरिक विकलांगता आदि के कारण होता है। भिक्षुकों में अधिकांश शारीरिक रूप से विकलांग होते हैं जिन्हें पेट भरने के लिए विवशता में भीख मांगनी पड़ती है।

lek/kku % यद्यपि सरकार ने भिक्षावृत्ति को रोकने का अभियान छेड़ा हुआ है परंतु यह समस्या रुकने का नाम नहीं लेती। यह एक बहुत ही जटिल कार्य है। इसके लिए सरकार को शिक्षा का समुचित प्रबंध करना होगा। जो लोग अमानवीय शोषण का शिकार हो रहे हैं उनके पक्ष में कड़े कानून बनाने होंगे ताकि विकलांगों को भीख मांगने के लिए विवश न होना पड़े। वह कुछ न कुछ कार्य कर अपना पेट भर सकें। ज्यादा से ज्यादा प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर भी इसमें सुधार लाया जा सकता है।

çfrÒk iyk;u % प्रतिभा पलायन से अभिप्राय है देश के प्रशिक्षित, योग्य तथा विशेष योग्यता प्राप्त व्यक्तियों का अपने देश को छोड़कर किसी दूसरे देश में नौकरी करना तथा वहीं बस जाना। प्रतिभा पलायन का संबंध देश के इंजीनियरों, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों तथा अन्य क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता रखने वाले लोगों से है। यह समस्या अनेक कारणों से होती है जिनमें बेरोजगारी, देश में संसाधनों की कमी, पश्चिम के देशों की चकाचौंध तथा अधिक वेतन एवं सुविधाएं आदि मुख्य हैं।

lek/kku : यदि हमारे देश में भी विदेशों की भांति नौकरियों तथा आकर्षक वेतन आदि उपलब्ध हों तो इस समस्या पर कुछ हद तक रोक लग सकती है। इसके लिए प्रशिक्षित तथा प्रतिभावान युवकों को अपने देश के प्रति प्रेम और निष्ठा उत्पन्न करनी होगी तथा अपने देश को सुदृढ़ बनाने के लिए देश की आर्थिक व्यवस्था को सुधारने हेतु अपना योगदान देना होगा। ◈

पीने के पानी की गंभीर समस्या

सरकारी नीतियों के कारण हमारे देश में विदेशी कंपनियां आ रही हैं जिसके चलते वायु प्रदूषण, जमीन प्रदूषण एवं जल प्रदूषण चरम सीमा पर है। इससे लोगों को कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। शुद्ध पेयजल की समस्या एवं बागायती खेती में लगने वाली पानी की समस्या आ रही है। फसलें बरबाद हो रही हैं। जानवर गंदा पानी सेवन करने से मर रहे हैं।

◈ lk{kh ,e- j/k नौवीं
ओम् साईं सेंट्रल पब्लिक स्कूल
सौसर, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश

Vआज हमारे देश का विकास हो रहा है, हमारा देश प्रगति–पथ पर है। यह देश बहुत बड़ा देश है। विश्व की जनसंख्या सात सौ मिलियन है जिसमें से भारत की जनसंख्या लगभग 127 करोड़ है। इन सारे लोगों को चलाना और इनकी देखभाल करके देश को आगे ले जाना कोई मामूली बात नहीं हो सकती। हमारा देश दुनिया में नंबर एक पर है जो कि लोकतंत्र पर आधारित है।

आज भी देश में 54 प्रतिशत जनता अशिक्षित है। उनके हाथों को काम नहीं है। 65 प्रतिशत जनता गांवों में रहती है। जो लोग शहरों में रहते हैं उनके पास कुछ न कुछ रोजगार का साधन है लेकिन गांव की गरीब जनता के पास खेती के सिवा कुछ नहीं और खेती भी कम से कम किसानों के पास बची है। बरसात पर निर्भर गांव के लोग चार महीने मेहनत करते हैं और आठ महीने खाली रहते हैं। उनके पास बारह महीने का रोजगार नहीं मिलता व सरकार भी नहीं दे पा रही है। यह सबसे बड़ी समस्या है।

सरकारी नीतियों के कारण हमारे देश में विदेशी कंपनियां आ रही हैं जिसके चलते वायु प्रदूषण, जमीन प्रदूषण एवं जल प्रदूषण चरम सीमा पर है। इससे लोगों को कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। शुद्ध पेयजल की समस्या एवं बागायती खेती में लगने वाली पानी की समस्या आ रही है। फसलें बरबाद हो रही हैं। जानवर गंदा पानी सेवन करने से मर रहे हैं। कारखानों के कारण जंगलों की कटाई हो रही है जिससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया है। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा पड़ रहा है। जंगली जानवर गांव की तरफ आ रहे हैं।

भ्रष्टाचार इतना बढ़ चुका है कि सरकारी योजनाओं का फायदा आम जनता तक पहुंचता नहीं है। जो भी योजना आती है उसका पैसा नेता खा लेता है और कागजी कार्रवाई करके सरकारी पैसा आम जनता तक पहुंच गया, ऐसा बताया जाता है।

आये दिन पड़ोसी देश से आतंकवादी हमारे देश को क्षति पहुंचा रहा है। कभी जन–हानि तो कभी धन हानि, हमारी राष्ट्रीय–संपत्ति को नुकसान हो रहा है। यह भी एक राष्ट्रीय समस्या है। आज के आधुनिक युग में भी हमारे देश में अंधश्रद्धा है। अंधविश्वास पर लोग विश्वास करते हैं, जैसे भगवान को बलि देना। किसी रोग से कोई इन्सान अगर पीड़ित है तो भगवान उस पर गुस्सा हो गये, इस कारण से वह दुःख झेल रहा है इत्यादि!

बढ़ती जनसंख्या को कैसे कंट्रोल में करना है। अगर आज हमने कंट्रोल नहीं किया तो एक दिन ऐसा आएगा जब हर एक पेड़ की डालियों पर एक परिवार रहेगा यानि कि पेड़ की जितनी डालियां होंगी उतने परिवार एक पेड़ पर रहेंगे। जमीन हमें रहने के लिए कम पड़ेगी।

हमारे देश में डॉक्टरों की कमी है। आज अगर कोई बीमारी फैल जाती है तो पीड़ित लोगों को ट्रीटमेंट देने हेतु पर्याप्त मात्रा में डॉक्टर हमारे देश में नहीं है। ऐसी बहुत सारी समस्याएं देश के सामने हैं। हमारे देश की जातिगत आधारशिला है जो कि देश का विकास होने

में एक दीवार आड़े आ जाती है। हम आपस में ज़्यादा लड़ते हैं और ऊंच–नीच की सोच रखते हैं। यह बड़ी समस्या है।

इन सभी बिंदुओं पर सरकार ने बहुत सारी कल्याणकारी योजनाओं को अर्थात् समस्याओं के निराकरण हेतु विभिन्न प्रकार की योजनाओं को शुरू किया है। हर एक स्तर पर योजना बनाकर उसका कड़ाई से पालन करना शुरू किया है। भ्रष्टाचारी नेताओं को सजा का प्रावधान बनाया है और संविधान की कुछ बातों पर समीक्षा करके नया नियम बनाने की कोशिश की है। आज हम भारतीय भले ही विभिन्न जाति–धर्म के लोग हैं लेकिन हमारी एकता एवं अखण्डता को कभी भी खंडित नहीं किया जा सकता है। ◈

आपस में मिलकर रहने की जरूरत

◈ **vkj-, l- nx|i'k jk;** नौवीं
जवाहर नवोदय विद्यालय
मलहास, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

> जब तक विभिन्न संप्रदाय विरोधों के बावजूद मेलजोल में रहते हैं तब तक सांप्रदायिकता का जन्म नहीं होता। जब विविध संप्रदाय अपने प्रति अंधभक्ति रखकर दूसरे संप्रदायों के प्रति घृणा और हिंसा से भर उठते हैं तो सांप्रदायिकता की भावना का जन्म होता है। कट्टर हो उठना ही सांप्रदायिकता है। हमारे भारत में हिंदू-मुस्लिम ये दोनों धर्म तलवार की भांति हैं, जब चलती हैं तो आदमियों की जान जाती है।

nश में भ्रष्टाचार, गरीबी, महंगाई, आतंकवाद और कई तरह की समस्याएं हैं। भ्रष्टाचार का मतलब है कि जो अपना काम सही ढंग से नहीं करे और करते तो उसकी एवज में कुछ मांगे, उसे भ्रष्टाचार कहते हैं। जैसे कोई सरकार वादा करके अपना काम नहीं कर रही तो वह भ्रष्ट है। गांव के जो गरीब लोग हैं, जो कि कम पैसे वाले हैं, उन्हें कुछ भी काम करवाना होता है। वह काम उनका पूरा नहीं होता और वे निराश होकर वापस लौट आते हैं।

उन्हें काम करवाने के लिए कई कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है और यह भी पता नहीं रहता कि वह काम हो पाएगा नहीं। इसलिए गांव के लोगों की उम्मीद टूट जाती है। वे अपना काम नहीं करवा पाते। जहां भी जाते हैं तो पैसे का ही बोलबाला है। उसके अलावा तो कोई काम आगे बढ़ने का नाम ही नहीं लेता। इसके कारण लोगों को बहुत परेशानी होती है। इसका हल है कि जो भी काम है वह सही ढंग से हो और लोगों के मन में जो लालच है, उसे वे नष्ट करें। उनका काम वे सही ढंग से करें।

xjhch : देश में देखा जा रहा है कि गरीबी दिन–ब–दिन बढ़ रही है। आज हम देखते हैं कि देश में बहुत से लोग बेरोजगार हैं और उनके घर में पैसा कमाने वाला कोई नहीं है। जो लोग मेहनत से काम करके पैसा कमा रहे हैं उनका भी जो पैसा है वो बहुत कम है जो कि आज की महंगाई की तुलना में एक समय का खाना भी न चल पाए तो आदमी करे तो क्या करे? जो लोग मेहनत से काम कर रहे हैं उन्हें और पैसा दे जिससे कि उनका घर चल सके। देश में महंगाई बढ़ रही, उसे कम करे जिससे लोग कम पैसे में अपनी जरूरत का सामान खरीदें सकें और कुछ पैसा अपने आने वाले कल के लिए बचा सकें।

xanxh % आज हमें नदी और तालाब के किनारे जो पॉलिथिन और कई तरह के प्लास्टिक के बैग दिखाई देते हैं, यह हमारे आने वाले भविष्य में बहुत जानलेवा हो सकता है। क्योंकि इसके कारण पानी बहुत ही गंदा होता जा रहा है। जो लोग इसका उपयोग करते हैं उन्हें कई तरह की बीमारियों से गुजरना पड़ेगा और यह बीमारियां आसपास के लोगों तक भी फैल सकती है, यह बहुत जानलेवा हो सकता है। इसके हल के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने एक बहुत ही अच्छी योजना चलाई है वह है 'स्वच्छ भारत अभियान'।

ngt çFkk % हम अधिकतर गावों में देखते हैं कि आज भी दहेज प्रथा चल रही है। लड़के वाले लड़की वालों को प्रेमपूर्वक शादी करने का झांसा देते हैं और बाद में दहेज की मांग करते हैं। इस कारण से महिलाओं को बहुत दुख सहना पड़ता है। जब वे शादी होकर लड़के वालों के घर जाती हैं तो वहां भी दहेज के लिए तंग करते हैं। लड़की अपना संतुलन खोकर आत्महत्या कर लेती है। इसका हल यही है कि आदमी की सोच को बदलना चाहिए कि आखिर दहेज कब तक रहेगा। इसलिए लोगों को जागरूक होना पड़ेगा। सरकार को कड़ी से कड़ी कानून व्यवस्था बनानी चाहिए ताकि यह सभी चीज बंद हो जाए।

cky etnjh % आज हम देखते हैं कि गांवों में एक समय का खाना

भी कभी–कभी मुश्किल पड़ जाता है। ऐसे घरों के बच्चे अच्छे स्कूल में नहीं पढ़ पाते। ऐसे घरों में पैसे की कोई आवक नहीं रहती और वे दब जाते हैं और वे शिक्षित नहीं हो पाते। उन्हें अन्य घरों, दुकानों, कारखानों में काम करना पड़ता है क्योंकि घर की स्थिति बहुत खराब रहती है। घर वाले यदि अपने बच्चों को स्कूल भेजना भी चाहते हैं तो घर कि स्थिति उनको मजबूर कर देती है। इसका निवारण यही है कि सरकार कम पैसे में ही बच्चों को अच्छी और मुफ्त शिक्षा दे ताकि सभी बच्चे पढ़ सकें। स्कूल भी उनके गांव के आसपास होने चाहिए ताकि बच्चों को कोई तकलीफ नहीं हो।

tkfrçFkk % आज हम देश में देखते हैं कि जात–पात, छुआछूत से रोज लोग झगड़ रहे हैं और मर रहे हैं। इसका निवारण यही है कि हम अपने आपको जागरूक करें और अपनी सोच को बदलें। सोचें कि भगवान ने हम सबको एक ही रूप में बनाया और आखिर मरने के बाद सभी को इस धरती में मिल जाना है तो छुआछूत करने का फिर क्या मतलब है।

cky fookg % कुछ जगह हम देखते हैं कि बच्चों का कम उम्र में ही विवाह कर दिया जाता है जो कि बहुत ही गलत है। यह इसलिए होता है कि लोग शिक्षित नहीं रहते। बेटा थोड़ा–सा क्या बड़ा हुआ, उसकी शादी कर देते हैं, उसका जीवन बोझ बन जाता है।

egaxkbZ % आज देश में इतनी महंगाई बढ़ गयी है कि बाजारों में सब्जी खरीदना बहुत मुश्किल हो गया हैं। बात यहीं तक सीमित नहीं है, आज हर चीजों पर भारी महंगाई है। लोग महंगाई के कारण रो रहे हैं। जो अमीर है उनको तो कोई समस्या नहीं है लेकिन जो गरीब हैं वे तो बेचारे कुछ कर नहीं पाते और उन्हें बहुत दुःखों से गुजरना पड़ता है। इसका निवारण यही है कि महंगाई कम करें। कहने का सीधा अर्थ है कि जो भी संसाधन हैं, बचा कर उनका उपयोग करें ताकि भविष्य में इस समस्या से दो–चार न होना पड़े।

vkradokn % आतंकवाद का मतलब अपनी मनमानी करना। जब कोई

व्यक्ति या समूह हिंसा करके अपना स्वार्थ सिद्ध करता है तो वह आतंकवाद कहलाता है। हमारा भारत भी इसकी चपेट में फंसता जा रहा है। देश का माहौल खराब हो रहा है। आतंकवाद की समस्या मनुष्य के ही द्वारा बनाई गई है। इसे रोकने का एक ही उपाय है कि सब शांति–भाव से चलें। एक–दूसरे से मिल जुलकर रहें तभी हमारा देश आतंकवाद से मुक्त होगा।

lkçnkf;drk % जब तक विभिन्न संप्रदाय विरोधों के बावजूद मेलजोल में रहते हैं तब तक सांप्रदायिकता का जन्म नहीं होता। जब विविध संप्रदाय अपने प्रति अंधभक्ति रखकर दूसरे संप्रदायों के प्रति घृणा और हिंसा से भर उठते हैं तो सांप्रदायिकता की भावना का जन्म होता है। कट्टर हो उठना ही सांप्रदायिकता है। हमारे भारत में हिंदू–मुस्लिम ये दोनों धर्म तलवार की भांति हैं, जब चलती हैं तो आदमियों की जान जाती है। हमें धर्म पर लड़ने की कोई बात नहीं करनी चाहिए। आपसी भाईचारे के साथ रहना और आपस में मेलजोल बढ़ाने से इस समस्या का हल निकल सकता है। ◈

जनता के धैर्य की परीक्षा न ली जाए

◈ **vfnfr fEkÙky** दसवीं
सेंट मारग्रेट सी. सै. स्कूल
प्रशांत विहार, रोहिणी, दिल्ली

दहेज मांगना और देना दोनों निंदनीय कार्य है। जब वर और कन्या दोनों की शिक्षा-दीक्षा एक जैसी है, दोनों रोजगार में लगे हुए हैं, दोनों ही देखने-सुनने में सुंदर हैं तो फिर दहेज की मांग क्यों की जाती है? कन्यापक्ष की मजबूरी का नाजायज फायदा क्यों उठाया जाता है?

gमारा देश एक विकासशील देश है। एक ऐसा राष्ट्र जो विकास की ओर तेजी से अग्रसर है। हमारे राष्ट्र ने बहुत सी समस्याओं का सामना किया है व उनसे लड़ कर तेजी से विकास के प्रयत्न में है, परंतु जैसे–जैसे समय बदलता है, समस्याएं भी अपना रूप परिवर्तित कर लेती हैं।

आज हमारा राष्ट्र विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है, जिनके समाधान यदि जल्दी ही हासिल न हुए तो विकास की गति धीमी हो जाएगी और यह समस्याएं दीमक की भांति हमारे राष्ट्र को खोखला कर देंगी। समस्याएं व उनके समाधान निम्नलिखित हैं।

Ò"Vkpkj % यह समाज में तेजी से फैलने वाली बीमारी है जिसने लोगों के दिमाग में अपनी जड़ें जमा ली है। कोई भी जन्म से भ्रष्ट नहीं होता बल्कि अपनी गलत सोच और लालच के चलते धीरे–धीरे इसका आदी हो जाता है। समाज में बराबरी के साथ ही आमजन के बीच में जागरूकता लाने के लिये नियम–कानून के अनुसार भारत

सरकार ने गरीबों के लिए कई सारी सुविधाएं उपलब्ध कराईं जबकि सरकारी सुविधाएं गरीबों की पहुंच से दूर होती जा रही हैं क्योंकि अधिकारी अंदर ही अंदर गठजोड़ बना कर गरीबों को मिलने वाली सुविधाओं का बंदरबांट कर रहे हैं। अपनी जेबों को भरने के लिए वे गरीबों का पेट काट रहे हैं।

इस समस्या का समाधान केवल तभी हो सकता है जब इंसान का ज़मीर जाग जाए व स्वयं यह समझ जाए कि किसी का बुरा करके कभी किसी का अच्छा नहीं हो पाया है। क्योंकि इस समस्या को केवल सज़ा देकर नहीं रोका जा सकता जब तक कि आत्मा में जागरूकता न हो।

cjktxkjh % हमारे राष्ट्र में बेरोज़गारी की बहुत विकट समस्या है। बेरोजगारी कई समस्याओं को जन्म देती है, जैसे भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अराजकता आदि। युवा वर्ग की शक्ति एवं ऊर्जा के प्रयोग के लिये उन्हें सही शिक्षा और उसके बाद उचित मार्गदर्शन मिलना जरूरी है वरना युवक भटक जाते हैं और समाज में बुराइयां फैलती हैं। हमें अपनी शिक्षा को रोजगार उन्मुख बनाना होगा। प्रशिक्षण केन्द्र, व्यावसायिक शिक्षा इत्यादि को प्रोत्साहन देना होगा। स्वरोजगार के इच्छुक युवाओं को कर्ज एवं मार्गदर्शन के रूप में उचित मदद मिलनी चाहिए।

सरकार की ओर से बेरोजगारी को दूर करने के लिये बनायी गई योजनाओं का सख्ती से पालन होना चाहिए। बेरोजगारी देश के सम्मुख एक प्रमुख समस्या है जो प्रगति के मार्ग को तेजी से अवरुद्ध करती है। बेरोजगारी की बढ़ती समस्या निरंतर हमारी प्रगति, शांति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बेरोजगारी के मूलभूत कारणों की खोज के पश्चात् इसके निदान हेतु कुछ सार्थक उपाय किए जाएं। इसके लिए सर्वप्रथम हमें अपने छात्र–छात्राओं तथा युवक–युवतियों की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा। विद्यालयों में तकनीकी एवं कार्य पर आधारित शिक्षा दें जिससे उनकी शिक्षा का प्रयोग उद्योगों व फैक्ट्रियों में हो सके और वे आसानी से रोजगार पा सकें।

xjhch % आज गरीबी की समस्या जटिलतम होने की पूरी सम्भावना है। अगर इस समस्या पर समय रहते पुनर्विचार नहीं किया गया और इसे राजनीतिक चर्चा के केंद्र में फिर से नहीं लाया गया तो पूरा देश भयावह, असंतुलित और अन्याय के रास्ते पर बढ़ लेगा जिसका अंतिम परिणाम किसी भी तरह लाभकारी नहीं होगा।

आजादी के तत्काल बाद हमने विकास की जो नीतियां अपनाईं, उनमें सोवियत ढांचे का अनावश्यक प्रभाव रहा। भारत ने अपने विकास क्रम के प्रारंभ से ही अपनी विशाल जनसंख्या को अपनी महत्वपूर्ण सम्पत्ति नहीं, बल्कि विपत्ति के रूप में समझा और ऐसे मशीनी विकास को बढ़ावा दिया जिसमें मानव शक्ति का महत्व गौण था। परिणामस्वरूप भारत के अपने शिल्प और कुटीर उद्योग, कला और पारंपरिक रूप से चलते आ रहे अन्य धंधे धीरे–धीरे खत्म होते गए।

गरीबों के उत्थान के लिए अब तक जो भी घोषणाएं की जाती रही हैं, सरकार ने जो भी वचन अब तक दिए हैं, उनके अनुरूप काम नहीं हुआ। योजनाएं और कार्यक्रम या तो रास्ते में धराशायी हो गए या उन्हें मात्र औपचारिकतावश चलाया गया। अभी यहां जनता के धैर्य का बांध छलक अवश्य रहा है, टूटा नहीं है। इसलिए अब भी समय है कि हम अपनी नीतियों में ऐसे मोड़ ले आएं जिनसे समाज के निम्नतम स्तर के व्यक्ति का जीवन–स्तर भी ऊपर उठ सके।

ngt çFkk % दहेज मांगना और देना दोनों निंदनीय कार्य है। जब वर और कन्या दोनों की शिक्षा–दीक्षा एक जैसी है, दोनों रोजगार में लगे हुए हैं, दोनों ही देखने–सुनने में सुंदर हैं तो फिर दहेज की मांग क्यों की जाती है? कन्यापक्ष की मजबूरी का नाजायज फायदा क्यों उठाया जाता है? यदि फरमाईश पूरी न की गई तो हो सकता है कि उनकी लाडली बिटिया प्रताड़ित की जाए, उसे यातनाएं दी जाएं और यह भी असंभव नहीं है कि उसे जान से मार दिया जाए। ऐसी न जाने कितनी तरुणियों को जला देने, मार डालने की खबरें अखबारों में छपती रहती हैं।

दहेज–दानव को रोकने के लिए सरकार द्वारा सख्त कानून बनाया गया है। इस कानून के अनुसार दहेज लेना और दहेज देना दोनों अपराध माने गए हैं। यह कानून कालांतर में संशोधित करके अधिक कठोर बना दिया गया है। किंतु यह एक ऐसी प्रथा है जिसे केवल कानून बना कर समाप्त नहीं किया जा सकता अपितु स्वयं लड़की को ही इतना आत्मनिर्भर बनना होगा ताकि वह अपना सौदा होने से स्वयं को बचा सके। केवल और केवल स्वयं लड़की ही अपने आप को प्रताड़ित होने से बचा सकती है, केवल कानून नहीं।

dU;k Òw.k gR;k % कन्या भ्रूण हत्या लड़कों को प्राथमिकता देने तथा कन्या जन्म से जुड़े निम्न मूल्य के कारण जान बूझकर की गई हत्या होती है। ये प्रथाएं उन क्षेत्रों में होती हैं जहां सांस्कृतिक मूल्य लड़के को कन्या की तुलना में अधिक महत्व देते हैं।

भारत में स्त्री को हिकारत से देखने को सामाजिक–आर्थिक कारणों से जोड़ा जा सकता है। भारत में किए गए अध्ययनों ने स्त्री की हिकारत के पीछे तीन कारक दर्शाए हैं, जो हैं : आर्थिक उपयोगिता, सामाजिक आर्थिक उपयोगिता एवं धार्मिक कार्य।

- अध्ययन आर्थिक उपयोगिता के बारे में यह इंगित करते हैं कि पुत्रियों की तुलना में पुत्रों द्वारा पुश्तैनी खेत पर काम करने या पारिवारिक व्यवसाय, आय अर्जन या वृद्धावस्था में माता–पिता को सहारा देने की संभावना अधिक होती है।

- विवाह होने पर लड़का, एक पुत्रवधू लाकर घर की लक्ष्मी में वृद्धि करता है जो घरेलू कार्य में अतिरिक्त सहायता देती है एवं दहेज के रूप में आर्थिक लाभ पहुंचाती है जबकि पुत्रियां विवाहित होकर चली जाती हैं तथा दहेज के रूप में आर्थिक बोझ होती है।

- स्त्री की हिकारत के पीछे सामाजिक–आर्थिक उपयोगिता संबंधी कारक यह है कि चीन की तरह भारत में पुरुष संतति एवं पुरुष प्रधान परिवारों की प्रथा यह है कि वंश चलाने के लिए कम से कम एक

पुत्र होना अनिवार्य है एवं कई पुत्र होना परिवारों के ओहदे को अतिरिक्त रूप से बढ़ा देता है।

इस कुरीति को समाप्त करने तथा लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं। सरकार द्वारा देश में कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए अपनाई गई बहुआयामी रणनीति इसमें जागरूकता पैदा करने और विधायी उपाय करने के साथ–साथ महिलाओं को सामाजिक–आर्थिक रूप से अधिकार संपन्न बनाने के कार्यक्रम शामिल है।

भारत सरकार और अनेक राज्य सरकारों द्वारा पर समाज में लड़कियों और महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए विशेष योजनाएं लागू की गई हैं। किसी भी बुराई को केवल दण्ड के डर से दूर करना संभव नहीं है अपितु लोगों की मानसिकता का बदलना अति आवश्यक है जिससे हमारे राष्ट्र की समस्याएं जड़ से समाप्त हो सकें। ◈

नारी आगे बढ़ेगी तो देश भी बढ़ेगा

भारत की राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए सामाजिक स्तर पर जद्दोजहद करने की आवश्यकता है क्योंकि देश में अशिक्षा और निर्धनता हमारी प्रगति के मार्ग की सबसे बड़ी रुकावट है। ये दोनों ही कारक मनुष्य के संपूर्ण बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में अवरोध उत्पन्न करते हैं। जब तक समाज में अशिक्षा और निर्धनता व्याप्त है, कोई भी देश वास्तविक रूप में विकास नहीं कर सकता है।

◈ fgek"kh दसवीं
ए.पी.जे. स्मार्ट स्कूल
मुंडी खरड़, मोहाली, पंजाब

भारत एक विशाल देश है जहां विभिन्न धर्मों, जाति व वेशभूषा धारण करने वाले लोग निवास करते हैं। दूसरे शब्दों में अनेकता में एकता हमारी पहचान और हमारा गौरव है परंतु अनेकता अनेक समस्याओं की जननी भी है।

जाति, भाषा, रहन–सहन व धार्मिक विभिन्नताओं के बीच कभी–कभी सामंजस्य स्थापित रखना दुष्कर हो जाता है। विभिन्न धर्मों व संप्रदायों के लोगों की विचारधाराएं भी विभिन्न होती हैं। देश में व्याप्त प्रांतीयता, भाषावाद, संप्रदायवाद या जातिवाद इन्हीं विभिन्नताओं का दुष्परिणाम है।

इसके चलते आज देश के लगभग सभी राज्यों से दंगे–फसाद, मारकाट, लूटखसोट आदि के समाचार प्रायः सुनने व पढ़ने को मिलते हैं।

नारी के प्रति अत्याचार, दुराचार तथा बलात्कार का प्रयास हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। प्राचीनकाल में जहां नारी को देवी तुल्य समझा जाता था आज उसी नारी की भावनाओं को दबाकर रखा

जाता है। पुरुष का अहं उसे अपने समकक्ष स्थान देने के लिए विरोध करता है।

इससे पता चलता है कि तुलसीदास ने अपने युग की मान्यताओं को लिपिबद्ध किया है। समाज में स्त्रियों एवं शुद्रों की स्थिति बड़ी दयनीय थी। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियां आज भी नारी को कष्टमय व असहाय जीवन जीने के लिए बाध्य करती हैं।

केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु हमारे कथित सभ्य शिक्षित समाज में भी दहेज का जहर व्याप्त है। प्रतिदिन कितनी ही भारतीय नारियां दहेज प्रथा के कारण मनुष्य की बर्बरता का शिकार हो जाती हैं अथवा जिंदा जला दी जाती हैं।

अंधविश्वास व रूढ़िवादिता हमारे नवयुवकों को भाग्यवादिता की ओर ले जाती है, फलस्वरूप वे कर्महीन हो जाते हैं। अपनी असफलताओं में अपनी कमियों को ढूंढने के बजाय वे इसे भाग्य की परिणति का रूप दे देते हैं।

भ्रष्टाचार भी हमारे देश में एक जटिल समस्या का रूप ले चुका है। सामान्य कर्मचारी से लेकर ऊँचे–ऊँचे पदों पर आसीन अधिकारी तक सभी भ्रष्टाचार के पर्याय बन गए हैं। जिस देश के नेतागण भ्रष्टाचार में डूबे हुए होंगे तो सामान्य व्यक्ति उससे परे कब तक रह सकता है। यह भ्रष्टाचार का ही परिणाम है कि देश में महंगाई तथा कालाबाजारी के जहर का स्वच्छंद रूप से विस्तार हो रहा है।

जैसा कि हमने बात की थी अंधविश्वास व रूढ़िवादिता की यह अंधविश्वास व रूढ़िवादिता जैसी सामाजिक बुराई देश की प्रगति को पीछे धकेल देती है। जाति की जड़ें समाज में बहुत गहरी हो चुकी हैं। ये समस्याएं आज की नहीं हैं अपितु सदियों, युगों से पनप रही हैं। इनके परिणामस्वरूप सामाजिक विषमता पनपती है जो देश के विकास में बाधक बनती है। इसके अतिरिक्त भाई–भतीजावाद व कुर्सीवाद समाज में असमानता व अन्य समस्याओं को जन्म देता है।

भारत की राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए सामाजिक स्तर पर जद्दोजहद करने की आवश्यकता है क्योंकि देश में अशिक्षा और निर्धनता हमारी प्रगति के मार्ग की सबसे बड़ी रुकावट है। ये दोनों ही कारक मनुष्य के संपूर्ण बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में अवरोध उत्पन्न करते हैं। जब तक समाज में अशिक्षा और निर्धनता व्याप्त है, कोई भी देश वास्तविक रूप में विकास नहीं कर सकता है।

इन समस्याओं का हल ढूंढ़ना केवल सरकार का ही दायित्व नहीं है अपितु यह पूरे समाज तथा समाज के सभी नागरिकों का उत्तरदायित्व है। इसके लिए जनजागृति आवश्यक है जिससे लोग जागरूक बनें व अपने कर्तव्यों को समझें। देश के युवाओं व भावी पीढ़ी पर यह जिम्मेदारी और भी अधिक बनती है।

आवश्यकता है कि देश के सभी युवा समाज में व्याप्त इन बुराइयों का स्वयं विरोध करें तथा इन्हें रोकने का हर संभव प्रयास करें। यदि यह प्रयास पूरे मन से होगा तो इन सामाजिक बुराइयों को अवश्य ही जड़ से उखाड़ फेंका जा सकता है।

बाल मजदूरी की समस्या से आप अच्छी तरह वाकिफ होंगे। कोई भी ऐसा बच्चा जिसकी उम्र 14 वर्ष से कम हो और वह जीविका के लिए काम करे, बाल मजदूर कहलाता है। गरीबी, लाचारी और माता–पिता की प्रताड़ना के चलते ये बच्चे बाल–मजदूरी के इस दलदल में धंसते चल जाते हैं।

हमारे देश में लड़की पर भी बहुत अत्याचार किए जाते हैं। उन्हें पैदा होने से पहले मार दिया जाता है परंतु आज लड़की ही देश का नाम रोशन करती है। मतलब यह है कि आज के समय में लड़कियां हर क्षेत्र में लड़कों से आगे है और हर क्षेत्र में अपने माता–पिता का नाम रोशन करती हैं।

मैं आखिर में पूरे देश से यह कहना चाहती हूं कि हमें इन सारी सामाजिक समस्याओं को खत्म कर देना चाहिए तभी हमारा देश आगे सफलता की ओर बढ़ेगा और सभी लोगों को अपने देश पर गर्व होगा। ◈

दोषपूर्ण शिक्षा भी जिम्मेदार

◈ lk{kh jk/k ekgu feJ
आठवीं
आर.बी.टी. हिंदी विद्यालय
डोंबिवली पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र

आर्थिक विपन्नता की स्थिति में दया, धर्म और परोपकार जैसे गुण उसे महत्वहीन लगने लगते हैं। हर तरफ जुलूस के नारों में 'शिक्षा को रोजगार से जोड़ें, 'बेरोजगारी भत्ता दो', 'हर पेट को रोटी, हर हाथ को काम दो' आदि गूंजते ये स्वर हमें बेरोजगारी की समस्या पर पुनर्चिंतन को विवश करते हैं।

Vाज राष्ट्र में कई आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक समस्याएं हैं। वर्तमान युग में सामाजिक अवलोकन एवं उनका मूल्यांकन प्रायः आर्थिक आधार पर किया जाने लगा है। आज मनुष्य आत्मसुख तभी प्राप्त कर सकता है जब वह आर्थिक रूप से स्वयं को समर्थ महसूस करता हो।

आर्थिक विपन्नता की स्थिति में दया, धर्म और परोपकार जैसे गुण उसे महत्वहीन लगने लगते हैं। हर तरफ जुलूस के नारों में 'शिक्षा को रोजगार से जोड़ें, 'बेरोजगारी भत्ता दो', 'हर पेट को रोटी, हर हाथ को काम दो' आदि गूंजते ये स्वर हमें बेरोजगारी की समस्या पर पुनर्चिंतन को विवश करते हैं।

देश में बेकारी की समस्या के मूल कारणों पर यदि हम दृष्टि डालें तो हम देखते हैं कि आर्थिक सपन्नता के लिए व्यवसाय एवं उद्योग के अतिरिक्त प्रायः लोग अन्य आर्थिक स्त्रोत के रूप में नौकरी को विशेष महत्व देते हैं। अतएव शिक्षित, अर्धशिक्षित व उच्चशिक्षित सभी वर्ग के लोग नौकरी की ही ओर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। फल

स्वरूप नौकरी की समस्या हमारे लिए राष्ट्रीय स्तर की समस्या बन चुकी है।

राष्ट्र के सम्मुख बेरोजगारी की इस विकराल समस्या का प्रमुख कारण हमारे देश की शिक्षा प्रणाली रही है। किसी भी देश की शिक्षा उसके मानसिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक विकास व समृद्धि का आधार होती है परंतु आजादी के पश्चात् भी हमारी शिक्षा प्रणाली में विशेष परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। इसका आधार प्रयोगात्मक न होने के कारण यह देश के नवयुवकों को स्वावलंबी बनाने तथा उनमें आत्मविश्वास कायम करने में पूर्णतया असफल रही है।

हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि ने बेरोजगारी की समस्या को और भी अधिक जटिल बना दिया है। देश में उपलब्ध संसाधनों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि का अनुपात कहीं अधिक है। वेतनभोगियों के लिए तो यह अभिशाप की तरह है। महंगाई की तुलना में वेतन नहीं बढ़ने से वेतन और खर्च में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है। ऐसे में सरकार को हस्तक्षेप करके कीमतों पर नियंत्रण रखने के दूरगामी उपाय करने चाहिए। सरकार के महंगाई के उन्मूलन हेतु गहन अध्ययन करना चाहिए और उपाय करने चाहिए ताकि महंगाई किसी को न सताए।

भारत के सामने अनेक समस्याएं चुनौती बनकर खड़ी हैं। जनसंख्या विस्फोट उनमें से सर्वाधिक है। एक अरब भारतीयों के पास धरती, खनिज साधन आज भी वही हैं जो 50 साल पहले थे। परिणामस्वरूप लोगों के पास जमीन कम, आय कम और समस्याएं अधिक बढ़ती जा रही हैं। आज विश्व का हर छठा नागरिक भारतीय है। चीन के बाद भारत भी आबादी सर्वाधिक है।

भारतीय परंपराओं में बाल–बच्चों से भरा–पूरा घर ही सुख का सागर माना जाता है। इसलिए शादी करना और बच्चों की फौज जमा करने में हर नागरिक रुचि लेता है। यहां के लोग मानते हैं कि पिता का वंश चलाना हमारा धर्म है। ईश्वर–प्राप्ति के लिए पुत्र का होना अनिवार्य माना जाता है। परिणामस्वरूप लड़कियां होने पर संतान बढ़ती जाती है।

जनसंख्या के दुष्परिणामों की कहानी स्पष्ट और प्रकट है। जहां भी देखो, हर जगह भीड़ ही भीड़ का साम्राज्य है। भीड़ के कारण हर जगह गंदगी है। देश का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। खुशहाली की जगह लाचारी बढ़ रही है। बेकारी से परेशान लोग हिंसा, उपद्रव और चोरी–डकैती पर उतर आते हैं। जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए आवश्यक है कि हर नागरिक अपने परिवार को सीमित करे। एक से अधिक संतान को जन्म न दे। लड़के लड़की को एक समान मानने से भी जनसंख्या पर नियंत्रण हो सकता है। यदि जनसंख्या को नियंत्रित रखा गया तो बेकारी की समस्या इतनी तीव्रता से न उठ खड़ी होती।

बेरोजगारी के अनेक दुष्परिणाम होते हैं। लंबे समय से रोजगार की तलाश में लगा व्यक्ति जब असफल होता है तो उसमें निराशा व कुंठा घर कर जाती है। उसकी स्वावलंबन क्षमता क्षीण होती जाती है जिससे उसमें आक्रोश, अनुशासनहीनता, अनैतिकता का समावेश होता है। देश भर में बढ़ती हिंसा, चोरी, डकैती, तस्करी, अपहरण, बलात्कार व हत्याओं आदि के लिए बेरोजगारी ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उत्तरदायी है।

अतः बेरोजगारी जैसी राष्ट्रीय समस्या को दूर करने हेतु सभी स्तरों से प्रयास होना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि देश में ऐसी शिक्षा–प्रणाली लागू हो, जिसका आधार प्रायोगिक हो। युवकों को स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहन मिले जिसके लिए उन्हें आवश्यक तकनीकी एवं औद्योगिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

लघु एवं कुटीर उद्योगों को अधिक प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा नई योजनाएं प्रस्तुत की जानी चाहिए। हड़ताल, तालाबंदी तथा स्वार्थपूर्ण राजनीतिक गतिविधियों पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। हमारे देश की सरकार बेकारी की इस राष्ट्रीय समस्या से भलीभांति अवगत है। समय–समय पर देश से बेरोजगारी दूर करने हेतु अनेक कार्यक्रम घोषित किए गए हैं परंतु हमें अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी है। यह समस्या स्वयं में विकराल है। जब तक इसे रोकने हेतु सामूहिक प्रयास नहीं होंगे तब तक इसे जड़ से उखाड़ फेंकना संभव नहीं होगा। ◈

किसी के स्वास्थ्य से न हो खिलवाड़

◈ fu'kk pkMd आठवीं
इन्डस अकादमी
सिलभंगा, जागीरोड, मारिगांव, असम

आजादी के इतने वर्षों बाद भी देश में ऐसे लोग हैं जो गरीबी-रेखा के नीचे की श्रेणी में आते हैं। गरीबी जीवन का एक अभिशाप है। यह अनेक असामाजिक तत्वों को जन्म देती है, जैसे चोरी-डकैती, किशोरावस्था अपराध, बीमारी, झोपड़-पट्टी इत्यादि जो कि देश की छवि बिगाड़ते हैं और समाज में अशांति की उत्पत्ति करते हैं।

Òारत एक विशाल देश है। पूर्ण रूप से उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित भारत भौगोलिक दृष्टि से विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है। भारत के पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर–पूर्व में चीन, नेपाल और भूटान, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार और उत्तर–पश्चिम में अफगानिस्तान स्थित है।

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था क्रय शक्ति क्षमता के आधार पर विश्व की तीसरी और मानक मूल्यों के आधार पर विश्व की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 1991 के बाज़ार सुधारों के बाद भारत विश्व की सबसे तेज विकसित होती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक हो गयी है और इसे एक औद्योगीकृत राष्ट्र माना जाता है।

भारत का संविधान भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। लगभग 13 लाख सक्रिय सैनिकों के साथ भारतीय सेना दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी सेना है।

इतना होते हुए भी भारत के सामने अभी भी कई समस्याएं अपनी जड़ें मजबूत बनाए हुए हैं जिनका निवारण अति आवश्यक है। राष्ट्रीय सम्पदा–प्राकृतिक सम्पदा और मानव–सम्पदा का पूर्ण और सही ढंग से अगर उपयोग न हो तो कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं जो समय के साथ बढ़ती नज़र आती हैं। वे एक राष्ट्र को भीतर ही भीतर इतनी खोखला कर देती हैं जिससे पूरा देश प्रभावित होता है।

प्रकृति ने हमारे देश को कई सम्पदाओं से नवाजा है, जैसे– जन संपदा, खनिज संपदा इत्यादि। पर कुदरत की दी गई नायाब भेंट की मनुष्य कद्र ना करते हुए प्रकृति को नष्ट करने में लगा हुआ है जिससे कई राष्ट्रीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। हमारे राष्ट्र की निम्नलिखित समस्याएं हैं जिनके समाधान हेतु निम्नांकित सुझाव प्रयास के तौर पर अपनाएं जा सकते हैं।

c<rh tul[;k % बढ़ती जनसंख्या भारत की सबसे बड़ी समस्या है। बढ़ती हुई जनसंख्या को समान रूप से बेहतर जिंदगी प्रदान करना राष्ट्र के लिए बहुत कठिन है। शिक्षा, बेहतर आर्थिक स्थिति, मौलिक आवश्यकताओं पर सबका अधिकार है। परंतु बढ़ती जनसंख्या को पूर्ण रूप से सारी सुविधाएं उपलब्ध करवाना कठिन होता जा रहा है। इसकी वजह से समाज में कई तत्व उत्पन्न हो रहे हैं, जैसे भ्रष्टाचार, गरीबी, अपराध, अनैतिकता, चोरी, डकैती इत्यादि। ऐसे असामाजिक तत्त्वों को रोकने के लिए बढ़ती जनसंख्या की गति–वृद्धि में कटौती लानी होगी।

l>ko

- बाल विवाह जैसी प्रथा को पूर्ण रूप से समाप्त करना होगा। आज भी बाल विवाह का प्रचलन कई जगहों पर है। सरकार को लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न करनी होगी कि विवाह की आयु कम से कम 24–25 तक होनी चाहिए। ग्रामीण इलाकों में आज भी लड़कियों की शादी 18 साल की उम्र में हो जाती है।

- हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या है कि स्वास्थ्य केन्द्र सीमित हैं। इस देश में गांवों की संख्या अधिक है जहां स्वास्थ्य केंद्र सेवा अधिक नहीं है। इससे काफी लोग शहरों या कस्बों में जाकर इलाज करवाने में सक्षम नहीं है जिसकी वजह से शिशु मृतकों की संख्या अधिक होती है। लोगों में इसी वजह से यह धारणा उत्पन्न हो गई है कि उनकी कोई संतान तो जीवित रहे, यह सोचकर वे कई शिशु उत्पन्न करते हैं जो जनसंख्या की वृद्धि को बढ़ावा देते हैं। इसलिए अधिक मात्रा में स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना करवानी चाहिए। लोगों में जागरूकता फैलाने की जरूरत है कि कैसे जनसंख्या वृद्धि उनके और देश के हित के लिए सही नहीं है। सरकार को ऐसी कई संस्थाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जो परिवार नियोजन की शिक्षा का प्रचार कर लोगों को जागरूक बना सके।

- महिलाओं को सक्षम बनाने की आवश्यकता है। अधिक से अधिक महिलाओं को देश के कार्य के हर क्षेत्र में अधिकृत करने का बढ़ावा मिलना चाहिए ताकि उनका आत्मविश्वास बढ़े और देश की उन्नति में उनका योगदान प्राप्त हो।

- शिक्षा का प्रसार सबसे अति आवश्यक है जिससे कि इस समस्या का समाधान निश्चित तौर पर पाया जा सकता है।

xjhch % आजादी के इतने वर्षों बाद भी देश में ऐसे लोग हैं जो गरीबी–रेखा के नीचे की श्रेणी में आते है। गरीबी जीवन का एक अभिशाप है। यह अनेक असामाजिक तत्वों को जन्म देती है, जैसे कि चोरी–डकैती, किशोरावस्था–अपराध, बीमारी, झोपड़–पट्टी इत्यादि जो कि देश की छवि बिगाड़ते हैं और समाज में अशांति की उत्पत्ति करते हैं।

l>ko

- गरीबी को हटाने के लिए शिक्षा का प्रचार करना आवश्यक है। मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा आवश्यक है।

- रोजगार उपलब्ध करवाना भी एक आवश्यक कदम है।

• मौलिक आवश्यकताओं को उपलब्ध करवाने के लिए सरकार द्वारा श्रेष्ठ कदम उठाने चाहिए।

çn"k.k % बढ़ता प्रदूषण देश की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। प्रदूषण की वजह से अनेक बीमारियां फैल रही हैं। वर्ष 2015 में देश की राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत के इलाकों में स्वाइन फ्लू जैसी बीमारियों ने लोगों में डर उत्पन्न किया था। कभी मलेरिया तो कभी डेंगू जैसी खतरनाक बीमारी से लोग भयग्रस्त रहते हैं। हवा में ऐसे रसायन मिल चुके हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक हैं।

l>ko

• पेड़–पौधे अधिक से अधिक मात्रा में लगवाने चाहिए।

• लोगों में जागरूकता फैलाएं कि अपने आसपास के स्थान, कस्बे, शहर को स्वच्छ रखें।

• डीजल वाहन का उपयोग कम से कम हो।

• नदियों को साफ–सुधरा रखें।

i;ty % दुनिया की सबसे बड़ी समस्या अब पीने के पानी के रूप में उत्पन्न हुई हैं। विश्व में 70 प्रतिशत जल होने के बावजूद लोगों को पीने का स्वच्छ पानी नहीं मिल रहा है। कई इलाके सूखे से ग्रस्त हैं। लोग एक–एक बूंद को तरस रहे हैं।

l>ko

• लोगों में जागरूकता फैलानी चाहिए कि पानी का सद्पयोग करें।

• पर्यावरण को नष्ट ना करें।

• बारिश का पानी आपातकालीन स्थिति के लिए इकट्ठा करें।

• अधिक मात्रा में वृक्षारोपण करें।

Ò"Vkpkj % राष्ट्र की अन्य समस्याओं में एक भ्रष्टाचार भी है जो कि

रहा है। ध्यानी व्यक्ति यंत्रवत जीना
छोड़ देता है।

देश की जड़ों को खोखला कर रहा है। हर कहीं भ्रष्टाचार, रिश्वतमारी, घोटाले जैसे शब्दों ने आम आदमी के मन में चिंता का एक बड़ा विषय बना लिया है। 2जी घोटाला, कोल घोटाला इत्यादि ऐसी विषम परिस्थिति है जिसने देश के आर्थिक स्थिति को कमजोर बना दिया है। काला धन, जो कि विदेशों को बैंकों में पड़ा है, किसी व्यक्ति विशेष को मजबूत और देश को तोड़ रहा है।

I>ko

- कठोर नियमों की आवश्यकता है। अपराधियों को सख्त सजा मिलनी चाहिए।
- कानूनी प्रणाली का फैसला शीघ्र होना चाहिए।

अगर देखा जाए तो राजनीति भी राष्ट्र की एक समस्या के रूप में उभर रही है। राजनेता अपने दल का स्वार्थ देश के हित के आगे रख रहे हैं जिससे देश में कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। लोगों में जागरूकता लानी होगी कि वे अपना नेता किसे चुन रहे हैं। कानूनी व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए। चुनाव टिकट देते समय नेता का चरित्र अच्छी तरह जांच लेना चाहिए।

इसके अतिरिक्त देश की अनेक समस्याएं हैं, जैसे कि बढ़ती महंगाई, आतंकवादी घुसपैठ, राष्ट्रीय अखण्डता को ठेस पहुंचाना इत्यादि जिसके लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए। किसी भी असामाजिक तत्व को यह आज्ञा नहीं मिलनी चाहिए कि वह देश की एकता को तोड़ने का प्रयास करे। वर्तमान में जो ऐसी स्थिति बन रही है उसे जल्द से जल्द रोकने की जरूरत है। हमारा देश 'सोने की चिड़िया' से संबोधित होता था। आज जनता की यह मांग है कि इस देश में सोने की चिड़िया फिर से अपने मधुर स्वर में चहकती नजर आए। ◈

बढ़ती ही जा रही है बेरोजगारी

◈ **vfirk flg** नौवीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
रतवार, कैमूर, बिहार

देश में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं। सर्वप्रथम यहां की जलवायु प्रजनन के लिए अधिक अनुकूल है। इसके अतिरिक्त निर्धनता, अशिक्षा, रूढ़िवादिता तथा संकीर्ण विचार आदि भी जनसंख्या वृद्धि के अन्य कारण हैं। देश में बाल-विवाह की परंपरा प्राचीन काल से थी जो आज भी गांवों में विद्यमान है जिसके फलस्वरूप अधिक बच्चे पैदा होते जा रहे हैं।

Òरत बहुत विशाल देश है। यहां बहुत बड़ी जनसंख्या रहती है, अतः समस्याएं होनी भी लाजिमी है। हमारे देश में अनेक जटिल समस्याएं हैं जो देश के विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं। कुछ समस्याएं निम्न निर्दिष्ट हैं–

xjhch % बेरोजगारी और अन्य कारणों के कारण गरीबी बढ़ रही है। हमारे देश में गरीबी कम होने का नाम नहीं ले रही है। लोगों की सामान्य जरूरतें भी अभी तक इस देश में पूरी नहीं हो पाई हैं। आज भी लोग यहां रोटी, कपड़ा और मकान के लिए तरस रहे हैं। गरीबी के अनेक कारण हैं जिसमें एक कारण शिक्षा भी है। यदि लोगों के पास ज्ञान होगा तो वे कुछ न कुछ करके अपनी जरूरतों की पूर्ति अवश्य कर सकते हैं।

cjkstxkjh % हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या भी दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। लोगों के पास शैक्षिक योग्यता होते हुए भी उनको रोजगार नहीं मिल पा रहा है। पढ़े–लिखे लोग भी अपना जीवन यापन

करने के लिए छोटा–मोटा व्यवसाय चुन रहे हैं क्योंकि उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार मनचाहा रोजगार नहीं मिल पा रहा है।

tul[;k % जनसंख्या वृद्धि भी देश की इन्हीं जटिल समस्याओं में से एक है। संपूर्ण विश्व में चीन के पश्चात् भारत सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है परंतु जिस गति से हमारी जनसंख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए वह दिन दूर नहीं जब यह चीन से भी अधिक हो जाएगी। हमारी जनसंख्या वृद्धि की दर इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मात्र पांच दशकों में यह 33 करोड़ से 100 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है।

देश में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं। सर्वप्रथम यहां की जलवायु प्रजनन के लिए अधिक अनुकूल है। इसके अतिरिक्त निर्धनता, अशिक्षा, रूढ़िवादिता तथा संकीर्ण विचार आदि भी जनसंख्या वृद्धि के अन्य कारण हैं। देश में बाल–विवाह की परंपरा प्राचीन काल से थी जो आज भी गांवों में विद्यमान है जिसके फलस्वरूप अधिक बच्चे पैदा होते जा रहे हैं।

शिक्षा का अभाव भी जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख कारण है। परिवार नियोजन के महत्व को अज्ञानतावश लोग समझ नहीं पाते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुष समाज की प्रधानता होने के कारण लोग लड़के की चाह में कई संतानें उत्पन्न कर लेते हैं। इसके पश्चात् उनका उचित भरण–पोषण करने का सामर्थ्य न होने पर निर्धनता व कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं।

देश ने चिकित्सा के क्षेत्र में अपार सफलताएं अर्जित की हैं जिसके फलस्वरूप जन्मदर की वृद्धि के साथ ही साथ मृत्युदर में कमी आई है। कुष्ठ, तपेदिक व कैंसर जैसे असाध्य रोगों का इलाज संभव हुआ है जिसके कारण भी जनसंख्या अनियंत्रित गति से बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या में बढ़ोतरी का मूल कारण है अशिक्षा और निर्धनता।

आंकड़े बताते हैं कि जिन राज्यों में शिक्षा–स्तर बढ़ा है और निर्धनता घटी है वहां जनसंख्या की वृद्धि दर में भी ह्रास हुआ है। बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि प्रांतों में जनसंख्या वृद्धि दर सबसे अधिक है क्योंकि इन प्रांतों में समाज की धीमी तरक्की हुई है।

देश में जनसंख्या वृद्धि की समस्या आज अत्यंत भयावह स्थिति में है, जिससे देश को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। देश में उपलब्ध संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक होने का दुष्परिणाम यह है कि स्वतंत्रता के पांच दशकों बाद भी लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है।

इन लोगों को अपनी आम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। हमने निःसंदेह नाभिकीय शक्तियां हासिल कर ली हैं परंतु दुर्भाग्य की बात है कि आज भी करोड़ों लोग निरक्षर हैं। देश में बहुत से बच्चे कुपोषण के शिकार हैं जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि एक स्वस्थ भारत की हमारी परिकल्पना को साकार रूप देना कितना दुष्कर कार्य है।

बढ़ती हुई जनसंख्या पर अंकुश लगाना देश के चहुंमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि इस दिशा में सार्थक कदम नहीं उठाए गए तो वह दिन दूर नहीं जब स्थिति हमारे नियंत्रण से दूर हो जाएगी। सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि हम परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को और विस्तृत रूप दें। जनसंख्या वृद्धि की रोकथाम के लिए केवल प्रशासनिक स्तर पर ही नहीं अपितु सामाजिक, धार्मिक स्वं व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास आवश्यक हैं। सभी स्तरों पर इसकी रोकथाम के लिए जनमानस के प्रति जागृति अभियान छेड़ा जाना चाहिए।

भारत सरकार ने विगत वर्षों में इस दिशा में अनेक कदम उठाए हैं परंतु इन्हें सार्थक बनाने के लिए और भी अधिक कठोर कदम उठाने आवश्यक हैं। देश के स्वर्णिम भविष्य के लिए हमें कुछ ऐसे निर्णय भी लेने चाहिए जो वर्तमान में भले ही अरुचिकर लगें परंतु दूरगामी परिणाम अवश्य ही सुखद हों, जैसे हमारे पड़ोसी देश चीन की भांति एक परिवार में एक से अधिक बच्चों पर पाबंदी लगाई जा सकती है। यदि समय रहते इस दिशा में देशव्यापी जागरूकता उत्पन्न होती है तो निःसंदेह हम विश्व के अग्रणी देशों में अपना स्थान बना सकते हैं। ◈

यदि भारत को कभी उन्नत देशों की श्रेणी में गिना जाना है तो ज़रूरी है कि हम अंग्रेजी की बेड़ियों से मुक्त हों। उसे एक अतिथि-सा सम्मान दें। आम आदमी को उसी की भाषा में शिक्षा और शासन दिया जाए। इस प्रकार हमारे देश में ऐसी कितनी ही समस्याएं व चुनौतियां हैं जिनका समाधान बहुत जरूरी है। सरकार को कोई न कोई कदम अवश्य उठाना चाहिए और हम सभी लोगों को सरकार का साथ देना चाहिए।

चुनौतियां हैं, पर समाधान जरूरी

◈ mo"kh 'kekZ दसवीं
अल्पाईन पब्लिक स्कूल
चौंकीवाला, नालागढ़
सोलन, हिमाचल प्रदेश

आज हमारे देश में समस्याओं का अंबार लगा हुआ है। वर्षों की गुलामी ने हमारे दिल और दिमाग पर गहरा असर डाला है। जो हो चुका उसे हम बदल तो नहीं सकते पर क्या उससे सबक लेकर सुधार नहीं सकते? क्या वाकई हमारे देश में काबलियत की कमी हो गई है। या फिर हमें समस्याओं में रहने की आदत ही पड़ गई है या हम सुधार करना ही नहीं चाहते। हमने मान लिया है कि अब इन समस्याओं का कोई समाधान नहीं हो सकता और हमें इनकी आदत लेनी होगी? मुझे लगता है कि समाधान इतना मुश्किल नहीं, कुछ मूल समस्याओं को पहचानना है।

हमारे देश में ऐसी कितनी ही समस्याएं हैं और उनके समाधान भी है, जैसे बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, गरीबी, भारतीय भाषा समस्या आदि। हमारे देश में बेरोजगारी सबसे बड़ी समस्या मानी गई है। बेरोजगारी के अनेक कारण हैं, जैसे धन की कमी, शिक्षा की कमी, कारखानों का बंद हो जाना इत्यादि। कारखानों के अधिकाधिक बंद होते जाने से

यह समस्या कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही है। अगर समय रहते इस समस्या से निपटा नहीं गया तो यह कभी भी विस्फोटक रूप धारण कर सकती है।

भारत में दो प्रकार के बेरोज़गार पाए जाते हैं–अनपढ़ और पढ़े लिखे। अनपढ़ युवकों के बेकार होने के दो प्रमुख कारण हैं–कारखानों का बंद होना और छोटे किसानों की ज़मीन का छिन जाना। इसके कुछ छोटे–मोटे अन्य कारण भी हैं। किसानों तथा खेत–मज़दूरों में जमीन को बांटकर, उनके लिए सस्ते ऋण, खाद, पानी, बीज आदि की व्यवस्था करके, बंद कारखानों को फिर से चालू करके तथा गांव–गांव में कुटीर उद्योग लगाकर अशिक्षित बेरोज़गारों की समस्या को हल किया जा सकता है।

आवश्यकता इस बात की है कि इस समस्या को दूर करने के लिए हम सभी सरकार का सहयोग दें। जब हम यह कह सकते हैं कि देश में बेरोजगारी बढ़ रही है तो इसका अर्थ है कि नये रोजगार के अवसरों का विकास पर्याप्त मात्र में नहीं हो रहा। जब तक जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित नहीं की जा सकती तब तक कोई भी नीति बेरोजगारी को दूर करने में सफल नहीं हो सकती।

बेरोज़गारी रोकने के लिए सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए और हम सभी को सरकार का साथ देना चाहिए। समाज के तमाम नैतिक मूल्यों को छोड़कर जब लोग अपनी मनमानी करने लगते हैं तो उसे भ्रष्टाचार कहते हैं। भ्रष्टाचार समाज की गंभीरतम बुराइयों में से एक है। न तो एक–दो वर्ष में इसे समाप्त किया जा सकता है और न ही एक–दो उपायों से यह रोग जाने वाला है। अकेले सरकार के बस का भी यह रोग नहीं है। इसके लिए हम सभी लोगों को एक साथ लड़ाई लड़नी होगी।

इस लड़ाई का आरंभ सरकार से ही होना चाहिए। भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति का गलत इस्तेमाल अपनी आत्म संतुष्टि और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिए करता है। कुछ लोग अपने फायदे

के लिए दूसरों के पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं। समाज में सामान्य होता भ्रष्टाचार एक ऐसा लालच है जो इंसान के दिमाग को भ्रष्ट कर रहा है।

समाज में बराबरी के साथ ही लोगों के बीच जागरूकता लाने के लिए नियम–कानून के अनुसार भारत सरकार ने गरीबों के लिए कई सारी सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं जबकि सरकारी सुविधाएं गरीबों से दूर होती जा रही है। अपनी जेबों को भरने के लिए गरीबों का पेट काट रहे हैं व बस अपना फायदा चाहते हैं, उन्हें जनता के हितों और जरूरतों की कोई परवाह नहीं। इसलिए कदाचार से दूर रहें और सदाचार के पास तो भ्रष्टाचार अपने आप समाप्त हो जाएगा।

महंगाई आज देश की सबसे बड़ी आर्थिक समस्या है। महंगाई की वजह अनेक हैं। बाजार में तेल के दामों में भारी वृद्धि, अंतर्राष्ट्रीय मंदी और बारिश की कमी ने महंगाई को बेकाबू कर दिया है। महंगाई रोकने के लिए व्यापारियों की भंडारण सीमा को कम करना, आयात संबंधी संभावनाओं पर सार्वजनिक रूप से चर्चा करना जरूरी है ताकि लगे कि जल्द ही बाहर से खेप आने वाली है। ये ऐसे कुछ उपाय हैं जिनसे महंगाई को बढ़ने से रोका जा सकता है।

डीजल की कीमतों में भी मामूली सी कमी करके महंगाई पर अंकुश लगाया जा सकता है। आमतौर पर महंगाई की चर्चा वस्तुओं के दामों के संदर्भ में ही होती है। किंतु इधर शिक्षा और इलाज जैसी सेवाओं की महंगाई भी तेजी से बढ़ी है। तेज विकास के साथ विकासजनित अनेक चुनौतियां भी देश के सामने खड़ी हो रही हैं। महंगाई, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, काला धन ऐसी ही चुनौतियां हैं। यदि हम इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सके तो समृद्धि हमारे लिए विपत्ति बन सकती है।

लोग एक–दूसरे के तो जैसे दुश्मन ही बन गए हैं। लोग पैसे कमाने के लिए कभी–कभी आतंकवाद का भी रास्ता अपना लेते हैं। अपना पेट भरने के लिए वे किसी दूसरे की जान भी ले सकते हैं। आजकल

हमारे देश में आतंकवाद भी बहुत फैल चुका है। कुछ लोगों को काम न मिलने के कारण वह चोरी, आतंकवाद आदि का रास्ता अपनाने लगते हैं। इस प्रकार सरकार को लोगों के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने होंगे।

आजकल तो ऐसा लगता है कि हमारी मातृभाषा हिन्दी गुम होती जा रही है। भाषायी विवाद और समस्या को जन्म देकर उकसाने–उभारने का सारा श्रेय ब्रिटिश शासन और उसके शासक हैं। आजकल अंग्रेज़ी भाषा को देश भर में बहुत मान्यता दी जा रही है। हिंदी भाषा को तो जैसे भूल ही गए हैं। हिन्दी तो हमारी मातृभाषा है। अंग्रेजी एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाषा है पर यह वाइसरायों के ज़माने से चला आ रहा है। हम अंग्रेजी ऐसे पढ़ाएं जैसे किसी भी अन्य देश में एक विदेशी भाषा पढ़ाई जाती है।

यदि भारत को कभी उन्नत देशों की श्रेणी में गिना जाना है तो ज़रूरी है कि हम अंग्रेजी की बेड़ियों से मुक्त हों। उसे एक अतिथि–सा सम्मान दें। आम आदमी को उसी की भाषा में शिक्षा और शासन दिया जाए। इस प्रकार हमारे देश में ऐसी कितनी ही समस्याएं व चुनौतियां हैं जिनका समाधान बहुत जरूरी है। सरकार को कोई न कोई कदम अवश्य उठाना चाहिए और हम सभी लोगों को सरकार का साथ देना चाहिए। ◈

राजनेता ही भ्रष्टाचार की जड़

आज विद्यालय में प्रवेश पाने का मामला हो या नौकरी मिलने का, सब जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है। सरकारी कार्यालयों में तो चक्का तभी घूमता है जब उसमें घूस का पेट्रोल डाला जाता है। पुलिस के भ्रष्टाचार का तो कहना ही क्या? जब अपराधी निकल जाता है तब पुलिस हवा में डंडे चलाती हुई आती है और गरीब बेकसूरों को पकड़ कर ले जाती है।

◈ Vh- Ikuy pkiMk नौवीं
श्रीमती एन. डी. जे. ए.
विवेकानंद विद्यालय
व्यासरपाड़ी, चेन्नै, तमिलनाडु

Òारत में कई राष्ट्रीय समस्याएं हैं। उनमें से भ्रष्टाचार चर्चा और आंदोलनों का एक प्रमुख केंद्र रहा है। भ्रष्टाचार का तात्पर्य है–भ्रष्ट व्यवहार या अनैतिक व्यवहार। दुर्भाग्य से आज भारतवर्ष भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है। आजादी के एक दशक बाद से ही भारत भ्रष्टाचार की दलदल में धंसा नजर आने लगा था और उस समय संसद में इस बात पर बहस भी होती थी।

21 दिसम्बर, 1963 को भारत में भ्रष्टाचार के खात्मे पर संसद में हुई बहस में डॉ. राममनोहर लोहिया ने जो भाषण दिया था, वह आज भी प्रासंगिक है। उस वक्त डॉ. लोहिया ने कहा था ''सिंहासन और व्यापार के बीच संबंध भारत में जितना दूषित, भ्रष्ट और बेईमान हो गया है उतना दुनिया के इतिहास में कहीं नहीं हुआ है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है जिसमें ईमानदारी से कार्य होता है।''

आज विद्यालय में प्रवेश पाने का मामला हो या नौकरी मिलने का, सब जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है। सरकारी कार्यालयों में तो चक्का तभी घूमता

है जब उसमें घूस का पेट्रोल डाला जाता है। पुलिस के भ्रष्टाचार का तो कहना ही क्या? जब अपराधी निकल जाता है तब पुलिस हवा में डंडे चलाती हुई आती है और गरीब बेकसूरों को पकड़ कर ले जाती है।

इस देश का सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी है राजनेता, जिसने देश को वेश्या–बाज़ार बनाकर रख दिया है। भारत में भ्रष्टाचार इसलिए पनपता है क्योंकि यहां का नेता स्वयं भ्रष्ट है, इसलिए वह भ्रष्ट लोगों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही नहीं करता। यहां की न्याय–प्रणाली भी भ्रष्टाचार में आ गई है।

भारत का मीडिया अभी पूरी तरह सशक्त और जागरूक नहीं है। भ्रष्टाचार से देश की अर्थव्यवस्था और प्रत्येक व्यक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भ्रष्टाचार तभी दूर हो सकता है जब किसी सशक्त समूह के पास उसका पर्दाफाश करने का दृढ़–संकल्प हो। यह तभी संभव है जब भारत के शिक्षक, साहित्यकार, पत्रकार, कवि, कलाकार एकजुट होकर देश के नवयुवकों में आचरण की शुद्धता के संस्कार भरें और भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दें। ◈

युवा बदल सकते हैं राह

> प्रायः हमारे नेता एवं बुद्धिजीवी यह जिज्ञासा करते रहते हैं कि हमने क्या खोया और क्या पाया? हमारी उपलब्धि क्या रही, हम कितनी प्रगति कर सकते हैं? कुछ निराशावादी लोग उपलब्धियों को कमतर आंकते हैं तो कुछ लोग देश की प्रगति को देखकर गर्व की अनुभूति करते हैं। उपलब्धियों के साथ अनुपलब्धि का चिंतन सदैव तुलनात्मक दृष्टि से किया जाता है जिसमें आशावादी स्वर सदा प्रधान रहता है।

❖ **i|tk d|ekjh** आठवीं
श्री जवाहर जैन सीनियर सै. स्कूल
हिरणमगरी, उदयपुर, राजस्थान

Lवतंत्रता आंदोलन के परिणामस्वरूप सन् 1947 में भारत को विदेशी सत्ता से आजादी प्राप्त हुई। देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुए काफी समय हो चुका है लेकिन किन्हीं कारणों से आज भी भारत में वांछित प्रगति नहीं दिखाई दे रही है तथा कुछ बातों में तो मानसिक गुलामी स्पष्ट लक्षित हो जाती है।

प्रायः हमारे नेता एवं बुद्धिजीवी यह जिज्ञासा करते रहते हैं कि हमने क्या खोया और क्या पाया? हमारी उपलब्धि क्या रही, हम कितनी प्रगति कर सकते हैं? कुछ निराशावादी लोग उपलब्धियों को कमतर आंकते हैं तो कुछ लोग देश की प्रगति को देखकर गर्व की अनुभूति करते है। उपलब्धियों के साथ अनुपलब्धि का चिंतन सदैव तुलनात्मक दृष्टि से किया जाता है जिसमें आशावादी स्वर सदा प्रधान रहता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की प्रगति को लेकर जो आशा–विश्वास जागने लगा था, वह वैसा प्रतिफलित नहीं हुआ। इसका कारण स्वतंत्रता के बाद उभरी अनेक समस्याएं मानी जाती हैं। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी,

जनसंख्या वृद्धि और औद्योगिक विकास के साथ ही भाषावाद, प्रान्तवाद, शिक्षा व्यवस्था एवं आर्थिक विकास आदि की समस्याएं उठीं। आवास समस्याएं, परिवहन समस्या, वर्ग भेद समस्या भी साथ में उभरती रही। इन सबसे भयानक समस्या आतंकवाद, अलगाववाद एवं शत्रु राष्ट्र की छद्म युद्ध की नीति वर्तमान में प्रमुख समस्या बन गई।

आतंकवाद के बढ़ते खतरे का समाधान कठोर कानून व्यवस्था एवं नियम से ही हो सकता है। इसके लिए अवैध संगठनों पर प्रतिबंध, हवाला द्वारा धन संचय पर रोक, प्रशासनिक सुधार के साथ ही 'काउंटर टेरेरिज्म एक्ट' तथा संघीय जांच एजेंसी आदि को अति प्रभावित बनाना अपेक्षित है। अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया द्वारा जो कठोर कानून बनाया गया है तथा सेना व पुलिस को इस संबंध में जो अधिकार दे रहे हैं, उनका अनुसरण करने से भी इस चुनौती का मुकाबला किया जा सकता है।

निर्विवाद कहा जा सकता है कि आतंकवाद नृशंस एवं अमानवीय कृत्य है। आतंकवाद के कारण विश्व मानव–सभ्यता पर संकट आ रहा है। यह अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। इसके समाधानार्थ सभी राष्ट्रों में समन्वय तथा एकजुटता की आवश्यकता है। फ्रांस, ब्रिटेन, रूस एवं अमेरिका इस दिशा में कुछ ठोस उपाय कर रहे हैं जिसके परिणाम भविष्य के गर्भ में हैं।

आज भ्रष्टाचार की समस्या इतनी विकराल हो गयी है कि इसका निवारण करना अत्यंत जटिल हो गया है। भ्रष्टाचार के कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण हमारा नैतिक पतन होना है जिससे हम अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए सब कुछ किसी भी तरीके से करने के लिए तत्पर रहते हैं, बस धन मिलना चाहिए। भौतिक सुख–सुविधाओं के लिए आज का मानव लालायित है, इसलिए वह उचित–अनुचित कोई भी कार्य करने में संकोच नहीं करता है। हमारे राजनेता देशभक्ति छोड़कर भ्रष्टाचार की भक्ति में ही लग गये हैं। साथ ही बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि आदि भी लोगों को आवश्यकता पूर्ति हेतु भ्रष्टाचारी बना रही है।

भ्रष्टाचार के कारण आज हमारे देश में राष्ट्रीय चरित्र तथा सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इससे सामाजिक जीवन में नैतिकता का लोप होने लगा। स्वार्थ और प्रलोभन के चक्कर में हम अपने आदर्शों को भूलते जा रहे हैं। पद की गरिमा और दायित्व को भूलकर भ्रष्ट आचरण पर उतर रहे हैं। भ्रष्टाचार की खातिर झूठ बोलना, धोखाधड़ी और रिश्वतखोरी करना मिलावट करना, पैतरेबाजी दिखाना आदि सब कुछ अब जायज हो गया है। आज भारत में भ्रष्टाचार का अंधेरा फैला हुआ है जिससे हमारा चरित्र एकदम कलंकित हो रहा है।

भ्रष्टाचार का निवारण करने के लिए सरकार ने पृथक से भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग बना रखा है और इसे व्यापक अधिकार दे रखे हैं। समय–समय पर अनेक कानून बनाये जा रहे हैं और इसे अपराध मानकर कठोर दण्ड–व्यवस्था का भी विधान है, तथापि देश में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। इसके निराकरण के लिए सर्वप्रथम जन–जागरण की आवश्यकता है तथा भ्रष्टाचार के उपर्युक्त सभी कारणों को पूरी तरह समाप्त करना जरूरी है।

विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नित–नये आविष्कारों के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। दूसरी ओर जनसंख्या वृद्धि के कारण शहरीकरण, औद्योगीकरण के कारण पेड़ों को काटा जा रहा है। खनिज पदार्थों एवं प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। कारखानों से निकलने वाले गैसीय पदार्थों, जल–मलों, विभिन्न यंत्रों की कर्ण–कटु ध्वनियों एवं अनियंन्त्रित भू–जल उपयोग आदि के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। ऐसे में पर्यावरण का संरक्षण करना और इसमें संतुलन बनाये रखना कठिन कार्य हो गया है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए इसे प्रदूषित करने वाले कारणों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। इस दृष्टि से युवा वर्ग विशेष रूप से विद्यार्थी वृक्षारोपण करें, पर्यावरण शुद्धता के लिए जन–जागरण के काम करें। विषैले अपशिष्ट छोड़ने वाले उद्योगों का और प्लास्टिक कचरे का विरोध करें। वे जल स्त्रोतों की शुद्धता का अभियान चलाएं। पर्यावरण संरक्षण के लिए हरियाली का विस्तार, नदियों आदि की स्वच्छता, गैसीय

पदार्थों का उचित विसर्जन, रेडियोंधर्मिता बढ़ाने वाले संसाधनों पर रोक, गंदे जल–मल का परिशोधन, कारखानों के अपशिष्टों का उचित निस्तारण, जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण और जन जागरण आदि अनेक उपाय किये जा सकते हैं। ऐसे कारगर उपायों से ही पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखा जा सकता है।

विकासशील भारत में जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ़ी उसके अनुरूप रोजगार के साधनों में वृद्धि नहीं हुई। परिणामस्वरूप शिक्षित और अशिक्षित बेरोजगारी में वृद्धि हुई जिसके कारण नयी पीढ़ी में असंतोष, अशांति और अराजकता का भयंकर प्रयास हुआ और बेरोजगारी एक ज्वलंत समस्या बन कर उभरी है।

बेरोजगारी का निराकरण तभी हो सकता है जब जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगायी जाए। लघु–कुटीर उद्योगों एवं कृषिप्रधान हस्तकलाओं को प्रोत्साहन दिया जाए। शिक्षा को स्वरोजगारोन्मुखी और व्यावसायिक क्षमता प्रदान की जाए। आरक्षण व्यवस्था को समाप्त कर योग्यता को प्राथमिकता दी जाए। शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार स्वार्थपरता आदि पर अंकुश लगाया जाए और पंचवर्षीय योजनाएं ऐसी बनाई जाएं जिनसे रोजगार के साधनों में वृद्धि हो सके। ◈

साफ-सफाई पर हो विशेष ध्यान

हमारे श्रेष्ठ व समझदार पूर्वजों के अनुसार स्वच्छता से ही स्वास्थ्य का निर्माण होता है। परंतु भारत में खुले में शौच के कारण मानव मल से जल प्रदूषण एक साधारण बात हो गई है जबकि यह ध्यान देने वाला मुद्दा है कि मानव जीवन प्रभावित करने वाली 80 फीसदी बीमारियां जलजनित हैं जिसका प्रमुख कारण जल प्रदूषण है। इसलिए मात्र जल ही नहीं अपितु संपूर्ण वातावरण में सफाई बनाए रखना ज़रूरी है।

◈ lk{kh 'kekZ दसवीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, फेज–4, दिल्ली

भारत एक महानतम प्राचीन संस्कृति का देश है। महामना मदनमोहन मालवीय ने कहा था– ''भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण है, क्योंकि भारतीय संस्कृति की धारा निरंतर बहती रही है और बहेगी।'' परंतु समय के चक्र के घूमने के साथ भारत में तरक्की पर मानो 'ब्रेक' लग गया हो। आज भारत के समक्ष ऐसी बहुत–सी कठिनाइयां खड़ी हैं जो उसकी उन्नति में विशाल चट्टान रूपी बाधा बनकर अड़ गई हैं। इनका यथाशीघ्र निवारण आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है। इनमें से कुछ मुख्य समस्याएं हैं–अस्वच्छता, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार, बढ़ती जनसंख्या और गरीबी।

हमारे श्रेष्ठ व समझदार पूर्वजों के अनुसार स्वच्छता से ही स्वास्थ्य का निर्माण होता है परंतु भारत में खुले में शौच के कारण मानव मल से जल प्रदूषण एक साधारण बात हो गई है जबकि यह ध्यान देने वाला मुद्दा है कि मानव जीवन प्रभावित करने वाली 80 फीसदी बीमारियां जलजनित हैं जिसका प्रमुख कारण जल प्रदूषण है। इसलिए

मात्र जल ही नहीं अपितु संपूर्ण वातावरण में सफाई बनाए रखना ज़रूरी है।

यहां–वहां विभिन्न प्रकार की गंदगी वाले लोग और जो कहीं भी पान या गुटका थूक देते हैं, ऐसे लोगों को अपने अमानवीय व्यवहार के लिए शर्मिंदा होना चाहिए। इससे मात्र अन्य नागरिकों को ही नहीं बल्कि पर्यटकों को भी गलत संदेश मिलता है।

राष्ट्र के सम्मुख बेरोज़गारी एक बड़ी समस्या बनकर उपस्थित है। भारतीय युवा अपने सामर्थ्य से काम करने को मजबूर हैं। मात्र चंद पैसों के वेतन की चाह में वे जोखिम भरे कार्यों में शामिल हो जाते हैं। यह गौर फरमाने की बात है कि भारत में कम रोजगार के कारण रोज़गार की प्राप्ति दुर्लभ है क्योंकि एक नौकरी के लिए अत्याधिक दावेदार होते हैं। इसका प्रमुख कारण शिक्षा प्रणाली और बढ़ती जनसंख्या है। किसी भी देश की शिक्षा उसके मानसिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक विकास व समृद्धि का आधार होती है परंतु इसकी आधारशिला कमजोर होने के कारण नवयुवकों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की कमी है।

भ्रष्टाचार कई वर्षों से भारतीय लोकतंत्र को खोखला करने का कार्य कर रहा है। भ्रष्टाचार के अनेक रूप हैं–चोर बाजारी, रिश्वतखोरी, दलबदल, जोर–जबरदस्ती आदि धर्म की आड़ में लोग अधर्म को बढ़ावा देकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं।

महिलाओं के साथ बढ़ते अपराध देश की वृद्धि कभी नहीं होने देंगे। यह भारत देश ही है जहां एक ओर दुर्गा मां, लक्ष्मी मां, सरस्वती मां आदि देवियों की श्रद्धा और आस्था के साथ आराधना की जाती है। दूसरी ओर नारी के साथ कुकर्म किए जाते हैं। संपूर्ण जग को परिवर्तित करने की शक्ति रखने वाली नारी को दहेज प्रथा, सती प्रथा, घरेलू अत्याचार, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, मानहानि, भेदभाव जैसे अमानवीय और लज्जास्पद व्यवहार का सामना करना पड़ता है। उनके साथ हुए दुर्व्यवहार की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी जाती है। जिन लोगों के लिए वह अपना सारा जीवन व्यतीत कर देता है, वे उसकी कद्र ही नहीं

करते हैं। निर्भया कांड और बुलंदशहर जैसे दिल दहला देने वाले कुकर्म भारत को शर्मिंदा करते हैं।

बढ़ती जनसंख्या अन्य सभी समस्याओं का मूल है। अधिक मांग और कम साधन अवश्य ही साधारण जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति को मुश्किल कर देते हैं। हाल ही के आंकड़ों के अनुसार आगामी दो वर्षों में भारत आबादी के लिहाज से दुनिया में दूसरे स्थान से उछलकर पहले स्थान पर पहुंच जाएगा। अत्याधिक जनसंख्या रहन–सहन, वातावरण, स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालती है। विशाल जनसंख्या से गरीबी, अनपढ़ता और भुखमरी फैलती है।

lek/kku

- स्वच्छता को प्राप्त करने के लिए राज्य व केंद्र सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए मर्यादा अभियान संचालित किया गया है जो राष्ट्रीय स्तर के जल, स्वच्छता व सफाई कार्यक्रम जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल अभियान और निर्मल भारत अभियान का सहायक है। 'स्वच्छ भारत अभियान' भी स्वच्छता की ओर एक साहसिक कदम है।

- बेरोज़गारी जैसी राष्ट्रीय समस्याओं को दूर करने के लिए सभी स्तरों से प्रयास होने चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि देश में ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू हो जिससे युवकों को स्वरोज़गार हेतु प्रोत्साहन मिले। इसके लिए उन्हें आवश्यक तकनीकी एवं औद्योगिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। लघु उद्योग को अधिक प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा नई योजनाएं प्रस्तुत की जानी चाहिए। हड़ताल, तालाबंदी तथा स्वार्थपूर्ण राजनीतिक गतिविधियों पर अंकुश लगाना चाहिए।

- वास्तव में देश से यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो न सिर्फ स्वच्छ छवि वाले नेताओं का चयन करना होगा बल्कि लोकतंत्र में नागरिकों को भी सामने आना होगा। उन्हें प्राणप्रण कर यह प्रयत्न करना होगा

कि उन्हें भ्रष्ट लोगों को समाज से न सिर्फ बहिष्कृत करना है बल्कि उच्च स्तर पर भी भ्रष्टाचार में संलिप्त लोगों का 'बायकॉट' करना है। सभी नागरिकों को यह प्रण लेना होगा कि वह न ही भ्रष्टाचार करेंगे और न हीं करने देंगे।

- महिलाओं के साथ बढ़ते कुकर्मों पर अंकुश लगाने के लिए सरकार को कड़े नियमों को लागू करना होगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति ऐसे पाप करने की भी न सोचे। साथ ही लोगों को अपनी छोटी मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा। बेटियों को भी उतना ही प्रोत्साहित करना होगा जितना बेटों को किया जाता है।
- यदि सर्वश्रेष्ठ जनसंख्या होने के बावजूद सभी तक समान रूप से सभी मूलभूत सुविधाएं पहुंच रही हैं तब बढ़ती जनसंख्या अति चिंता का विषय नहीं है। इसका उदाहरण जनसंख्या के मामले में संसार में पहला स्थान ले चुका विकसित चीन है परंतु फिर भी जनसंख्या पर नियंत्रण आवश्यक है। ◈

अशिक्षा को किया जाए दूर

हमारे राष्ट्र में अभी भी अशिक्षित लोगों की लम्बी फौज है। अशिक्षा के कारण ही वे अच्छाई-बुराई, कायदे-कानून की जानकारी और अच्छी जीवन शैली से वंचित हैं। अशिक्षा के कारण वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति की महत्ता से अनभिज्ञ हैं। ऐसे में समाज सुधारकों को चाहिए कि वे अपने ओजस्वी भाषणों और लेखों द्वारा समाज का उद्धार करने का बीड़ा उठाएं।

◈ **vfÙunu dekj** दसवीं
प्रशांथी विद्या केंद्र
सहकारी नगर बयार
कासरागढ़, केरल

gमारे देश की जनसंख्या 125 करोड़ से ऊपर हो गई है। हमारा देश समस्याओं का देश बन गया है। हमारे देश में कई बड़ी समस्याएं हैं जिनको दूर करने के लिए हमारे यहां कई तरह के कानून बनाए गए हैं लेकिन हमारे समाज में फैले अत्याचार और भ्रष्टाचार से सभी समस्याएं वहीं की वहीं रह गई हैं। इन जटिल समस्याओं से ही हमारे देश के विकास में अवरोध उत्पन्न हो रहा है।

हमारे देश में ऐसी अनेक समस्याएं हैं जिनकी ओर हमें पूरी तरह से ध्यान देना चाहिए तथा उन्हें सुलझाने का समाधान भी खोजना चाहिए तभी हमारे राष्ट्र का विकास होगा। अगर हमने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो ये समस्याएं हमारे देश को अंदर ही अंदर खोखला कर देंगी।

çe[k leL;k,¡ o mudk lek/kku

Òk"kk;h leL;k % यह समस्या स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हम लोगों की दो भूलों के कारण उत्पन्न हुई है। पहली, जो हमने राज्य के अनुसार

भाषा का विभाजन कर दिया था जिसके फलस्वरूप राष्ट्र की अखण्डता और भावात्मक एकता को गहरी चोट लगी। दूसरी भूल यह कि स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत पश्चात् हिंदी को समस्त राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के महान उद्देश्य को सभी राज्यों के बच्चों की शिक्षा के लिए एक अनिवार्य विषय नहीं बनाया गया था।

पहले भारत की सभी स्तरों की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा का माध्यम सभी स्तरों में राजभाषा या मातृभाषा होने लगी। क्योंकि मातृभाषा के माध्यम से ही शिक्षा प्रदान करने से बच्चे सरलता से कम से कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

गांधी जी ने कहा था कि ''अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा में कम से कम सोलह वर्ष लगते हैं। यदि इन्हीं विषयों की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए तो केवल दस वर्ष लगेंगे। विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने से बच्चों पर दिमाग का बोझ बढ़ जाता है और यह बोझ बच्चे तो उठा सकते हैं लेकिन बच्चों को इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। माँ के दूध के साथ जो बच्चों को संस्कार और मीठे शब्द मिलते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए वह विदेशी शिक्षा के माध्यम से टूट जाता है।'' इस समस्या को सुलझाने के लिए हमें राष्ट्रभाषा की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

Òfe lj{k.k dh leL;k % इस समस्या का मुख्य कारण हम लोग ही हैं क्योंकि हम खुद ही देश के वनों का नाश कर बैठे हैं तथा अभी तक किए जाएं रहे हैं। हमें इन वनों की ओर देखना चाहिए कि ये वन व पेड़–पौधे हमारे कितने कामों में उपयोगी होते हैं। हमें यह सोचना चाहिए के अगर ये पेड़–पौधे नहीं रहे तो हमारे इस राष्ट्र का क्या होगा तथा यही कारण हमारी मौत का एक मार्ग बन जाएगा और हम जीते–जी अपने प्राणों की रक्षा नहीं कर पाएंगे। इस लिए हमें एक साथ मिलकर वनों को नाश होने से बचाना चाहिए तथा हमारे आसपास वृक्ष तथा पेड़–पौधे लगाने चाहिए।

cjkt xkjh dh leL;k % यह समस्या भारत की सबसे बड़ी समस्या है। भारत में लगभग 1.23 करोड़ पढ़े–लिखे बेरोजगार हैं। गांवों में बेरोजगारी के मुख्य कारण हैं वर्ष में केवल दो फसलों का होना और शहरों में बेरोजगारी के दो कारण हैं–योजना का अभाव, शिक्षितों की औद्योगिक कार्यों में लगने की अनिच्छा। तीसरा कारण यह भी है कि लोग आजकल ज्यादा काम विज्ञान के आविष्कार के सहारे ले रहे हैं जिससे कि मजदूरों की जरूरत नहीं होती है, यह बेरोजगारों की संख्या बढ़ाती है। इस समस्या से उभर आने का एक ही उपाय है कि सरकार को इन बेरोजगारों की मदद करनी चाहिए तथा इन सबको अच्छा रोजगार दिलाना चाहिए।

egxkÃ dh leL;k % यह समस्या भी हमारे देश की एक गंभीर समस्या है। हमारे देश में एक ओर जहां पूंजीपति दोनों हाथों से धन बटोर कर जीवन के सभी सुख भोग रहे हैं वहीं दूसरी ओर करोड़ों भूखे–नंगे साधन विहीन मनुष्य हैं जिनके पास न खाने को अन्न है और न ढकने के लिए वस्त्र।

यह समस्या हमारे किसान और नेताओं से उत्पन्न हुई है। महंगाई पर कई प्रकार से अंकुश लगाया जाता है। सरकार को उत्पादन की योजना सही लाभ ओर समुचित वितरण को ध्यान में रखकर बनानी चाहिए। इस समस्या को रोकने के लिए हमें संग्रह करने और मुनाफाखोरों की प्रवृत्ति रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए तभी हमारे राष्ट्र में सुख और शांति बनी रहेगी।

बीसवीं सदी का भारतीय समाज असाध्य रोगों से ग्रस्त, कुप्रथाओं से पीड़ित, अंधविश्वासों से दलित और प्राचीन परंपराओं से प्रताड़ित है। आज के वैज्ञानिक युग में भी भारतीय अपनी हठधार्मिता और कुप्रथाओं को नहीं छोड़ पाए हैं, इन्हीं के कारण हमारे राष्ट्र में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

हमारे राष्ट्र में अभी भी अशिक्षित लोगों की लम्बी फौज है। अशिक्षा के कारण ही वे अच्छाई–बुराई, कायदे कानून की जानकारी और अच्छी

जीवन शैली से वंचित हैं। अशिक्षा के कारण वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति की महत्ता से अनभिज्ञ हैं। ऐसे में समाज सुधारकों को चाहिए कि वे अपने ओजस्वी भाषणों और लेखों द्वारा समाज का उद्धार करने का बीड़ा उठाएं।

भारत की इन समस्याओं को दूर करने के लिए प्रत्येक नागरिक को जागरूक होना चाहिए तथा सरकार को भी इन सब समस्याओं के लिए कड़े कानून बनाने चाहिए जिससे देश में फिर से हंसी–खुशी का वातावरण बने। तभी हमारे देश का हर नागरिक एक महान देश की तरह अपने सिर को ऊंचा कर सकेगा। ◈

बढ़ती कीमतों से गरीब का जीना दूभर

कभी 'विश्वगुरु' कहलाने वाला यह देश, एक शिक्षक के रूप में विश्व को शिक्षित करने वाला देश, दूसरों की समस्याओं को सुलझाने वाला भारत देश आज स्वयं समस्याग्रस्त है। जो कभी सोने की चिड़िया कहलाता था, अपनी समृद्धि व संपदा से दूसरों को आकर्षित करने वाले इस देश के सामने आज निर्धनता एक सामाजिक अभिशाप बनकर मुंह बाए खड़ी है।

◈ lk{kh 'kkD;k नौवीं
संत निरंकारी पब्लिक स्कूल
निरंकारी कालोनी, दिल्ली

jाष्ट्र के निर्माण में आज बहुत चुनौतियां आइ गई हैं। इनमें से कुछ हैं–बेरोजगारी, महंगाई, निर्धनता, अशिक्षा, प्रदूषण की समस्या, नारियों की समस्या आदि। बेरोजगारी अथवा 'बेकारी' का अर्थ है कि काम करने का अभाव । आज यह समस्या सुरसा की तरह मुंह फैलाए खड़ी है। स्वतंत्रता के बाद भी भारत उतनी प्रगति नहीं कर सका है जितनी होनी चाहिए।

सरकार ने पंचवर्षीय योजनाएं बनाकर देश की उन्नति के लिए उपाए किए पर आज की सर्वाधिक विकट समस्या है बेकारी। आज देश में शिक्षित और अशिक्षित दोनों वर्ग काम पाने के लिए कतार में खड़े हैं। पद एक उम्मीदवार सौ, जिसे देखकर ''एक अनार सौ बीमार'' वाली उक्ति स्मरण हो आती है। लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली भी बेरोजगारी का एक कारण है। इसके अलावा बढ़ती जनसंख्या भी बेरोजगारी का कारण बनी हुई है। इस समस्या का समाधान लघु उद्योगों, कुटीर उद्योग–धन्धों व हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देने से हो सकता है। इससे पदों की संख्या में वृद्धि होगी।

भारत के सामने आज अनेक समस्याओं का जाल–सा बिछ गया है। कहीं निर्धनता तो कहीं बेरोजगारी, कहीं अशिक्षा तो कही महंगाई। आज मानव को दैनिक उपयोग की वस्तुओं को जुटाने में अथक परिश्रम करना पड़ रहा है। पेट्रोल, डीजल, तेल, घी यहां तक कि दाल, नमक आदि भी जुटाना कठिन हो गया है। उत्तरोत्तर बढ़ती मूल्यवृद्धि से जीवन निर्वाह भी दूभर हो गया है।

महंगाई वृद्धि में कालाधन, तस्कर और जमाखोरी का बहुत बड़ा हाथ है। विदेशी कर्ज और उसके सेवा शुल्क ने भारत की आर्थिक नीति को धराशायी कर दिया है। महंगाई को रोकने के तीन प्रमुख उपायों पर ध्यान देना होगा– कर चोरी को रोकने का प्रयास, सरकारी खर्चों में कमी, राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबंध में कुशलता। किसानों की समस्या पर ध्यान देना होगा तभी महंगाई को बढ़ने से रोका जा सकेगा।

कभी 'विश्वगुरु' कहलाने वाला यह देश, एक शिक्षक के रूप में विश्व को शिक्षित करने वाला देश, दूसरों की समस्याओं को सुलझाने वाला भारत देश आज स्वयं समस्याग्रस्त है। जो कभी सोने की चिड़िया कहलाता था, अपनी समृद्धि व संपदा से दूसरों को आकर्षित करने वाले इस देश के सामने आज निर्धनता एक सामाजिक अभिशाप बनकर मुंह बाए खड़ी है। सरकार की ओर से नित–नई योजनाओं के बनाए जाने पर भी बेरोजगारी, महंगाई व निर्धनता दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

आज विदेशी नागरिक भारत को व भारतीयों को निर्धन क्यों समझते हैं? वस्तुतः भारत को एक महान देश बनने से पहले इस सामाजिक बुराई पर विजय प्राप्त करनी ही होगी। बेरोजगारी, महंगाई, निर्धनता तीनों एक–दूसरे से संबद्ध हैं।

सृष्टि के निर्माण के साथ ही मानव अपने विकास की संभावनाएं खोजता रहा है। दिन पर दिन उसने उन्नति ही की है जिसके कारण वह आत्मिक व मानसिक शांति पाता है और शिक्षा तो वह अमोध अस्त्र है जिसे पाकर वह स्वयं चमत्कृत हो गया है। शिक्षा के बिना मानव पशुतुल्य है।

विज्ञान मानव की बुद्धि की उपज है। जहां विज्ञान ने मानव को ढेर सारी सुख–सुविधाएं दीं, वहीं ढेरों समस्याएं भी पैदा कर दीं। ऊंची–ऊंची अट्टालिकाएं, सड़कों पर भागते वाहन तथा आकाश में उड़ते वायुयान व जल को चीरते जलयान जहां सबको चकित किए हुए हैं वहीं आज हमारा पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। इस पर्यावरण–प्रदूषण का कारण है वैज्ञानिक प्रगति।

प्रदूषण का अर्थ है–वातावरण का दूषित होना। पर्यावरण–प्रदूषण का अर्थ है वातावरण से प्रकृति के संतुलन में गड़बड़ी होना। पर्यावरण में कई तत्व हैं जो एक अनुपात में विद्यमान रहते हैं। मानव–वृद्धि व जीवन को सुचारू रखने, संतुलित करने का काम पर्यावरण करता है लेकिन एक तत्व असंतुलित हो जाए तो पर्यावरण में प्रदूषण फैल जाता है।

गृहिणी से ही घर घर है, अन्यथा नहीं। किसी विद्वान का यह कथन एकदम सही है। दया, माया, ममता, करुणा और प्रेम की मूर्ति, विधाता की अद्‌भुत रचना है। नारी, जो अद्‌भुत गुणों का भंडार रही है, अपनी बुद्धि, शक्ति, त्याग तथा सहनशक्ति के बल पर वह गृहस्थी की नौका को विपत्ति के थपेड़ों से बचाकर किनारे पर पहुंचाकर सुख–समृद्ध बना देती है। अतः नारी को सुशिक्षित बनाने के साथ–साथ उसे समान अवसर प्रदान कर राष्ट्र की मुख्यधारा में लाने के हरसंभव प्रयास करने चाहिए। ◈

गांवों की तरफ कोई ध्यान नहीं

◈ mTtoy flg दसवीं
भारतीय विद्या भवन्स
विद्याश्रम, भीमवरम, आंध्रप्रदेश

हमारे देश के अंतर्गत ग्रामीण समस्याओं की भरमार है। ग्रामीण समस्याओं के अंतर्गत अशिक्षा, अंध-विश्वास, रूढिवादिता, दहेज, सती-प्रथा तथा विधवा समस्या आदि विकराल रूप में हैं जो हमारे राष्ट्र की कमर ही तोड़ रही है। सरकार इनके समाधान में पूर्ण रूप से विफल रही है।

gमारे देश का स्वरूप जितना विभिन्न है वहीं विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। हमारे देश की दशा पूर्णरूप से भिन्न है। इसकी विभिन्नताओं में एकता कहीं अवश्य छिपी हुई है लेकिन वह एकता भी किसी न किसी प्रकार की समस्या से जकड़ी हुई है।

अतएव हमारा देश समस्या प्रधान देश है, ऐसा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यों तो हमारे देश की समस्याएं अनेकानेक हैं लेकिन इनमें से कुछ प्रमुख हैं और कुछ सामान्य। हम इन दोनों ही प्रकार की समस्याओं के विषय में यहां विचार कर रहे हैं।

Òk"kk dh leL;k % भाषा की समस्या हमारे देश की भयंकर समस्या है। हमारे देश के अंतर्गत बोली जाने वाली विभिन्न प्रकार की भाषाएं हैं। हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, राजस्थानी, हरियाणवी आदि। भाषाओं को कहां के विभिन्न प्रांतों और क्षेत्रों के लोग बोलते हैं और समझते हैं इस प्रकार से हमारा देश बहुभाषी देश है। बहुभाषी देश होने के कारण हम आज तक किसी एक भाषा को स्पष्ट भाषा के रूप में मान्यता नहीं दे

सकेत हैं। अगर हम किसी एक भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता देने का कदम उठाते हैं तो इससे दूसरे भाषा–भाषी अपनी भाषा का अपमान मानकर क्षुब्ध हो उठते हैं। इससे कभी–कभी भयंकर घटनाएं घटित हो जाती हैं। इस प्रकार भाषा भेद की समस्या हमारे राष्ट्र की एक प्रमुख समस्या बनी हुई है।

cjkstxkjh dh leL;k % हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या अत्यन्त कष्टदायक और विपत्तिजनक समस्या है जिसका निराकरण हमारे लिए एक चुनौती के रूप में सामने उभर कर आया है। हमारे देश में बेरोजगारी के कई प्रकार हैं जिनमें मुख्य रूप से अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित और शिक्षित बेरोजगारी है। बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने में हमारी वर्तमान सरकार विफल रही है क्योंकि अभी तक हमारी शिक्षा पद्धति रोजगार प्रेरेक नहीं हो पाई है। दूसरी बात यह कि हमने बेतहाशा बढ़ती हुई जनसंख्या पर कोई रोक लगाने में सफलता प्राप्त नहीं की है। इस प्रकार से बेरोजगारी दिनों–दिनों बढ़ती जा रही है।

xkeh.k leL;k,a % हमारे देश के अंतर्गत ग्रामीण समस्याओं की भरमार है। ग्रामीण समस्याओं के अंतर्गत अशिक्षा, अंध–विश्वास, रूढ़िवादिता, दहेज, सती–प्रथा तथा विधवा समस्या आदि विकराल रूप में है जो हमारे राष्ट्र की कमर ही तोड़ रही है। सरकार इनके समाधान में पूर्ण रूप से विफल रही है। आज हमारा देश उपर्युक्त समस्याओं में बुरी तरह उलझा हुआ है। इन समस्याओं का निराकरण करके ही देशोत्थान संभव है। ◈

कोशिशें बहुत, पर आतंक नहीं मिट रहा

◈ **dfu"dk t|u** छठी
महाराजा अग्रसेन मॉडल स्कूल
सीडी ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली

आज के समय में देश-विदेश की सबसे बड़ी समस्या के बारे में अगर पूछा जाए तो बच्चा-बच्चा भी यही बोलेगा आतंकवाद। आतंकवाद ने हमारे देश-समाज को इस तरह जकड़ रखा है कि लाख कोशिशों के बाद भी यह जड़ से अलग नहीं हो रहा है। जितना हम इसे दबाते हैं, उतना ही यह विकराल रूप लेकर सामने आ जाता है।

Òष्टाचार एक ज़हर है जो देश, सम्प्रदाय और समाज के गलत लोगों के दिमाग में फैला होता है। इसमें केवल छोटी सी इच्छा और अनुचित लाभ के लिये सामान्य जन के संसाधनों की बरबादी की जाती है। इसका संबंध किसी के द्वारा अपनी ताकत और पद का गैर जरूरी और गलत इस्तेमाल करना है, फिर चाहे वो सरकारी या गैर—सरकारी संस्था हो। इसका प्रभाव व्यक्ति के विकास के साथ ही राष्ट्र पर पड़ रहा है। साथ ही यह राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से राष्ट्र की प्रगति और विकास में बाधक भी है।

भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति और सत्ता का गलत इस्तेमाल अपनी आत्म संतुष्टि और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिये करता है। इसमें सरकारी नियम—कानूनों की धज्जियां उड़ाकर फायदा पाने की कोशिश होती है। भ्रष्टाचार की जड़ें समाज के हर हिस्से में फैली पड़ी है।

कालाधन, जमाखोरी, राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, गरीबी, जनसंख्या,

अल्पविकास, राष्ट्रीकृत उद्योगों में घाटा, सरकारी कुव्यवस्था, रुपये का अवमूल्यन, मुद्रास्फीति इत्यादि ऐसे कारक हैं जो निरंतर महंगाई को बढ़ाये जा रहे हैं। महंगाई आज राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। महंगाई के कारण असंतोष बढ़ रहा है। महंगाई से हर वर्ग के लोग त्रस्त हैं। बढ़ती महंगाई से अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में प्रत्येक वस्तु के मूल्य एवं किराये बढ़ रहे हैं।

कीमतों में निरंतर वृद्धि होने के कारण मध्यम वर्ग के व्यक्ति का जीवन काफी प्रभावित हुआ है। सामान्य जीवन में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के मूल्य दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। महंगाई के कारण निम्न तबके के लोगों को काफी परेशानियां झेलनी पड़ रही है। हर व्यक्ति को अच्छा जीवन जीने का हक है परंतु महंगाई ने इसे एक स्वप्न बना दिया है। महंगाई हमारे जीवन के हर कण में बस गई है।

वर्तमान युग में सामाजिक अवलोकन एवं उसका मूल्यांकन प्रायः आर्थिक आधार पर किया जाने लगा है। आज मनुष्य आत्मसुख तभी प्राप्त कर सकता है जब वह आर्थिक रूप से स्वयं को असमर्थ महसूस करता है। आर्थिक विपन्नता की स्थिति में दया, धर्म और परोपकार जैसे गुण उसे बेकार लगने लगते हैं।

हर तरफ जुलूस के नारों में 'शिक्षा को रोजगार से जोड़ो', 'बेरोजगारी भत्ता दो' 'हर पेट को रोटी, हर हाथ को काम दो' आदि गूंजते ये स्वर हमें बेरोजगारी की समस्या पर पुनर्विचार को विवश करते हैं। देश में बेकारी की समस्या के मूल कारणों पर यदि हम दृष्टि डालें तो हम देखते हैं कि आर्थिक संपन्नता के लिए व्यवसाय एवं उद्योग के अतिरिक्त प्रायः लोग अन्य आर्थिक स्त्रोत के रूप में नौकरी को विशेष महत्व देते हैं। नौकरी की समस्या राष्ट्रीय स्तर की समस्या बन चुकी है।

भारत देश बहुत ही विशाल जनसंख्या वाला देश है। जनसंख्या की विशालता को देखते हुए, यदि एक अनुमान लगाया जाए तो पता चलेगा कि यहां आज भी देश में गरीबी, अनपढ़ता, भुखमरी फैली हुई है जिसके चलते प्रदूषण की समस्या भी बढ़ रही है। भारत में बढ़ते

प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण अशिक्षित या अनपढ़ता है जिसके चलते बीमारियां या ऐसे रोग फैले हैं जो कि लाइलाज या मृत्यु का कारण तक बने हैं। प्रदूषण केवल वाहनों से निकलने वाले धुएं का ही नहीं होता, प्रदूषण कई प्रकार का होता है।

आज के समय में देश–विदेश की सबसे बड़ी समस्या के बारे में अगर पूछा जाए तो बच्चा–बच्चा भी यही बोलेगा आतंकवाद। आतंकवाद ने हमारे देश–समाज को इस तरह जकड़ रखा है कि लाख कोशिशों के बाद भी यह जड़ से अलग नहीं हो रहा है। जितना हम इसे दबाते हैं, उतना ही यह विकराल रूप लेकर सामने आ जाता है।

आतंकवाद को कैसे परिभाषित करें यही समझ नहीं आता क्योंकि हर कोई इसे अपने ढंग से समझता है। भारत में स्वतंत्रता की लड़ाई के समय अंग्रेज स्वतंत्रता सेनानियों को आतंकवादी समझते थे जबकि वे तो अपने हक के लिए लड़ रहे हैं। कई बार हक की लड़ाई लड़ने वाला उग्र हो जाता है। हर हिंसा करने वाला आतंकवादी नहीं, लेकिन हर अहिंसावादी आतंकवादी न हो, ऐसा जरूरी नहीं होता। ◈

जातिवाद की समस्या के बारे में हम कह सकते हैं कि यह राष्ट्र की एक गंभीर समस्या है। जातिवाद की समस्या सबसे ज्यादा हमारे देश में देखने को मिलती है। यहां प्रत्येक धर्म, संप्रदाय, जाति-वर्ण आदि के व्यक्ति को अपनी मान्यताओं के अनुरूप धर्म अथवा संप्रदाय अपनाने का संवैधानिक अधिकार है। आज देश में सभी एक-दूसरे के धर्म, संप्रदाय को बुरा-भला कहते हुए अपने से विपरीत धर्मावलंबी का गला काटने के लिए तैयार हैं।

जातिवाद का जहर, देश पर कहर

◈ fjfrdk बारहवीं
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
भिवानी, हरियाणा

jाष्ट्रीय समस्याओं से अभिप्रायः उन समस्याओं से हैं जिनका सामना किसी भी राष्ट्र को अपने यहां सुख–समृद्धि और शांति की व्यवस्था बनाए रखने के मामले में करना पड़ता है। यह व्यवस्था कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों के मौलिक अधिकारों और विधिसम्मत दूसरे अधिकारों की रक्षा के लिए करता है। कहा जा सकता है कि कोई भी नागरिक अपने राष्ट्र की एक महत्वपूर्ण ईकाई है और वह मनुष्य होने के नाते एक सामाजिक प्राणी भी है।

इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि समाज की ईकाई के रूप में मनुष्य के जन्म के साथ जो भी समस्याएं जन्म लेती हैं वे सभी सामाजिक समस्याएं होने के साथ–साथ राष्ट्रीय समस्याएं भी होती हैं। इन राष्ट्रीय समस्याओं को हम उनके समाधान सहित निम्नलिखित रूप में विवेचित कर सकते हैं।

c<rh tuh[;k % बढ़ती जनसंख्या राष्ट्र की एक भयानक समस्या है। राष्ट्र की जनसंख्या ही उसकी शक्ति का आधार होती है। जब यह

अनियंत्रित गति से बढ़ेगी तो निश्चित ही राष्ट्र के लिए बोझ होगी। सीमा से अधिक आबादी के कारण इसका गहरा प्रभाव राष्ट्र के आर्थिक पक्ष पर पड़ता है। हर देश की जनसंख्या का उस देश के आर्थिक विकास से गहरा संबंध होता है। राष्ट्र के आर्थिक विकास में इन देशों की अकुशल, अशिक्षित और रूढ़िवादी जनसंख्या बहुत बड़ी बाधा है।

दूसरी ओर खाद्यान्न की जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि नहीं हो रही है। इससे जनसंख्या की समस्या एक विकराल रूप धारण करती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि के कारण बेकारी भी बढ़ती है क्योंकि सबको समुचित रोजगार के अवसर प्राप्त नहीं होते।

राष्ट्र में बढ़ती हुई जनसंख्या के समाधान के लिए अनिवार्य है कि जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी लाई जाए। इसके लिए सर्वप्रथम जन्म दर में कमी लानी होगी। लोगों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर उनका जीवन स्तर ऊंचा उठाया जाए तो जन्म दर में कमी आ सकती है। जनसंख्या की समस्या को सुलझाने के लिए जरूरी है राष्ट्र में लाखों एकड़ खाली जमीन को कृषि योग्य बनाकर राष्ट्र को आत्म निर्भर बनाया जाए।

राष्ट्र के सामने बेकारी की समस्या अधिक गंभीर तथा भयानक है। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को बेकारी दीमक की तरह खा रही है। वैसे तो बेकारी एक विश्वव्यापी समस्या है। विश्व का एक भी ऐसा देश नहीं है जहां यह समस्या न पहुंची हो। इसने पूरे राष्ट्र को अपनी लपेट में ले रखा है। फिर भी भारत जैसे विकासशील देशों में इसकी भयावहता कुछ अधिक ही है। बेकारी की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है। यह राष्ट्र की सच्चाई, उसकी ईमानदारी, दया और सहानुभूति का गला घोटती है। अतः केंद्र तथा राज्य सरकारों का यह कर्तव्य है कि बेकारी की समस्या को दूर करने का सफल प्रयत्न करें जिससे राष्ट्र इस समस्या से बच सके।

egxkÃ dh leL;k % आज विश्व के देशों के सामने दो समस्याएं प्रमुख हैं मुद्रा स्फीति तथा महंगाई। जनता अपनी सरकार से मांग

करती है कि उसे कम दामों पर दैनिक उपभोग की वस्तुएं उपलब्ध करवाई जाएं, विशेषकर लोग आय में वृद्धि की मांग करते हैं। राष्ट्र के पास धन तो होता नहीं है। मुद्रा का फैलाव बढ़ता है। इसके कारण महंगाई बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। केंद्र सरकार ने आवश्यक वस्तुओं को कम करने के आवश्वासन दिए किंतु कीमतें बढ़ती चली गयीं। महंगाई का सबसे बड़ा कारण होता है उपज में कमी, सूखा पड़ने, बाढ़ आने के कारण वस्तुओं के दाम बढ़ने स्वाभाविक ही हैं।

केंद्र सरकार ने महंगाई कम करने का आश्वासन दिया किंतु प्रश्न यह है कि महंगाई कम कैसे हो या उपज में बढ़ोतरी कैसे हो। यह आवश्यक है उपभोक्ता की खरीद और वितरण की निगरानी करने वाले विभागों के कर्मचारी ईमानदारी से कार्य करें तो कीमतों को रोका जा सकता है।

यदि निम्न तथा मध्यम वर्ग के लोगों को उचित दाम पर आवश्यक वस्तुएं नहीं मिलेंगी तो असंतोष बढ़ेगा और हमारी स्वतंत्रता के लिए पुनः खतरा उत्पन्न हो जाएगा। वास्तव में महंगाई की समस्या के लिए हमें चाहिए कि उसके समाधान के लिए विश्व एवं मानवता के कल्याण हेतु विज्ञान का सोच–समझकर सहयोग लें तथा एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

çn"k.k dh leL;k % प्रदूषण की समस्या वैज्ञानिक प्रगति के कारण पूरे राष्ट्र में फैली हुई है। आज सृष्टि का कोई पदार्थ या राष्ट्र का कोई भी कोना प्रदूषण के प्रहार से नहीं बच पाया है। प्रदूषण मानव के अस्तित्व पर एक नंगी तलवार की भांति लटक रहा है।

सरकार इस प्रदूषण से चिंतित है, इसलिए संविधान की धारा 48 में यह शामिल किया गया है कि यह राष्ट्र पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए प्रयत्नशील रहेगा और वनों तथा वन्य–जंतुओं की रक्षा करेगा, इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि प्रदूषण पर शीघ्रातिशीघ्र नियंत्रण पाया जाए। कारखानों को नगरों से दूर ले जाया जाए और उनकी चिमनियां काफी ऊंची बनाई जाएं ताकि उनका विषैला धुआं वायुमंडल के नीचे स्तर पर न आए। पेड़ हमारी पृथ्वी का श्रृंगार है और प्रदूषण का शत्रु।

fuj{kjrk dh leL;k % निरक्षरता की समस्या राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी समस्या है। निरक्षर व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार निरक्षर व्यक्ति आधी–अधूरी जिंदगी जीता है। शिक्षा विहीन व्यक्ति सींग और पूंछ रहित पशु के समान होता है। साहित्य और कलाओं का सुरगम्य संसार उसकी पहुंच से बाहर हो जाता है। निरक्षरता सारे राष्ट्र के लिए भयंकर समस्या है जिसके बचाव के लिए पूरे राष्ट्र में साक्षरता का अभियान चलाया जाए।

tkfrokn dh leL;k % जातिवाद की समस्या के बारे में हम कह सकते हैं कि यह राष्ट्र की एक गंभीर समस्या है। जातिवाद की समस्या सबसे ज्यादा हमारे देश में देखने को मिलती है। यहां प्रत्येक धर्म, संप्रदाय, जाति वर्ण आदि के व्यक्ति को अपनी मान्यताओं के अनुरूप धर्म अथवा संप्रदाय अपनाने का संवैधानिक अधिकार है। आज देश में सभी एक–दूसरे के धर्म–संप्रदाय को बुरा–भला कहते हुए अपने से विपरीत धर्मावलंबी का गला काटने के लिए तैयार हैं। इससे देश में पारस्परिक घृणा का भाव उत्पन्न हो रहा है। जातिवाद की समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है कि हम सब धर्मों का समान रूप से आदर करें।

Ò"Vkpkj dh leL;k % भ्रष्टाचार का एक सबसे बड़ा कारण है लोगों में राष्ट्र के प्रति राष्ट्रभक्ति का न होना। हर कोई राष्ट्रीय हित को गौण समझ लूट–खसोट करने में लगा हुआ है।

भ्रष्टाचार की समस्या के समाधान के लिए भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपने स्तर पर लड़ने की आवश्यकता है। क्योंकि आज समाज व सरकारी तंत्र का प्रत्येक अंग कहीं न कहीं से भ्रष्टाचार के कोढ़ में गल रहा है। न चाहते हुए भी समाज के लोगों का रिश्वत के बिना एक कदम भी आगे बढ़ना कठिन है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि विकास के पथ पर अग्रसर किसी भी राष्ट्र के सामने यदि समस्याएं हैं तो उनका समाधान भी उस राष्ट्र को ही करना होता है। इसके लिए हम प्रयासरत हैं। ◈

कृत्रिम अभाव उत्पन्न करके लाभ कमाने वाले पर नियंत्रण आवश्यक है। सबसे बढ़कर गरीबी की समस्या को दूर करने की आवश्यकता है ताकि लोग महंगाई के दुष्प्रभावों को झेल सकें। आर्थिक असमानता घटाकर तथा बाजार प्रणाली को मजबूत बनाकर हम महंगाई पर लगाम लगा सकते हैं। अतः बेरोजगारी जैसी राष्ट्रीय समस्या को दूर करने हेतु सभी स्तरों से प्रयास होना चाहिए।

जमाखोरों पर हो कठोर कार्रवाई

◈ **dyk'k xk;y** दसवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, फेज–4, दिल्ली

वर्तमान युग में सामाजिक अवलोकन एवं उसका मूल्यांकन प्रायः आर्थिक आधार पर किया जाने लगा है। आज मनुष्य आत्मसुख तभी प्राप्त कर सकता है जब वह आर्थिक रूप से स्वयं को समर्थ महसूस करे। आर्थिक विपन्नता की स्थिति में दया, धर्म और परोपकार जैसे गुण उसे महत्वहीन लगने लगते हैं।

देश में बेकारी की समस्या के मूल कारणों पर यदि हम दृष्टि डालें तो हम देखते हैं कि अधिक संपन्नता के लिए व्यवसाय एवं उद्योग के अतिरिक्त प्रायः लोग अन्य आर्थिक स्त्रोत के रूप में नौकरी को विशेष महत्व देते हैं। अतएव शिक्षित, अर्थशिक्षित व उच्चशिक्षित सभी वर्ग के लोग नौकरी की ही ओर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। फलस्वरूप नौकरी की समस्या हमारे राष्ट्रीय स्तर की समस्या बन चुकी है।

राष्ट्र सम्मुख बेरोजगारी की इस विकराल समस्या का प्रमुख कारण हमारे देश की शिक्षा प्रणाली है। किसी भी देश की शिक्षा उसके मानसिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक विकास व समृद्धि का आधार होती है

परंतु आजादी के इतने वर्षों के पश्चात् भी हमारी शिक्षा प्रणाली में विशेष परिवर्तन देखने को नहीं मिला है।

इसका आधार प्रयोगात्मक होने के कारण यह देश के नवयुवकों को स्वावलंबी बनाने तथा उसमें आत्मविश्वास कायम करने में पूर्णतः असफल रही है। हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि ने बेरोजगारी की समस्या को और भी अधिक जटिल बना दिया है। देश में उपलब्ध संसाधनों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि का अनुपात कहीं अधिक है। यदि जनसंख्या को नियंत्रित रखा गया होता तो बेकारी की समस्या इतनी तीव्रता से न उठ खड़ी होती।

आज के कंप्यूटर युग में प्रायः सभी प्रमुख कारखानों, मिलों व दफ्तरों का कंप्यूटरीकरण होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त नित–नए अनुसंधानों के चलते कर्मचारियों की आवश्यकता कम होती जा रही है। लघु एवं कुटीर उद्योग कंप्यूटरीकृत एवं स्वचालित मशीनों के कारण विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं। हालांकि हमारी सरकार समय–समय पर विभिन्न नवीन योजनाओं के माध्यम से संतुलन बनाने का प्रयास करती रही है फिर भी उसके अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं।

धर्मांधता, सामाजिक कुरीतियां आदि भी देश में बेरोजगारी की समस्या को परोक्ष रूप से बढ़ावा देती हैं। आज अनगिनत लोग जाति, धर्म, झूठी शान एवं पारिवारिक परंपराओं के चलते विकास की प्रमुख धारा में जुड़ने से वंचित हैं। उनका पुरातन के प्रति मोह स्वयं उनके एवं देश के विकास के लिए बाधक सिद्ध हो रहा है। लोगों में उच्चस्तरीय जीवनयापन की आकांक्षा बढ़ी है। रोजगार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा इसी की देन है।

बेरोजगारी के अनेक दुष्परिणाम होते हैं। लंबे समय से रोजगार की तलाश में लगा व्यक्ति जब सफल व असफल होता है तो उसमें निराशा व कुंठा घर कर जाती है। उसकी स्वावलंबन क्षमता क्षीण होती जाती है। देश भर में बढ़ती हिंसा, चोरी, डकैती, तस्करी, अपहरण, बलात्कार व हत्याओं आदि के लिए बेरोजगारी ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उत्तरदायी है।

मुद्रास्फीति की दर जितनी अधिक होती है, महंगाई उसी अनुपात में बढ़ती जाती है। वस्तुओं के महंगा होने से कम कमाई वाले नागरिकों को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। महंगाई की सबसे अधिक मार गरीबों और मजदूरों पर पड़ती है। कीमतों में वृद्धि के कई कारण होते हैं। मूल्य वृद्धि का एक अन्य प्रमुख कारण कालाबाजारी भी है। कुछ लोग वस्तुओं का संग्रह कर बाजार में कृत्रिम अभाव की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं।

कृत्रिम अभाव उत्पन्न करके लाभ कमाने वाले पर नियंत्रण आवश्यक है। सबसे बढ़कर गरीबी को समाप्त करने की आवश्यकता है ताकि लोग महंगाई के दुष्प्रभावों को झेल सके। आर्थिक असमानता घटाकर तथा बाजार प्रणाली को मजबूत बनाकर हम महंगाई पर लगाम लगा सकते हैं। अतः बेरोजगारी जैसी राष्ट्रीय समस्या को दूर करने हेतु सभी स्तरों से प्रयास होना चाहिए।

लघु एवं कुटीर उद्योग को अधिक प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा नई योजनाएं प्रस्तुत की जानी चाहिए। हड़ताल, तालाबंदी तथा स्वार्थपूर्ण राजनीतिक गतिविधियों पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। हमारे देश की सरकार बेकारी की इस राष्ट्रीय समस्या से भली–भांति अवगत है। समय–समय पर देश से बेरोजगारी दूर करने हेतु अनेक कार्यक्रम घोषित किए गए हैं परंतु हमें अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी है। जब तक इसे रोकने हेतु सामूहिक प्रयास नहीं होंगे तब तक इसे जड़ से उखाड़ फेंकना संभव नहीं होगा। ◈

दहेज एक मानसिक कोढ़

◈ v i ok efyd आठवीं
सैक्रेड हार्ट कान्वेंट स्कूल
सराभा नगर, लुधियाना, पंजाब

दहेज की बुराई को दूर करने के लिए सच्चे उपाय देश के नवयुवकों के हाथों में हैं। अतः वे विवाह की कमान अपने हाथों में लें। वे अपने जीवन-साथी के गुणों को महत्व दें। विवाह 'प्रेम' के आधार पर करें, 'दहेज' के आधार पर नहीं। कन्याएं भी दहेज के लालची युवकों को दुत्कारें तो इस समस्या का बहुत हद तक समाधान हो सकता है। इस समस्या को खत्म करने के लिए लड़का-लड़की को बराबर का दर्जा देना होगा। उनको शिक्षित करना होगा।

Òरत एक विशाल देश है। अधिक समय तक परतंत्र रहने के कारण यहां की अर्थव्यवस्था डगमगा गई। सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत आज कई गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। आज ये समस्याएं अपनी चरम सीमा पर हैं।

cjkstxkjh % बेरोजगारी की बढ़ती समस्या निरंतर हमारी प्रगति, शांति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। हमारे देश में बेरोजगारी के अनेक कारण हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है देश की निरंतर बढ़ती जनसंख्या। इसका दूसरा प्रमुख कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था है। बेरोज़गारी का तीसरा प्रमुख कारण हमारे लघु उद्योगों का नष्ट होना अथवा उनकी महत्ता का कम होना है।

lek/kku % प्रत्येक समस्या का समाधान उसके कारणों में छिपा रहता है। यदि ऊपर कथित कारणों पर प्रभावी रोक लगाई जाए तो बेरोज़गारी की समस्या का काफी सीमा तक समाधान हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, मशीनीकरण पर नियंत्रण, कंप्यूटरीकरण

पर नियंत्रण, रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू किया जाना चाहिए।

Ò"Vkpkj % भारत में भ्रष्टाचार चारों तरफ महामारी की तरह फैल गया है। भ्रष्टाचार तब तक खत्म नहीं हो सकता जब तक लोगों का ईमान नहीं जागेगा। आज तो हालात कुछ ऐसे हैं कि नेताओं के आर्थिक भ्रष्टाचार का विरोध करने वाला खुद नैतिक रूप से भ्रष्ट होता है।

lek/kku % बच्चों को विद्यालय, घर एवं गुरुजनों से अच्छे संस्कार मिलने चाहिए जिससे वह भ्रष्टाचार और सदाचार में अंतर समझ सकें। जन–आंदोलन से भी भ्रष्टाचार को दूर किया जा सकता है। सरकारी अधिकारी या मंत्रियों के खिलाफ अगर कोई भी मामला दर्ज होता है तो तीन महीनों के अंदर–अंदर अपने आपको सच्चा प्रमाणित करना पड़ेगा नहीं तो उन्हें दंड दिया जाएगा।

ngt çFkk % विवाह में प्राचीन काल से ही इस प्रथा का चलन है। इस प्रथा के कारण ही बाल–विवाह तथा विवाह–विच्छेद जैसी प्रथाएं अस्तित्व में आ गयी हैं। इसके कारण कितनी समस्याएं बढ़ रही हैं, इसका तो अनुमान लगाना भी कठिन है। सबसे पहले तो यह कि जन्म से पूर्व ही मां के गर्भ की जांच के बाद लड़कियों को मारने के कारण लड़का–लड़की की संख्या का अनुमान बिगड़ गया है। दूसरा, दहेज देने की होड़ में लड़की के माता–पिता कर्जदार हो जाते हैं। दहेज एक मानसिक कोढ़ है।

lek/kku % दहेज की बुराई को दूर करने के लिए सच्चे उपाय देश के नवयुवकों के हाथों में हैं। अतः वे विवाह की कमान अपने हाथों में लें। वे अपने जीवन–साथी के गुणों को महत्व दें। विवाह 'प्रेम' के आधार पर करें, 'दहेज' के आधार पर नहीं। कन्याएं भी दहेज के लालची युवकों को दुत्कारें तो इस समस्या का बहुत हद तक समाधान हो सकता है। इस समस्या को खत्म करने के लिए लड़का–लड़की को बराबर का दर्जा देना होगा। उनको शिक्षित करना होगा।

egxkÃ % आज हमारा सारा देश महंगाई की समस्या से पीड़ित है। जिससे पूछो वही कहता है कि हम महंगाई से बहुत दुःखी हैं। गुजारा नहीं होता, चाहे कितना भी धन कमा लो तब भी दिन नहीं कटते। स्वतंत्रता के पश्चात् प्रति वर्ष महंगाई बढ़ती ही जा रही है।

lek/kku % दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि रोकने के ठोस उपाय किए जाने चाहिए। इसके लिए सरकार को लगातार मूल्य–नियंत्रण करते रहना चाहिए। कालाबाजारी को भी रोका जा सकता है। इस दिशा में जनता का भी कर्तव्य है कि वह संयम से काम ले।

xjhch % इस बात को कोई इनकार नहीं कर सकता कि गरीबी एक अभिशाप है। इसे अभिशाप कहना बुरी बात नहीं क्योंकि जो इंसान गरीब होता है, उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता। आज भी भारत सरकार सिर्फ वादे करती है परंतु कोई ठोस कदम नहीं उठाती।

vkradokn % आतंकवाद की समस्या हर जबान पर चर्चा का गंभीर विषय बन गई है। सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि सारा विश्व इस समस्या का शिकार बना हुआ है। निर्दोष और मासूम लोगों की जान को हर समय खतरा रहता है।

lek/kku % इसका सफाया करने के लिए जी–जान से हिम्मत चाहिए। हिम्मत ही नहीं, उसे कुचलने के लिए पूरी सावधानी, कुशलता और तत्परता भी चाहिए। सौभाग्य से अमेरिका के नेतृत्व में कुछ शुरुआत हुई। अगर अन्य देश भी कुछ ठोस कदम उठाएं तो एक न एक दिन विश्व आतंकमुक्त बन जाएगा।

इन समस्याओं से मुक्त होने के उपायों की कमी नहीं है। कमी है तो सिर्फ समाज की इच्छा शक्ति की। जब तक समाज अपनी विचारधारा में परिवर्तन नहीं लाता, तब तक इन परेशानियों का हल नहीं हो सकता। ◈

आज के दिनों में गैर सरकारी नौकरी सरकारी नौकरी से बेहतर साबित हो रही है। प्राईवेट कंपनियां किसी को भी अपने यहां क्षमता, दक्षता, तकनीकी ज्ञान और अच्छे अंक के आधार पर नौकरी देती है जबकि सरकारी नौकरी के लिये कई बार घूस देनी पड़ती है, जैसे टीचर, क्लर्क, नर्स, डॉक्टर आदि के लिये और घूस की राशि हमेशा बाजार मूल्य के आधार पर बढ़ती रहती है।

कदाचार से दूर रहें व सदाचार के पास

◈ vkfnR; आठवीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
हडसन लाइन, दिल्ली

Òभ्रष्टाचार एक जहर है जो देश, संप्रदाय और समाज के गलत लोगों के दिमाग में फैला होता है। इसके लिए केवल छोटी सी इच्छा और अनुचित लाभ के लिये सामान्य जन के संसाधनों की बरबादी की जाती है। इसका संबंध किसी के द्वारा अपनी ताकत और पद का गैर जरूरी और गलत इस्तेमाल करना है, फिर चाहे वो सरकारी या गैर सरकारी संस्था हो। इसका प्रभाव व्यक्ति के विकास के साथ ही राष्ट्र पर भी पड़ रहा है और यही समाज और समुदायों के बीच असमानता का बड़ा कारण है। साथ ही यह राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से राष्ट्र की प्रगति और विकास में बाधक भी है।

भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति और सत्ता का गलत इस्तेमाल अपनी संतुष्टि और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिये करता है। इसमें सरकारी नियम–कानूनों की धज्जियां उड़ाकर फायदा पाने की कोशिश होती है। भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में गहराई से व्याप्त हो चुकी हैं और लगातार फैल रही है। यह कैंसर जैसी बीमारी की

तरह है जो बिना इलाज के खत्म नहीं होती। इसका एक सामान्य रूप पैसा और उपहार लेकर काम करना दिखाई देता है। कुछ लोग अपने फायदे के लिये दूसरों के पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं। सरकारी और गैर–सरकारी कार्यालयों में काम करने वाले भ्रष्टाचार में लिप्त होते हैं, साथ ही अपनी छोटी सी पूर्ति के लिये किसी भी हद तक जा सकते हैं।

भ्रष्टाचार एक बीमारी की तरह देश में ही नहीं वरन् विदेश में भी फैलता जा रहा है। भारतीय समाज में यह सबसे तेजी से उभरने वाला मुद्दा है। सामान्यतः इसकी शुरुआत और प्रचार–प्रचार मौका परस्त नेताओं द्वारा शुरू होती है।

भ्रष्ट लोग अपने व्यक्तिगत फायदों के लिये भारत की पुरानी सभ्यता तथा संस्कृति को नष्ट कर रहे हैं। मौजूदा समय में जो लोग अच्छे सिद्धांतों का पालन करते हैं, दुनिया उन्हें बेवकूफ समझती है और जो लोग गलत करते हैं, साथ ही झूठे वादे करते हैं वे समाज के लिए अच्छे होते हैं। जबकि सच यह है कि कदाचारी सीधे, साधारण और निर्दोष लोगों को धोखा देते हैं और उनके दिमाग पर हावी भी रहते हैं।

भ्रष्टाचार दिनों–दिन बढ़ता ही जा रहा है क्योंकि अधिकारियों और नेताओं के बीच में सांठगांठ होती है। भारत में एक प्रथा लोगों के दिमाग में घर कर कई है कि सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं में बिना रिश्वत दिये अपना काम नहीं करवाया जा सकता और इसी सोच की वजह से परिस्थिति और गिरती ही जा रही है।

कदाचार हर जगह है चाहे वह अस्पताल, शिक्षा, सरकारी कार्यालय कुछ भी हो, कोई इससे अछूता नहीं है। सब कुछ व्यापार हो चुका है। पैसा गलत तरीके से कमाया जा रहा है। शिक्षण संस्थान भी भ्रष्टाचार के लपेटे में हैं। यहां विद्यार्थियों को सीट देने के लिये पैसा लिया जाता है चाहे उनके अंक इस लायक हों या न हों। बेहद कमजोर विद्यार्थी भी पैसों के दम पर किसी भी कॉलेज में दाखिला पा जाते हैं,

इसकी वजह से अच्छे विद्यार्थी पीछे रह जाते हैं और उन्हें मजबूरन साधारण कॉलेज में पढ़ना पड़ता है।

आज के दिनों में गैर सरकारी नौकरी सरकारी नौकरी से बेहतर साबित हो रही है। प्राईवेट कंपनियां किसी को भी अपने यहां क्षमता, दक्षता, तकनीकी ज्ञान और अच्छे अंक के आधार पर नौकरी देती है जबकि सरकारी नौकरी के लिये कई बार घूस देनी पड़ती है, जैसे टीचर, क्लर्क, नर्स, डॉक्टर आदि के लिये और घूस की राशि हमेशा बाजार मूल्य के आधार पर बढ़ती रहती है। इसलिये कदाचार से दूर रहें और सदाचार के पास रहें तो भ्रष्टाचार अपने आप समाप्त हो जाएगा। ◈

पानी का सही हो उपयोग

l iuk आठवीं
दयानंद आदर्श विद्यालय
कण्डाघाट, हिमाचल प्रदेश

वैसे तो हमारी आधी से ज्यादा धरती पानी से घिरी है परंतु पीने के लिए और इस्तेमाल करने के लिए बहुत कम पानी उपलब्ध है। वैसे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में पानी की समस्या है। कई जगह पानी का गलत इस्तेमाल किया जाता है। पानी की समस्या के कारण काफी व्यक्ति प्यासे मर रहे हैं और वहीं कुछ व्यक्ति पानी को दूषित कर रहे हैं।

gमारे राष्ट्र का नाम भारत है। दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम पर यह नाम पड़ा। हमारे राष्ट्र में हर कार्य के लिए आजादी है परंतु हर कार्य में कुछ न कुछ समस्याएं हैं। हर समस्या का कोई न कोई समाधान है परंतु उन समस्याओं को सुलझाने के लिए राष्ट्र की सरकार, राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक होना आवश्यक है तभी यह राष्ट्र प्रगति कर सकता है। राष्ट्र की कुछ समस्याएं निम्नलिखित हैं:–

ikuh dh leL;k % वैसे तो हमारी आधी से ज्यादा धरती पानी से घिरी है परंतु पीने के लिए और इस्तेमाल करने के लिए बहुत कम पानी उपलब्ध है। वैसे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में पानी की समस्या है। कई जगह पानी का गलत इस्तेमाल किया जाता है। पानी की समस्या के कारण काफी व्यक्ति प्यासे मर रहे हैं और वहीं कुछ व्यक्ति पानी को दूषित कर रहे हैं।

अगर व्यक्ति पानी को दूषित न करे तो इसका बहुत लाभ होगा। पानी

को उबाल कर पीएं क्योंकि दूषित पानी भी एक जगह से दूसरें को इस्तेमाल करने के लिए दूसरी जगह भेजा जाता है। अगर पानी को उबाल कर पिया जाए तो कीटनाशक कीटाणु आदि उबालने पर दूर हो जाएंगे। हमें पानी का उतना ही इस्तेमाल करना चाहिए जितनी हमें आवश्यकता है। इससे पानी की समस्या कम हो सकती है और धीरे–धीरे खत्म भी।

egxkÃ dh leL;k % हमारे देश में महंगाई की समस्या भी बड़ी भारी समस्या है। दिन–प्रतिदिन महंगाई बढ़ती जा रही है। कुछ लोग कम पैसे में वस्तु खरीदते और महंगे दाम पर बेचते हैं। सरकार के पैसों को वे खुद हड़प जाते हैं। यह एक तरह की जमाखोरी है।

जिस वस्तु का दाम लगाकर खरीदते हैं उसी कीमत में उसे बेचना चाहिए। जो पैसा सरकार उन्हें उनको कार्य के लिए दे रही है उन्हें उसे सरकार को वापिस या गरीबों में बांटना चाहिए। इससे दूसरों की भी काफी सहायता होती है।

cdkjh dh leL;k % राष्ट्र में बेकारी की समस्या भी है जिसे एक मनुष्य बल्कि अगर सभी कोशिश करें तो इस समस्या को भी दूर किया जा सकता है।

/ku dh leL;k % हमारे राष्ट्र में काफी निर्धन व्यक्ति है जिन्हें अपने परिवार को पालने, बच्चों को पढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। इस धन को प्राप्त करने के लिए वह चोरी भी करने को तैयार हो जाता है। हमें भाईचारे की भावना रखनी चाहिए। जो व्यक्ति धन का गलत इस्तेमाल करते हैं उन्हें उसे निर्धन व्यक्तियों में बांट देना चाहिए जिससे उन्हें दो वक्त की रोटी मिल सके। उनके बच्चों को पढ़ाना चाहिए। मन में भाईचारे की भावना रखनी चाहिए, फिर धन की क्या आवश्यकता है।

fctyh dh leL;k % राष्ट्र में कहीं–कहीं बिजली को बरबाद करते हैं और कहीं तो थोड़ी दूर जाने के लिए भी बिजली का प्रबंध नहीं है।

वहां पर उनके बच्चे मोमबत्ती की रोशनी में देर रात तक पढ़ते हैं जिससे उनकी आंखों की रोशनी कमजोर हो जाती है। मनुष्य को उतनी ही बिजली का प्रयोग करना चाहिए जितनी आवश्यकता है। सरकार को बिजली का उचित प्रबंध करना चाहिए ताकि सभी जगह रोशनी हो।

jkstxkj dh leL;k % रोजगार की तलाश में कई व्यक्ति धूप में घूमते हैं पर रोजगार नहीं मिलता और कई व्यक्ति इसी तरह तीन–चार रोज़गार को संभालतें हैं। मनुष्य को एक–दूसरे की सहायता करनी चाहिए। सरकार को निःसहायों को नौकरी देनी चाहिए।

[kku&ihu dh leL;k % खाने की समस्या एक गंभीर समस्या है। काफी व्यक्ति दूसरों का झूठा करा हुआ खाते हैं। खाने के लिए हरी सब्जियों की कमी है जो शायद ही पूरी हो सके क्योंकि सब्जी उगाने के लिए जगह की आवश्यकता है। जनसंख्या के कारण जगह भी कम है। इसके लिए जनसंख्या को और बढ़ने से रोकना होगा। प्रत्येक मनुष्य को मिलजुल कर समस्याओं को सुलझाना चाहिए। सरकार को भी इस विषय पर कदम उठाने चाहिए। ◈

योजनाओं के नाम पर ठेंगा

आज ग्राम सुधार के लिए आवश्यक है कि ग्रामों में शिक्षा का पूर्ण निःशुल्क प्रबंध होना चाहिए। भारत सरकार ग्राम सुधार के लिए कई योजनाएं बना रही हैं परंतु राजनैतिक स्वार्थों के कारण यह योजनाएं शहरों में फाइलों तक सीमित रह जाती हैं। अतः सरकार को चाहिए कि ग्राम सुधार की योजनाओं को सख्ती से लागू करे ताकि ग्रामीण विकास हो सके।

◈ **ijegl flg** आठवीं
रिचमण्ड ग्लोबल स्कूल
पश्चिम विहार, दिल्ली

eहंगाई या मूल्यवृद्धि से आज समस्त विश्व त्रस्त है। भारत बढ़ती महंगाई की चपेट में बुरी तरह से जकड़ा हुआ है। जीवनोपयोगी वस्तुओं के दाम दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं जिससे जन साधारण को अत्यंत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। महंगाई से देश में गरीबी, भुखमरी, घूसखोरी को बढ़ावा मिल रहा है। महंगाई से देश की सारी अर्थव्यवस्था गड़बड़ जाती है।

महंगाई का सबसे बड़ा शिकार होता है गरीब वर्ग। गरीब वर्ग की आय के सीमित स्त्रोत होते हैं। वह जितना कमाता है, उतना खा जाता है। इसके अतिरिक्त वह अपने बच्चों को न तो पौष्टिक आहार खिला सकता है और न ही उन्हें उचित शिक्षा दे सकता है। फलतः समाज में चोरी, डकैती आदि को बढ़ावा मिलता है। मध्यम वर्ग का व्यक्ति भी काफी हद तक महंगाई की चपेट में आता है।

जब तक देश के नेताओं, उद्योगपतिओं व व्यापारी वर्ग में राष्ट्रीय भावना नहीं आती है तब तक यह महंगाई का तांडव भी खत्म नहीं हो सकता

है। उत्पादक व व्यापारी वर्ग को चाहिए कि वह देश की जनता के प्रति ममता रखकर सीमित मुनाफा कमाये। सरकार को मूल्यवृद्धि पर अंकुश लगाना चाहिए। इसके लिए कड़े कानून बना कर उनको सख्ती से लागू करना चाहिए। देश में सस्ते मूल्य पर वस्तुएं बेचने के लिए अधिक से अधिक सस्ती दर की दुकानें खोलनी चाहिए।

i;koj.k o çn"k.k % वर्तमान समय में सबसे अधिक समस्या वायु प्रदूषण की है जिसके कारण हर चीज दूषित होती जा रही है। वायु प्रदूषण को रोकना नितांत आवश्यक है। यदि वायु प्रदूषण रोकने का प्रयास नहीं किया गया तो विश्व में अनर्थ हो जायेगा। वृक्ष मानव के सबसे बड़े मित्र हैं जो वायु को शुद्ध करने का कार्य करते हैं। इसलिए हर क्षेत्र में वृक्षारोपण करना चाहिए। अधिक से अधिक पेड़ लगाकर वायु प्रदूषण से बचना चाहिए।

उद्योग–धंधे शहरों व बस्ती से दूर होने चाहिए, विद्युत चलित रेल गाड़ियों को बढ़ाया जाना चाहिए। शहरों में विद्युत रेलों का विस्तार कर अन्य वाहनों को कम करना चाहिए। नदियों के जल को शुद्ध रखने के लिए गंदे पानी के नालों को दूसरी ओर मोड़कर खेतों में डालना चाहिए।

ध्वनि प्रसारण यंत्रों की ध्वनि कम करनी चाहिए। इस संबंध में सरकार व वैज्ञानिकों को सदैव जागरूक रहना चाहिए। शुद्ध वायु, शुद्ध जल, शुद्ध भोजन, शुद्ध मौसम मानव के लिए अनिवार्य तत्व हैं। आज के युग में प्रत्येक मनुष्य को अपने–अपने स्थान पर प्रदूषण को रोकना चाहिए।

xko o xkeh.k leL;k % भारतीय प्राकृतिक दृष्टि से पूर्ण संपन्न हैं लेकिन आर्थिक दृष्टि से सर्वथा पिछड़े हुए हैं। कच्चे मिट्टी के बने हुए फूंस से ढके हुए घरों का समूह है भारतीय गांव। प्राचीन परंपराओं के आधार पर कृषि करता हुआ किसान अपनी उपज का सारा भाग पूंजीपतियों के हाथ देता है। फिर सबको अन्न खिलाने वाला यह किसान स्वयं भूखा रह जाता है। गांव में न स्कूल, न कॉलेज, न

अस्पतालों की पूर्ण सुविधा है और न ही पीने के लिए पानी व रहने के लिए पक्के घर हैं।

आज ग्राम सुधार के लिए आवश्यक है कि ग्रामों में शिक्षा का पूर्ण निःशुल्क प्रबंध होना चाहिए। भारत सरकार ग्राम सुधार के लिए कई योजनाएं बना रही है परंतु राजनैतिक स्वार्थों के कारण यह योजनाएं शहरों में फाइलों तक सीमित रह जाती हैं। अतः सरकार को चाहिए कि ग्राम सुधार की योजनाओं को सख्ती से लागू करे ताकि ग्रामीण विकास हो सके।

c<rh gÃ tul[;k % हमारे देश में निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या प्रमुख समस्या है। इसका प्रमुख कारण है सही व्यावहारिक ज्ञान का अभाव। यह अभाव अनपढ़ व पढ़े–लिखे दोनों में है। यह धर्म प्रधान देश है। सभी धर्म के लोग संतान को ईश्वर का वरदान समझते हैं। अधिक जनसंख्या का कुप्रभाव देश के प्रत्येक नागरिक पर पड़ता है। सारे देश की अर्थव्यवस्था चरमरा जाती है। देश के सभी नागरिकों के लिए उचित खाद्य व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था व अन्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। देश में बेरोज़गारी व भुखमरी बढ़ती है। अनाचार, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती बढ़ती है।

vkradokn % आज सारा देश आतंकवादी गतिविधियों से भयभीत है। आतंकवादियों को विदेशों से हथियार आदि उपलब्ध होते हैं। वे कभी भी किसी बाजार, भीड़ वाले स्थान या किसी निर्जन स्थान पर बस रोक कर दनादन गोलियों की बौछार कर गायब हो जाते हैं जिससे सैकड़ों निर्दोष लोग हताहत हो जाते हैं। सरकार की ढुलमुल नीति आतंकवाद के लिए जिम्मेदार है। आतंकवाद के विरुद्ध सरकार को कठोर नीति बनानी चाहिए और उसे सख्ती से लागू करना चाहिए तभी आतंकवाद की समस्या को सुलझाया जा सकता है।

e|iku dh leL;k % मद्यपान एक भयंकर व खतरनाक व्यसन है। वर्तमान समय में मद्यपान एक समस्या बन चुकी है। मद्यपान एक रोग है जो कि देश के युवा वर्ग के सोचने–समझने की शक्ति को समाप्त

कर देता है। पढ़–लिखकर समाज में एक अच्छे व्यक्ति के रूप में अपना स्थान बनाने की जगह वह मद्यपान करके अपनी जिंदगी बरबादी की ओर ले जाता रहा है। हमारे देश के शासक व प्रशासक पाश्चात्य सभ्यता के पोषक हैं। इसलिए वे शराब पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाना चाहते। सरकार को मद्य निषेध के लिए कठोर नियम बनाकर इसे पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करना चाहिए।

ukjh fodkl dh leL;k % स्त्री–पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा है। ईश्वर ने लड़की–लड़के को समान रूप से बनाया है। भारत जैसे देश में आज भी लड़की के जन्म पर सबके चेहरे पर उदासी छा जाती है जबकि लड़के के जन्म पर खुशियां मनाई जाती हैं। यह समय है लड़कियों के अस्तित्व पर लगे प्रश्नचिन्ह के हटाने का और लड़कों के समान उनकी बराबरी का। ◈

प्रदूषण से आ रही हैं दैवीय विपत्तियां

विज्ञान ने मानव को अनेक उपहारों से उपकृत किया है जिनके कारण उसका जीवन सुखद एवं आनंदमय बन गया है। वैज्ञानिक प्रगति ने कुछ ऐसी समस्याओं को भी जन्म दिया है जिनके कारण आज मनुष्य का जीवन प्रभावित हुआ है। प्रदूषण भी एक ऐसी ही समस्या है जो विज्ञान की ही देन है।

◈ **rfu"kk xkre** ग्यारहवीं
रतनलाल फूल कटोरी देवी
सी. सै. स्कूल
गोवर्धन रोड, मथुरा, उत्तर प्रदेश

Çत्येक राष्ट्र की अपनी समस्याएं होती हैं जिनमें भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, तस्करी, अपराध इत्यादि मुख्य हैं। इन्हीं समस्याओं में से आतंकवाद की समस्या भी एक ऐसी जटिल तथा भयंकर समस्या है जो जो लगातार सुरसा के मुख की तरह बढ़ती जा रही है। आज विश्व का कोई भी कोना इससे अछूता नहीं है। आतंकवाद एक ऐसी कुत्सित प्रवृत्ति है जिससे कुछ लोग अपनी अमानवीय इच्छाओं की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह कर मासूम व निर्दोष लोगों का रक्त बहाने को विवश कर देते हैं।

इनके कारण हजारों परिवार अपने घर–द्वार त्यागने को विवश हो गए हैं। कितनी स्त्रियां, विधवाएं एवं अरबों की धन–संपत्ति राख हो चुकी है। आए दिन आतंकवादियों की गतिविधियों ने सरकार का अमन चैन नष्ट कर दिया है। भारत में आतंकवाद का प्रमुख कारण पाकिस्तान से आतंकवादियों को मिलने वाला प्रशिक्षण एवं अन्य सभी प्रकार की सहायता है। आतंकवाद किसी समस्या या प्रश्न का हल नहीं है। बातचीत एवं

राजनैतिक, आर्थिक कदम उठाकर इस समस्या का समाधान संभव है। प्यार, शांति एवं विश्वास के पथ को अपनाकर जो व्यक्ति गुमराह हो गए हैं, उन्हें वापस मानवता का राह पर लाया जा सकता है। अतः आतंकवाद की समस्या का समाधान शांतिपूर्ण उपायों द्वारा संभव है।

रोटी, कपड़ा और मकान मानव की मूलभूत आवश्यकताएं हैं। ये बिना धन के पूरी नहीं हो सकतीं। इनकी पूर्ति हो जाने के बाद ही मनुष्य भौतिक सुख की कोई वस्तु खरीद सकता है। आज जिस गति से महंगाई बढ़ती चली जा रही है उससे मूलभूत आवश्यकताएं ही पूरी नहीं हो पा रहीं। कीमतों का बढ़ना ही महंगाई कहलाता है। आज भारत की अनेक समस्याओं में से महंगाई भी विकट समस्या बन चुकी है। इस महंगाई का हमारे जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है। खर्चों के बढ़ने के साथ ही प्रत्येक कर्मचारी अधिक वेतन की मांग करता है। सरकार करों में वृद्धि कर देती है। व्यापारी अपने लाभ की सोचते हैं जिससे आम व्यक्ति त्रस्त हो उठता है।

महंगाई अनेक कारणों से बढ़ती है, जैसे प्रशासनिक शिथिलता, भ्रष्टाचार, दोषपूर्ण वितरण प्रणाली, जनसंख्या में वृद्धि, व्यापारी वर्ग द्वारा मुनाफाखोरी एवं जमाखोरी करने की प्रवृत्ति, उत्पादन का कम होना, ईमानदारी से अपने कर्तव्यों को ठीक से न निभाना है। इस कमरतोड़ महंगाई को रोकने के लिए हमें प्रशासनिक व्यय में कमी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी और मुनाफाखोरी जैसे तत्वों को रोकना होगा। हमें समय रहते ही कदम उठाने होंगे, इसी में ही हमारा और देश का कल्याण है।

विवाह में कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को जो उपहार तथा पुरस्कार स्वरूप वस्तु या धन दिया जाता है, वह दहेज कहलाता है। राजा–महाराजाओं एवं उच्च कुलों में पनपने वाली यह प्रथा आज जोंक की भांति भारतीय समाज को आक्रांत कर रही है। दहेज कम देने या कभी–कभी न देने के कारण कन्या को कई बार अपमान भी सहन करना पड़ता है।

इस कुप्रथा को रोकने के लिए कानून भी बनाए गए हैं। समय–समय

पर इन कानूनों में संशोधन भी होता है। फिर भी इससे मुक्ति प्राप्त नहीं हुई है। हमें इस कोढ़ रूपी प्रथा से छुटकारा पाने के लिए स्त्री शिक्षा पर बल देना चाहिए, साथ ही साथ अंतर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना चाहिए। चलचित्रों, दूरदर्शन, एवं रेडियो द्वारा इस प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया जाना चाहिए।

भ्रष्टाचार का निराकरण करना असंभव नहीं है। कठोर कानून नियंत्रण एवं आत्मानुशासन द्वारा इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। यदि सरकार जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, समान सुविधाएं जनता को उपलब्ध करवाए तो काफी हद तक भ्रष्टाचार दूर हो सकता है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भ्रष्टाचार हमारे देश में एक कोढ़ की भांति है। यदि समय रहते इसका इलाज न किया गया तो हमें भयंकर परिणाम भुगतने होंगे।

विज्ञान ने मानव को अनेक उपहारों से उपकृत किया है जिनके कारण उसका जीवन सुखद एवं आनंदमय बन गया है। वैज्ञानिक प्रगति ने कुछ ऐसी समस्याओं को भी जन्म दिया है जिनके कारण आज मनुष्य का जीवन प्रभावित हुआ है। प्रदूषण भी एक ऐसी ही समस्या है जो विज्ञान की ही देन है।

आज पर्यावरण में अनेक प्रकार की जहरीली गैसों की मात्रा निरंतर बढ़ती जा रही है जिसके कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है तथा अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म हो रहा है, जैसे–पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि, ऋतु–चक्र में परिवर्तन, बाढ़–भूकंप, भूस्खलन तथा अनावृष्टि जैसी अनेक दैवीय विपत्तियां आदि हैं।

वृक्ष धरा का आभूषण हैं। यदि ये रहेंगे तो हम रहेंगे, इसलिए हमें पेड़–पौधों की रक्षा करनी चाहिए। साथ ही नए पौधों को भी लगाया जाना चाहिए। चरागाहों का विस्तार, वनों की कटाई पर रोक लगाई जानी चाहिए। सरकार को भी वनों के विस्तार और संरक्षण पर बल देना चाहिए।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है। यदि जनगणना के आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो यह देखकर हमें हैरानी होती है कि पिछले दस वर्षों में हमारी जनसंख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। यदि इसी प्रकार जनसंख्या वृद्धि होती रही तो इसके बहुत भयंकर परिणाम होंगे। आज सरकार को बढ़ती जनसंख्या की वजह से भोजन, कपड़ा, आवास, शिक्षा एवं रोजगार के साधनों का प्रबंध करना मुश्किल होता जा रहा है। परिणामस्वरूप गरीबी, बेरोजगारी और महंगाई दिनों–दिन बढ़ती चली जा रही है।

जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाना बहुत जरूरी है। हमें शिक्षा के प्रचार–प्रचार के अलावा जनसंख्या माध्यमों से छोटे परिवार के लाभों से परिचित करवाना होगा। परिवार नियोजन के कार्यक्रमों का प्रसार करना होगा। नसबंदी एवं गर्भनिरोधक उपायों के बारे में लोगों को जागरूक करना होगा। देश के कल्याण के लिए हमें इस विकट समस्या पर गंभीरता से विचार करना होगा। धीरे–धीरे जागरूकता आने से सफलता अवश्य मिलेगी। ◈

जब हम क्रोध में होते हैं तब हमारी सांस कुछ और ढंग से चलती है। दुःख, संताप, आवेग जैसे अलग-अलग मनोभावों के आगमन पर सांस की लय एवं रफ्तार घटती-बढ़ती रहती है। प्राणायाम में सांस भीतर लेना, फिर रोकना और बाहर निकालना तथा फिर रोकना ये क्रियाएं रीतिपूर्वक संपन्न होती हैं।

शिक्षा प्रणाली में 'डोनेशन' बंद हो

◈ jkgy flokp सातवीं
ग्रीनफील्ड्स पब्लिक स्कूल
जीटीबी इन्क्लेव
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

Òारत के पूरे सिस्टम में भ्रष्टाचार बुरी तरह फैल चुका है। निजी शैक्षणिक संस्थान डोनेशन में मोटी कमाई करते हैं। तो आप सोच ही सकते हैं कि जिस संस्थान की जड़ ही भ्रष्टाचार से पोषित हो, वहां से बाहर निकलने वाले लोग कैसे भ्रष्ट नहीं होंगे। राजनीतिक पार्टियां उन नेताओं को पार्टी से नहीं निकालतीं जो राष्ट्र विरोधी बयान देते हैं।

राष्ट्रीय समस्याएं और इसके समाधान चंद शब्दों में नहीं समझे जा सकते। मैं कुछ विचार लिखित शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूं। सबसे पहली मुख्य समस्या भ्रष्टाचार की है। भारत में भ्रष्टाचार चारों तरफ महामारी की तरह फैल चुका है। सरकारी तंत्र सें लेकर निजी स्वामित्व वाले क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से अछूते नहीं रह गये हैं। पहले छोटे–मोटे घोटाले होते थे, आजकल लाखों–करोड़ों के घोटाले होना आम बात हो गई है।

नेताओं और नौकरशाहों की आर्थिक वृद्धि को देखकर ऐसा अहसास होता है कि काश, देश के आम आदमी का भी ऐसा विकास होता तो

हम दुनिया के विकसित देशों में भी आगे होते। इसके लिए हमारे नेताओं और नौकरशाहों को ईमानदारी और कठोरता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा।

न्याय प्रणाली भी भ्रष्टाचार से अछूती नहीं रह गई है। एक आम आदमी न्याय पाने में अपनी सारी धन–सम्पत्ति यहां तक कि अपनी पूरी उम्र गंवा देता है फिर भी इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि उसे न्याय मिल पायेगा या नहीं। वक्त बदला तो भ्रष्टाचार के रूप भी बदले। पहले हम लोग केवल आर्थिक भ्रष्टाचार को भ्रष्टाचार मानते थे लेकिन आज भ्रष्टाचार, के कई रूप हैं, जैसे आर्थिक भ्रष्टाचार, नैतिक भ्रष्टाचार, राजनैतिक भ्रष्टाचार, न्यायिक भ्रष्टाचार, सामाजिक भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक भ्रष्टाचार आदि।

भारत के पूरे सिस्टम में भ्रष्टाचार बुरी तरह फैल चुका है। निजी शैक्षणिक संस्थान डोनेशन में मोटी कमाई करते हैं तो आप सोच ही सकते हैं कि जिस संस्थान की जड़ ही भ्रष्टाचार से पोषित हो, वहां से बाहर निकलने वाले लोग कैसे भ्रष्ट नहीं होंगे। राजनीतिक पार्टियां उन नेताओं को पार्टी से नहीं निकालतीं जो राष्ट्र विरोधी बयान देते हैं। यह राजनीतिक भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार से मुक्त होने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति का ईमान जागे। शिक्षा में नैतिकता का होना जरूरी है, इसके बिना भ्रष्टाचार कभी खत्म नहीं हो सकता। न्याय प्रणाली में सुधार करने के लिए न्यायाधीशों की संख्या में बढ़ोतरी होनी चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों को विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा देनी चाहिए। सामाजिक भ्रष्टाचार ही वह जड़ है जो अन्य भ्रष्टाचारों का आधार है, इसलिए आर्थिक भ्रष्टाचार के साथ सामाजिक भ्रष्टाचार का भी जड़ से खत्म होना जरूरी है।

हमारे देश की दूसरी बड़ी समस्या बेरोजगारी है। बेरोजगारी का अर्थ है व्यक्ति रोज़गार हेतु सभी योग्यताएं पूरी करता है पर उसे काम नहीं मिलता। कहते हैं ना जब व्यक्ति को काम नहीं मिलेगा तो उसका दिमाग खाली रहेगा। खाली दिमाग में अच्छे–बुरे विचार आते रहते हैं।

जब उसके पास खाने को नहीं रहेगा तो वह चोरी, डकैती, लूटमार, हत्या, आतंकी गतिविधियों में संलग्न होकर अपना विवेक खो बैठता है। उसकी इस बेरोजगारी का फायदा उठाकर धर्मों के ठकेदार उन्हें कभी देशभक्ति तो कभी धर्म का वास्ता देकर उनसे देशद्रोही गतिविधियां करवाते हैं।

हमारे देश में इसी वजह से आतंकवादी पैदा हो रहे हैं। बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों का बहुत अधिक दोहन हो रहा है। ये संसाधन अब हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। सरकार द्वारा भी सभी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी सीमित हैं, उसकी तुलना में बेकार अधिक हैं। देश में कुटीर उद्योग–धन्धों का अभाव है। आजकल कारखानों में बड़े पैमाने पर मशीनों का उपयोग होता है।

हमारी शिक्षा नीति में भी बदलाव की आवश्यकता है। हम जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वह हमें इस योग्य नहीं बनाती कि हम उसका भविष्य में उपयोग कर सकें। हमारे देश की सामाजिक व धार्मिक मान्यताएं भी मनुष्य को अकर्मण्य बनाती है।

मंदिरों के, मस्जिदों के बाहर, रेलवे स्टेशनों पर, बस अड्डे के बाहर बड़ी संख्या में लोगों को भी भीख मांगते देखा जा सकता है। यदि सरकार ने बढ़ती बेकारी की समस्या का समाधान नहीं किया तो देश में आपराधिक तत्वों का अधिक से अधिक समावेश होगा।

इसके लिए उद्योग–धंधों का विकास करना चाहिए, जैसे–सूत कातना, कपड़े बुनना, अगरबत्ती निर्माण और खिलौनों का निर्माण आदि। इस हेतु सरकार को आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। ग्राम विकास और कृषि सुधार पर भी ध्यान देना चाहिए। कुटीर व ग्रामीण उद्योग धंधे भी नष्ट होने की कगार पर हैं। इसी कारण ग्रामीण शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। सरकार को चाहिए कि वह ग्रामीण जनता का ग्राम विकास हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करे। उनकी उपज की सही कीमत देकर, उसके क्रय–विक्रय की व्यवस्था करे।

कभी सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह देश आज गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। गरीबी, पीने के पानी की कमी, प्राकृतिक आपदाएं जैसे सूखा, बाढ़, भूकम्प, नक्सलवाद जैसी कुछ और मुख्य समस्याएं भी हैं।

लोगों के पास हाथ हैं, काम करने की इच्छा है लेकिन काम नहीं है। राजनेताओं के पास लंबे–चौड़े वायदे हैं, भविष्य के लिए आकर्षक योजनाएं हैं परंतु यह सब जनता को लुभाने के लिए है जिनका प्रयोग चुनाव जीतने के लिए किया जाता है। जनता को भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी से करना चाहिए। ◈

भ्रष्टाचार के पंजे में सेना भी

हर ओर कुर्सी के लिए लोग प्रयासरत हैं। आज दोषी व अपराधी धन की धौंस में स्वछंद घूम रहे हैं। धन-बल का प्रदर्शन, लूटमार, तस्करी आदि आम बात हो गई है। संपूर्ण व्यवस्था में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक व प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्र इसके दुष्प्रभाव से ग्रसित हैं। यह हमारी व्यवस्था में इस प्रकार समाहित हो चुका है कि आज इसे दूर करना प्रत्येक राष्ट्र के लिए लोहे के चने चबाने जैसा हो गया है।

vkf'ouh /ku t ; nkÙkj नौवीं
शिवनेरी स्कूल
खानापुर, महाराष्ट्र

Òष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है 'बिगड़ा हुआ आचरण' अर्थात् वह आचरण या कृत्य जो अनैतिक तथा अनुचित है। आज देश में भ्रष्टाचार की जड़ें अत्याधिक गहरी होती जा रही हैं। यदि समय रहते इस पर अंकुश नहीं लगाया गया तो यह समूचे तंत्र को अव्यवस्थित कर सकता है।

दुर्भाग्य से आज भारतवर्ष भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है जिसमें ईमानदारी से कार्य होता हो। आज विद्यालय में प्रवेश पाने का मामला हो या नौकरी मिलने का, सब जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है। सरकारी कार्यालयों में तो चक्का तभी घूमता है जब उसमें घूस का पेट्रोल डाला जाता है। पुलिस के भ्रष्टाचार का तो कहना ही क्या? जब अपराधी निकल जाता है, तब पुलिस हवा में डंडे चलाती है।

भारत में भ्रष्टाचार इसलिए पनपता है क्योंकि यहां का नेता स्वयं भ्रष्ट है। इसलिए वह भ्रष्ट लोगों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही नहीं करता।

यहां की न्याय–प्रणाली भी भ्रष्टाचार की लपेट में आ गई है। भारत का प्रेस अभी पूरी तरह सशक्त और जागरूक नहीं।

भ्रष्टाचार तभी दूर हो सकता है जब किसी सशक्त समूह के पास उसका पर्दाफाश करने का दृढ़–संकल्प हो। यह तभी संभव है जब भारत के शिक्षक, साहित्यकार, पत्रकार, कवि, कलाकार एकजुट होकर देश के नवयुवकों में आचरण की शुद्धता के संस्कार भरें और भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दें।

प्रशासनिक स्तर पर यह आवश्यक है कि भ्रष्टाचार के आरोपी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही हो। इसके लिए आवश्यक है कि प्रशासन कठोर, चुस्त तथा निष्पक्ष हो। हमारी व्यवस्था इतनी सुदृढ़ हो कि अपराधियों को उनके किए की सजा मिल सके, भले ही वह किसी पद पर आसीन हों।

सामाजिक स्तर पर यह आवश्यक है कि हम ऐसे तत्वों को बढ़ावा न दें जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हों या उसमें लिप्त हों। यह आवश्यक है कि उन्हें हम मुख्य धारा से अलग कर दें जब तक कि वे नीति के मार्ग पर नहीं चलने लगें।

व्यक्तिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि हम यह समझें कि समाज से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का उत्तरदायित्व हम पर ही है। भ्रष्टाचार के पूर्णतया उन्मूलन से पूर्व हमें इस पर विचार करना होगा कि वे क्या कारण हैं जिसके फलस्वरूप समाज के धनाड्य एवं सुशिक्षित अच्छे पदासीन व्यक्ति अधिक संख्या में भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। क्यों एक प्रशासनिक अधिकारी जबकि उसे पर्याप्त वेतन एवं सुविधाएं उपलब्ध हैं, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं।

जाहिर है कहीं न कहीं हमारी शिक्षा प्रणाली खामियों से परिपूर्ण है तथा सामाजिकता, नैतिकता का दिनोंदिन ह्रास हो रहा है। भारत में भ्रष्टाचार चर्चा और आंदोलनों का एक प्रमुख विषय रहा है। आजादी के एक दशक बाद से ही भारत भ्रष्टाचार की दलदल में धंसा नजर आने लगा था और उस समय संसद में इस बात पर बहस भी होती थी।

उस वक्त डॉ. लोहिया ने कहा था, ''सिंहासन और व्यापार के बीच संबंध भारत में जितना दूषित, भ्रष्ट और बेईमान हो गया है, उतना दुनिया के इतिहास में कहीं नहीं हुआ है।''

भ्रष्टाचार से देश की अर्थव्यवस्था और प्रत्येक व्यक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भारत में राजनीतिक एवं नौकरशाही का भ्रष्टाचार बहुत ही व्यापक है। बहुत कम लोग ही ऐसे हैं जो अपनी इच्छा और आकांक्षाओं की पूर्ति न होने पर भी संतुलन नहीं खोते हैं परंतु बहुत से लोग अपनी आकांक्षाओं और अपने वर्तमान में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं।

उनकी लोलुपता इतनी तीव्र हो उठती है कि वे अनैतिकता के रास्ते पर चलकर भी इच्छा पूर्ति में संकोच नहीं करते हैं। अंततः भ्रष्टाचार उत्पन्न होता है।

मनुष्य की यह लोलुपता आर्थिक अथवा सामाजिक किसी भी स्तर की हो सकती है। कुछ लोगों में सम्मान अथवा पद की आकांक्षा होती है तो कुछ में धन की लोलुपता आर्थिक अथवा सामाजिक किसी भी स्तर की होती है। इस प्रकार असंतोष ओर लोलुपता के कारण ही वे न्याय–अन्याय में अंतर नहीं कर पाते हैं तथा भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख हो जाते हैं।

भाषावाद, क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता, जातीयता आदि भी भ्रष्टाचार को प्रोत्साहित करते हैं। भ्रष्टाचार के अनेक रूप हैं– चोरबाजारी, रिश्वतखोरी, दलबदल, जोर–जबरदस्ती आदि। भ्रष्टाचार वर्तमान में एक नासूर बनकर समाज को खोखला करता जा रहा है। धर्म का नाम लेकर लोग अधर्म को बढ़ावा दे रहे हैं।

हर ओर कुर्सी के लिए लोग प्रयासरत हैं। आज दोषी व अपराधी धन की धौंस में स्वछंद घूम रहे हैं। धन–बल का प्रदर्शन, लूटमार, तस्करी आदि आम बात हो गई है। संपूर्ण व्यवस्था में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक व प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्र इसके दुष्प्रभाव से ग्रसित हैं। यह हमारी व्यवस्था में इस प्रकार समाहित हो चुका है कि आज इसे दूर करना प्रत्येक राष्ट्र के लिए लोहे के चने चबाने जैसा हो गया है।

आजकल तो सेना में भी भ्रष्टाचार फैल रहा है जिसके कारण देश की सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न लग गया है। भ्रष्टाचार किसी व्यक्ति विशेष या समाज की नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र की समस्या है। इसका निदान केवल प्रशासनिक स्तर पर हो सके, ऐसा संभव नहीं है। इसका समूल विनाश सभी के सामूहिक प्रयास के द्वारा ही संभव है। ◈

किसानों पर कौन देगा ध्यान?

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान। वह जीवन भर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता रहता है। तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उसकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते। हमारे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है। किसान की कृषि ही शक्ति है और यही उसकी भक्ति है।

◈ **vk'kkojh xk;dokM**
ओम साईं सेंट्रल पब्लिक स्कूल
सौसर, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश

vन्य समस्याओं को यदि अलग कर दें तो पानी की समस्या सबसे विकराल है। जल मुख्य रूप से इन कारणों से दूषित हो जाता है, जैसे–जल के स्थिर रहने से, जल में नगर की गंदगी, नालियों और नालों का जल मिलने से, जल में विभिन्न प्रकार के खनिज–लवणों के मिलने से, जल में छूत आदि रोगों के कीटाणुओं के मिलने से, ताल–तलैयों के जल में साबुन आदि से नहाने तथा कपड़े धोने से, जल–स्त्रोतों में कारखानों व फैक्टरियों आदि से रसायनों का स्त्राव होने से।

नदी, कुओं तथा अन्य जल स्त्रोतों के पास ही स्नान करने, कपड़े धोने, जूठे बरतनों को साफ करने से तथा तालाबों में स्नान करने तथा उनमें मलमूत्र बहाने से जल दूषित होता है। कल–कारखानों से निकला कूड़ा–कचरा तथा रासायनिक अवशिष्ट पदार्थों को जल–स्त्रोतों में गिरने से दूषित पानी अत्याधिक खतरनाक है।

दूसरी समस्या प्रदूषण की समस्या है। प्रदूषण की विकराल होती समस्या ने आधुनिक जन–जीवन को संकट में डाल दिया है। स्थानीय संगठनों

व व्यक्तियों से लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ तक इस समस्या से चिंतित है। प्रदूषण महात्रासदी का रूप धारण कर चुका है। वायु, जल, भोजन तथा ध्वनि का प्रदूषण विश्व के नगरों और बड़े कस्बों में अपनी विकराल शक्तियों व सीमाओं का प्रदर्शन कर रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली दुनिया का तीसरा सर्वाधिक प्रदूषित नगर है। प्रदूषण के चलते हमारे वन, जीव–जन्तु और जीवाणु, संसार के नागरिक भी इस त्रासदी के शिकार बनते जा रहे हैं। वायु में प्रदूषण कारखानों, वाहनों और घरों के चूल्हों से फैलता है। यह प्रदूषण मानव–जीवन के लिए बड़ा खतरा बन चुका है। इसके कारण नगरों में रहने वाले लोग फेफड़ों के कैंसर, दमा, आंखों के रोगों और चर्मरोगों के शिकार बनते जा रहे हैं। पूरे भारत की नदियां प्रदूषण से गंदी बन चुकी हैं। गंगा एक दूषित जलधारा बन गई है और अन्य मुख्य नदियों का भी यही हाल है।

ध्वनि प्रदूषण का सबसे अधिक प्रकोप शहरों व मुख्य राजमार्गों पर नजर आता है। अधिक शोर की वजह से हजारों व्यक्ति अपनी श्रवण शक्ति को खो बैठे हैं या कम सुनने लगे हैं। उच्च शोर के स्तरों में दिमागी बीमारियां और उच्च रक्तचाप हो सकता है। व्यक्ति अपना संतुलन भी खो सकता है।

आज के युग में ध्वनि प्रदूषण भी एक समस्या है। इसे वैज्ञानिक प्रगति ने पैदा किया है। मोटर, कार, ट्रेक्टर, जैट विमान, कारखानों के साइरन, मशीनें, लाऊडस्पीकर आदि ध्वनि–प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। अत्याधिक ध्वनि प्रदूषण से श्रवण–शक्ति पर बुरे प्रभाव पड़ने के साथ ही मानसिक विकृति तक हो सकती है।

हाल में पर्यावरण और वायु प्रदूषण का भारतीय कृषि पर प्रभाव शीर्षक से 'प्रोसिडिंग्स ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साईंस' में प्रकाशित एक शोध पत्र के नतीजों ने सरकार, कृषि विशेषज्ञों और पर्यावरणविदों की चिंता बढ़ा दी है। शोध के अनुसार भारत के अनाज उत्पादन में वायु प्रदूषण का सीधा और नकारात्मक असर देखने को मिल रहा है।

देश में धुएं में बढ़ोतरी की वजह से अनाज के लक्षित उत्पादन में कमी देखी जा रही है। करीब 30 वर्षों के आंकड़े का विश्लेषण करते हुए वैज्ञानिकों वे एक ऐसा सांख्यिकीय मॉडल विकसित किया जिससे यह अंदाजा मिलता है कि घनी आबादी वाले राज्यों में वायु प्रदूषण की वजह से गेहूं की पैदावार वर्ष 2010 के मुकाबले 50 फीसदी से कम रही।

खाद्य उत्पादन में करीब 90 फीसदी की कमी धुएं की वजह से देखी गई जो कोयला और दूसरे प्रदूषक तत्वों की वजह से हुआ। भूमंडलीय तापमान वृद्धि और वर्षा के स्तर की भी बदलाव में अहम् भूमिका है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की लेनिफर बनी के अनुसार ये आंकड़े चौंकने वाले हैं हालांकि इसमें बदलाव संभव है। वह कहती हैं, 'हमें उम्मीद है कि हमारे शोध से वायु प्रदूषण को कम करने के संभावित फायदों के लिए कोशिश की जाएगी।' असल में जब भी सरकार वायु प्रदूषण या इसकी लागत पर कोई चर्चा करती है और इसे रोकने के लिए नए कानून बनाने की बात करती है तब कृषि क्षेत्र पर विचार नहीं किया जाता है।

पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र में जलवायु परिवर्तन के लिए बने सरकार भी पैनल रिपोर्ट में भी इसी तरह की चेतावनी दी गई थी। 'जलवायु परिवर्तन–2014' प्रभाव, अनुकूलन और 'जोखिम' शीर्षक से जारी इस रिपोर्ट में कहा गया है कि इसका सबसे पहले प्रभाव महाद्वीपों और महासागरों में विस्तृत रूप ले चुका है।

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान। वह जीवन भर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता रहता है। तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उसकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते। हमारे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि है। एक कहावत है कि भारत की आत्मा किसान है जो गांवों में निवास करती है। किसान की कृषि ही शक्ति है और यही उसकी भक्ति है।

वर्तमान संदर्भ में हमारे देश में किसान आधुनिक विष्णु हैं। वह देशभर को अन्न, फल, साग–सब्जी आदि दे रहा है लेकिन बदले में उसे उसका पारिश्रमिक तक नहीं मिल पा रहा है।

जहां पहले देश में किसान की आत्महत्या की खबरें महाराष्ट्र के विदर्भ और आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र से ही आती थीं वहीं अब इसमें नए इलाके जुड़ गए हैं। इनमें बुदेलखंड जैसे पिछड़े इलाके ही नहीं बल्कि देश की हरित क्रांति की कामयाबी में अहम् भूमिका वाले हरियाणा, पंजाब पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्य शामिल हैं। अतः किसानों की तरफ अगर सरकार का ध्यान नहीं गया तो इसके परिणाम गंभीर होंगे। ◈

सर्वशिक्षा के दावे खोखले

सुविधा सम्पन्न बच्चे तो सब कुछ हासिल कर सकते हैं लेकिन सरकार उन नौनिहालों के बारे में भी सोचे जो गंदे नालों के किनारे रहते हैं या फुटपाथ पर सोते हैं। उन्हें न तो शिक्षा मिलती है, न ही आवास। सर्वशिक्षा के दावे पर दम भरने वाले भी इन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ नहीं पाते। पैसा कमाना इन बच्चों का शौक नहीं, बल्कि मजबूरी है।

◈ **vfdr dekj** आठवीं
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल
ठाकुरद्वारा बयेस्वर, उत्तराखण्ड

Òष्टाचार से केवल सीधे तौर पर आहत लोग ही परेशान हों, ऐसा नहीं है, बल्कि भ्रष्टाचार वह सांप है जो उसे पालने वालों को भी नहीं पहचानता। भ्रष्टाचार रूपी काला नाग कब किसको डस ले, इसका कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता। भ्रष्टाचार हर एक व्यक्ति के जीवन के लिए खतरा है। अतः हर व्यक्ति को इसे आज नहीं तो कल रोकने के लिए आगे आना ही होगा तो इसकी शुरुआत आज ही क्यों न की जाये?

अब मेरे सीधे सवाल उन लोगों से हैं जो भ्रष्ट हैं या भ्रष्टाचार के हिमायती हैं या जो भ्रष्टाचार की नदी में डुबकी लगाने की बात करते हैं। क्या वे उस दिन के लिए सुरक्षा कवच बना सकते हैं, जिस दिन...

- उन का कोई अपना बीमार हो और उसे केवल इसलिए नहीं बचाया जा सके, क्योंकि उसे दी जाने वाली दवाएं कमीशन खाने वाले भ्रष्टाचारियों द्वारा निर्धारित मानदण्डों पर खरी नहीं उतरने के बाद भी 'अप्रूव्ड' कर दी गयी थी?

- उनका कोई अपना बस में यात्रा करे और मारा जाये और उस बस की इस कारण दुर्घटना हुई हो, क्योंकि बस में लगाये गये पुर्जे कमीशन खाने वाले भ्रष्टाचारी द्वारा निर्धारित मानदंडों पर खरे नहीं उतरने के बावजूद अप्रूव्ड कर दिये थे?
- उनका कोई अपना खाना खाने जाये और उनके ही जैसे भ्रष्टाचारियों द्वारा खाद्य वस्तुओं में की गयी मिलावट के चलते तड़प–तड़प कर अपनी जान दे दे?
- कोई अपना किसी दुर्घटना या किसी गंभीर बीमारी के चलते अस्पताल में भर्ती हो और डॉक्टर बिना रिश्वत लिये उपचार करने या ऑपरेशन करने से साफ इनकार कर दे या विलम्ब कर दे और पीड़ित व्यक्ति बचाया नहीं जा सके?

आज का समाज झंझट पालना कतई नहीं चाहता। मां–बाप जानते हैं कि लड़की पैदा करने में सिवाय नुकसान के कोई फायदा नहीं है। वह विशुद्ध हानि और लाभ के गणित पर आधारित स्वार्थ एकल दर्शन है। लाखों बार यही विचार उठते हैं कि लड़की न पैदा करते तो बहुत अच्छा होता। स्वयं को अपराधबोध होने लगता है कि बेकार में लड़की पैदा की, एक और जलालत और अपने सिर ओढ़ ली।

कन्या भ्रूण हत्या की समस्या को रोकने का समाधान केवल व्यक्तियों की इच्छा पर निर्भर है। माँ–बाप क्या चाहते हैं यह सब उनके विवेक पर छोड़ देना चाहिये। मेरी सलाह यह है कि पहला बच्चा लड़की भ्रूण का समापन न करायें, किसी भी हालत में। यह न विचार करें कि आप के इस कार्य से लिंग का अनुपात कम हो रहा है या अधिक। यह एक सामाजिक और आर्थिक समस्या से जुड़ा हुआ पहलू है। इस समस्या का समाधान भी समाज को ही करना पड़ेगा।

सुविधा सम्पन्न बच्चे तो सब कुछ हासिल कर सकते हैं लेकिन सरकार उन नौनिहालों के बारे में भी सोचे जो गंदे नालों के किनारे रहते हैं या फुटपाथ पर सोते हैं। उन्हें न तो शिक्षा मिलती है, न ही

आवास। सर्वशिक्षा के दावे पर दम भरने वाले भी इन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ नहीं पाते। पैसा कमाना इन बच्चों का शौक नहीं, बल्कि मजबूरी है। शिक्षा के अभाव में अपने अधिकारों से अनभिज्ञ ये बच्चे बंधुआ मजदूर की तरह अपने जीवन को काम में खपा देते हैं और इस तरह देश के नौनिहाल शिक्षा अधिकार, जागरूकता व सुविधाओं के अभाव में अशिक्षा और अनभिज्ञता के नाम पर अपने सपनों की बलि चढ़ा देते हैं।

यदि हमें चाचा नेहरू के सपने को सच करना है तो सबसे पहले गरीबी और अशिक्षा के गर्त में फंसे बच्चों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना होगा तथा उनके अंधियारे जीवन में शिक्षा का प्रकाश फैलाना होगा। ऐसे बच्चे जिन का घर नहीं होता या होता भी है तो महज समझौता होता है, अगर उनके माँ–बाप उन्हें ऐसे कार्यों पर नहीं भेजेंगे तो परिवार नहीं चल सकेगा। यही उनका बचपन है। भारी बोझ है उनके कमजोर कंधों पर।

बालश्रम की बात करें तो आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक देश में फिलहाल लगभग पांच करोड़ बाल श्रमिक हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी भारत में सर्वाधिक बाल श्रमिक होने पर चिंता व्यक्त की है। ऐसे बच्चे कहीं बाल वेश्यावृत्ति में झोंके गये हैं या खतरनाक उद्योगों या सड़क के किनारे किसी ढ़ाबे में झूठे बर्तन धो रहे होते हैं या धार्मिक स्थलों व चौराहों पर भीख मांगते नजर आते हैं, अथवा साहेब लोगों के घरों में दासता का जीवन जी रहे होते हैं।

सरकार ने सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा बच्चों को घरेलू बाल मजदूर के रूप में काम पर लगाने के विरुद्ध एक निषेधाज्ञा भी जारी कर रखी है पर दुर्भाग्य से सरकारी अधिकारी, कर्मचारी, बुद्धिजीवी समाज के लोग ही इन कानूनों का मखौल उड़ा रहे हैं। बालश्रम के कारण बच्चे शोषण का शिकार होकर जाने–अनजाने कई अपराधों में लिप्त होकर अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

मानव की बढ़ती आबादी ने जंगलों को खत्म कर दिया है। बढ़ती जनता को रोजगार देने के लिए जंगलों को खत्म करने के बाद बढ़ता औद्योगीकरण अब हमारे गांव में पैर पसार रहा है। फलस्वरूप कंपनियों की फैक्ट्रियां अब गांव की शुद्ध जलवायु में जहर घोल रही हैं। यहां की उपजाऊ जमीन पर बसी फैक्ट्रियां अब गेहूं के दाने नहीं, कांच की गोलियां पैदा कर रही हैं।

इससे खाने–पीने की चीज़ों की उत्पादकता में कमी आ रही है। वर्षा का पानी पुनः धरती में पहुंचने में असमर्थ है। क्योंकि धरती का एक विशाल हिस्सा मानव ने अपने ऐशो–आराम से ढक दिया है। पानी का वाष्पीकरण हो जाता है, धरती अपनी नमी खो रही है और उसकी बंजरता बढ़ रही है।

बढ़ती जनसंख्या ने बड़े जगलों को उन के जीवों के साथ उन्हें चिड़ियाघरों में बदल दिया है। पेड़ों पर वास करने वाले पंछी लोगों के घरों में घोंसला बनाकर रहते हैं। प्रकृति के बारे में एक बात कही जाती है कि प्रकृति मानव के खिलाफ है। थोड़ा सा भी परिवर्तन मानव के लिए अझेल हो जाता है। एक बार सोचकर देखिये हमने अन्य जीवों की जिंदगी में कैसा भूचाल ला दिया। ◈

आशा है हमारा देश इन समस्याओं से जल्द ही निजात पायेगा। विज्ञान एवं तकनीक का प्रयोग रचनात्मक एवं मानवता की रक्षा हेतु होगा। राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर एवं नानक की इस भूमि पर सुरसरि प्रवाहित होगी। सुख-समृद्धि के स्वर्ण युग का श्रीगणेश होगा। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना परिपोषित होगी।

परस्पर हो प्रेम व भाईचारा

◈ **vfdrk dLok** आठवीं
तुलसी अमृत विद्यापीठ माध्य. विद्यालय
आमेट, राजसमंद, राजस्थान

gमारा देश सन् 1947 में स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति से हमें स्वराज्य तो मिला लेकिन सुराज्य के दर्शन सात दशक बीतने पर भी नहीं हुए। आज भी हमारा राष्ट्र अधोगति की निद्रा में निमग्न है। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी, सांप्रदायिकता, ऊँच–नीच की भावना, भाषावाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, असहिष्णुता, नक्सलवाद, स्वार्थपूर्ण राजनीति देश को विखण्डन की ओर ले जा रही है।

egxkÃ ,oa lek/kku

वर्तमान में भारत जिन आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है उसमें महंगाई की मार सबसे अधिक भयावह, कष्टप्रद और घातक सिद्ध हो रही है। महंगाई के कारण आम आदमी का जीवनयापन मुश्किल हो गया है। आम उपयोगी वस्तुओं के भाव आकाश को छू रहे हैं। विदेशी मुद्रा प्राप्ति हेतु सरकार द्वारा आम वस्तुओं का निर्यात, समय–समय पर सरकार द्वारा लगाए जाने वाले कर, वाहनों के किराये वृद्धि आदि महंगाई को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं।

महंगाई को कम करने के लिए सरकार सक्रिय होकर मुद्रा प्रसार को रोके, आवश्यक वस्तुओं हेतु सस्ते मूल्यों की दुकानें खोले, आवश्यक वस्तुओं का स्वयं भण्डारण करे, कर–वंचकों, जमाखोरों की धरपकड़ कर कठोर कार्यवाही करे तथा कठोर सजा का प्रावधान रखे। सरकारी कर्मचारियों का समय–समय पर महंगाई भत्ता बढ़ाने की अपेक्षा उस पर नियंत्रण करे, दोहरी मूल्य प्रणाली का आवश्यकतानुसार उपयोग कर तथा मांग व पूर्ति के अनुसार ही उत्पादन का आधार तैयार करे तो निश्चय ही महंगाई को रोका जा सकता है।

cjkstxkjh ,oa lek/kku

बेरोजगारी का अर्थ है काम करने योग्य एवं काम करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए काम का अभाव। वर्तमान में बेरोजगारी की समस्या विश्वव्यापी समस्या है। देश का शिक्षित एवं बेरोजगार युवक आक्रोश की अभिव्यक्ति हड़ताल करने, बसें जलाने एवं राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुंचाने में कर रहा है। जनसंख्या की वृद्धि को भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण माना जाता है।

भारत जैसे विकासशील देश को अपनी बेरोजगारी के उन्मूलन हेतु सर्वप्रथम जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम को हाथ में लेकर परिवार नियोजन, महिला शिक्षा, शिशु स्वास्थ के कार्य अपनाने होंगे। कुटीर एवं लघु उद्योग का विकास किया जाना चाहिए। वर्तमान शिक्षा पद्धति को रोजगारोन्मुख बनाए जाने की महत्ती आवश्यकता है। ऐसे अनेक उपाय कर इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

lkEçnkf;drk ,oa lek/kku

साम्प्रदायिकता हमारी राष्ट्रीय एकता पर कुठाराघात कर रही है। विभिन्न संप्रदायों के पारस्परिक संघर्ष देश को कमजोर बना रहे हैं। प्रत्येक समुदाय अपने ही स्वार्थ में लिप्त है। इस संकुचित भावना का परित्याग नितान्त ही आवश्यक है। हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों तथा अन्य समुदाय के लोगों में परस्पर सद्भाव, प्रेम तथा भाईचारा हो।

vkradokn ,o lek/kku

आतंकवाद आज विश्व के समक्ष एक चुनौतीपूर्ण समस्या है। पंजाब, जम्मू–कश्मीर सर्वप्रथम आतंकवाद के शिकार थे। अब तो लगभग सारे देश में आतंकवादी घटनाएं हो रही हैं। अक्षरधाम मंदिर, संसद भवन, दिल्ली का लालकिला, मुम्बई की लोकल ट्रेनें, बनारस का संकटमोचन मंदिर आतंकी प्रहार झेल चुके हैं। समझौता एक्सप्रेस में बम विस्फोट, मुम्बई के ताज होटल पर हमला तथा पठानकोट एअरबेस पर हमला आतंकवाद की भयानक घटनाएं हैं।

भारतीय नेताओं को स्वार्थ तथा सत्ता–लोलुपता त्याग कर देश की आन्तरिक सुरक्षा को अभेद बनाना होगा। संसार के सभी जिम्मेदार राष्ट्रों को संगठित होकर आतंकवाद के विनाश को रोकने में सक्रिय भागीदारी करनी होगी। शिक्षा एवं रोजगार की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

tul[;k of) ,o lek/kku

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हमारे देश की ज्वलंत समस्या है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हर एक राष्ट्र के लिए अभिशाप है। देश में विकास योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास का भरसक प्रयास करने पर भी जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण गरीबी, महंगाई तथा बेरोजगारी घटने के स्थान पर बढ़ती जा रही है। परिवार नियोजन के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण संभव है। परिवार नियोजन हमारे देश के लिए वरदान स्वरूप है। इससे परिवार का तो हित होगा ही, राष्ट्र का आर्थिक विकास भी होगा, राष्ट्र के समृद्ध एवं संपन्न होने में सहायता मिलेगी।

fxjrk fyxkuikr ,o lek/kku

भारत इस समय विश्वभर में सबसे युवा देशों में से एक है क्योंकि भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 60.29 प्रतिशत भाग कार्यशील जनसंख्या का है। भारत में लिगांनुपात में भारी विषमता है। यह स्थिति बालिकाओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार को प्रदर्शित करती है।

इस स्थिति को सुधारने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जाने चाहिए। भ्रूण के लिंग परीक्षण पर नियंत्रण व रोक लगाने के लिए कानून बनाकर इसे दण्डात्मक अपराध घोषित कर दिया जाए। लिंगानुपात में सुधार के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना एक ऐसा ही अभियान है।

आशा है हमारा देश इन समस्याओं से जल्द ही निजात पायेगा। विज्ञान एवं तकनीक का प्रयोग रचनात्मक एवं मानवता की रक्षा हेतु होगा। राम–कृष्ण, बुद्ध, महावीर एवं नानक की इस भूमि पर सुरसरि प्रवाहित होगी। सुख–समृद्धि के स्वर्ग युग का श्रीगणेश होगा। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना परिपोषित होगी। ◈

हमें धरती पर स्वच्छ जल के महत्व को समझना चाहिये और अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिये कि हम पानी की बर्बादी करने के बजाय उसे बचायें। हमें अपने स्वच्छ जल को औद्योगिक कचरे, सीवेज, खतरनाक रसायनों और दूसरी गंदगियों से गंदा होने और प्रदूषित होने से बचाना चाहिये।

पानी की बर्बादी नहीं, उसे बचाएं

◈ **r|ck cxe** ग्यारहवीं
सरस्वती विद्यालय
अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली

vाजादी के बाद भारत ने तमाम क्षेत्रों में ज़बरदस्त तरक्की की है और विश्व के मानचित्र पर अपनी छवि बेहतर बनायी है। फिर भी भारत में अनेक समस्याएं हैं जिसके कारण देश की प्रगति धीमी है। कुछ समस्याएं व उनके समाधान नीचे दर्शाये जा रहे हैं।

Ò"Vkpkj rFkk lek/kku

सारी समस्याओं में यदि कोई समस्या देश के विकास को बाधित कर रही है तो वह है भ्रष्टाचार की समस्या। आज इससे सारा देश संत्रस्त है। लोकतंत्र की जड़ों को खोखला करने का कार्य काफी समय से इसके द्वारा हो रहा है। भ्रष्टाचार ने आज पूरे देश की अपने आगोश में ले लिया है। वास्तव में भ्रष्टाचार के लिए आज सारा तंत्र जिम्मेदार है। एक आम आदमी भी किसी शासकीय कार्यालय में अपना कार्य शीघ्र करवाने के लिए सामने वाले को 'बंद लिफाफा' सहज में थमाने को तैयार है। 100 में से 80 आदमी आज इसी तरह कार्य करवाने के फिराक में हैं और जब एक बार किसी को अवैध ढंग से ऐसी रकम

मिलने लग जाये तो निश्चित ही उसकी तृष्णा और बढ़ेगी और उसी का परिणाम आज सारा भारत देख रहा है।

वास्तव में देश में यदि भ्रष्टाचार है तो न सिर्फ साफ स्वच्छ छवि के नेताओं का चयन करना होगा बल्कि लोकतंत्र के नागरिकों को भी सामने आना होगा। उन्हें प्राणपण से यह प्रयत्न करना होगा कि भ्रष्ट लोगों को समाज से न सिर्फ बहिष्कृत किया जाए बल्कि उच्चस्तर पर भी भ्रष्टाचार में संलिप्त लोगों का बायकॉट हो। अपनी आम जरूरतों को पूरा करने एवं शीघ्रता से निपटने के लिए 'बंद लिफाफे' की प्रवृत्ति से बचना होगा।

egxkÃ ,o lek/kku

महंगाई आज हर किसी के मुख पर चर्चा का विषय बन चुकी है। विश्व का हर देश इससे ग्रसित होता जा रहा है। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए तो यह चिंता का विषय बनता जा रहा है। महंगाई ने आम जनता का जीवन अत्यंत दुष्कर कर दिया है। आज दैनिक उपभोग की वस्तुएं हों अथवा रिहायशी वस्तुएं, हर वस्तु की कीमत दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है और पहुंच से दूर होती जा रही है।

वेतनभोगियों के लिए तो यह अभिशाप की तरह है। महंगाई की तुलना में वेतन नहीं बढ़ने से वेतन और खर्च में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है। ऐसे में सरकार को हस्तक्षेप करके कीमतों पर नियंत्रण रखने के दूरगामी उपाय करने चाहिए और ऐसे उपाय करने चाहिए ताकि महंगाई किसी को न सताए।

महंगाई के लिए तेजी से बढ़ती जनसंख्या, सरकार द्वारा लगाए जाने वाले अनावश्यक कर तथा मांग की तुलना में आपूर्ति की कमी है। बेहतर बाज़ार व्यवस्था से कुछ हद तक मुक्ति मिलेगी। पेट्रोलियम उत्पाद, माल–भाड़ा, बिजली आदि जैसी मूलभूत चीजों पर जब–तब बढ़ोतरी नहीं करनी चाहिए। इन में वृद्धि का विपरीत प्रभाव हर वस्तु के मूल्य पर पड़ता है। सरकार ही महंगाई को नियंत्रित कर सकती है।

cjkt xkjh ,oa lek/kku

देश में बेकारी की समस्या के मूल कारणों पर यदि हम दृष्टि डालें तो हम देखते हैं कि आर्थिक संपन्नता के लिए व्यवसाय एवं उद्योगों के अतिरिक्त प्रायः लोग अन्य आर्थिक स्त्रोत के रूप में नौकरी को विशेष महत्व देते हैं। अतएव शिक्षित, अर्धशिक्षित व उच्च शिक्षित सभी वर्ग के लोगों के लिए नौकरी की समस्या राष्ट्रीय स्तर की समस्या बन चुकी है।

राष्ट्र के सम्मुख बेरोजगारी की इस विकराल समस्या का प्रमुख कारण हमारे देश की शिक्षा प्रणाली रही है। शिक्षा प्रणाली में विशेष परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। इसका आधार प्रयोगात्मक न होने के कारण यह देश के नवयुवकों को स्वावलंबी बनाने तथा उनमें आत्मविश्वास कायम करने में पूर्णतया असफल रही है।

अतः बेरोजगारी जैसी राष्ट्रीय समस्या को दूर करने हेतु सभी स्तरों से प्रयास होना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि देश में ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू हो जिसका आधार प्रायोगिक हो। युवकों को स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहन मिले जिसके लिए उन्हें तकनीकी एवं औद्योगिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। यह केवल सरकार का ही उत्तरदायित्व नहीं है अपितु व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर भी नवचेतना का संचार करना एवं सकारात्मक प्रयास करना आवश्यक है।

ty leL;k ,oa lek/kku

स्वच्छ जल बहुत तरीकों से भारत और पूरे विश्व के दूसरे देशों में लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहा है, साथ ही स्वच्छ जल का अभाव एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। इस बड़ी समस्या को अकेले या कुछ समूह के लोग मिलकर नहीं सुलझा सकते हैं। यह ऐसी समस्या है जिसको वैश्विक स्तर पर लोगों को मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।

हमें धरती पर स्वच्छ जल के महत्व को समझना चाहिये और अपनी

पूरी कोशिश करनी चाहिये कि हम पानी की बर्बादी करने के बजाय उसे बचायें। हमें अपने स्वच्छ जल को औद्योगिक कचरे, सीवेज, खतरनाक रसायनों और दूसरी गंदगियों से गंदा होने और प्रदूषित होने से बचाना चाहिये।

vkj{k.k vkj lek/kku

आरक्षण उस व्यक्ति को मिलना चाहिए जो सही मायने में उसका हकदार हो। आज हमारे देश में आरक्षण चारों ओर फैला हुआ है। सभी जगह अमीर–गरीब, पुरुष–स्त्री, उच्च वर्ग–निम्न वर्ग, पवित्र–अपवित्र आदि बात–बात पर भेदभाव है। इन्हें हटाने के लिए काफी सारे कानून बन गए हैं। हर व्यक्ति को इसमें मिलकर भागीदार होना पड़ेगा और सोचना और वचन लेना होगा कि न तो वे किसी के साथ भेदभाव करें और न होने दें। ◈

आफत लेकर आई, कमरतोड़ महंगाई

वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि का क्रम इतना तीव्र है कि आप किसी चीज को दोबारा खरीदने जाते हैं तो वस्तु का मूल्य पहले से अधिक हो चुका होता है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थ गेहूं के मूल्य की लगभग एक-तिहाई बढ़ोतरी इस समस्या के विकराल होने का संकेत दे रही है।

◈ fpUe;h 'kekZ दसवीं
स्टेनफोर्ड इंटरनेशनल स्कूल
उज्जैन, मध्यप्रदेश

Vाजादी के 70 सालों में भारत की तस्वीर यकीनन बदली है। भारत के तमाम क्षेत्रों में जबरदस्त तरक्की हुई है और विश्व के मानचित्र पर उसने अपनी छवि बेहतर बनाई है, वहीं दूसरी ओर कई जगहों पर समस्याएं भी बढ़ती जा रही हैं। माना कि विज्ञान का क्षेत्र हो, व्यापार का, खेल का या फिर कोई और, देश ने सभी क्षेत्रों में झंडे गाड़े हैं। इसके बावजूद आम भारतीय गरीबी, बदहाली, परेशानी की जिंदगी जी रहा है।

भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति और सत्ता का गलत इस्तेमाल अपनी आत्म–संतुष्टि और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिए करता है। इसमें सरकारी नियम–कानूनों की धज्जियां उड़ा कर फायदा पाने की कोशिश होती है। भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में गहराई से व्याप्त हो चुकी हैं और लगातार फैल रही हैं। यह कैंसर जैसी बीमारी की तरह है जो बिना इलाज के खत्म नहीं होगी। इसका एक सामान्य रूप पैसा और उपहार लेकर काम करना दिखाई देता है।

कुछ लोग अपने फायदे के लिये दूसरों के पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं। सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में काम करने वाले भ्रष्टाचार में लिप्त होते हैं और साथ ही अपनी छोटी सी इच्छा की पूर्ति के लिये किसी भी हद तक जा सकते हैं।

भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान तीन स्तरों में सम्भव है– प्रशासनिक स्तर, सामाजिक स्तर और व्यक्तिगत स्तर।

प्रशासनिक स्तर पर यह आवश्यक है कि भ्रष्टाचार के आरोपी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही हो। इसके लिए आवश्यक है कि प्रशासन कठोर, चुस्त तथा निष्पक्ष हो। हमारी व्यवस्था इतनी सुदृढ़ हो कि अपराधियों को उनके किये की सजा मिल सके फिर भले ही वह किसी भी पद पर आसीन क्यों न हो।

व्यक्तिगत–सामाजिक स्तर पर यह आवश्यक है कि हम यह समझें कि समाज से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का उत्तरदायित्व हम पर ही है। तब निःसंदेह हम भविष्य में भ्रष्टाचार रहित समाज की कल्पना कर सकते हैं। भ्रष्टाचार के पूर्णतया उन्मूलन से पूर्व हमें इस पर विचार करना होगा कि वे क्या कारण हैं जिनकी वजह से समाज के धनाढ्य एवं सुशिक्षित उच्च पदासीन व्यक्ति अधिक संख्या में भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

सामाजिक स्तर पर यह आवश्यक है कि हम ऐसे तत्वों को बढ़ावा न दें जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं या उसमें लिप्त हैं। यह आवश्यक है कि उन्हें हम मुख्य धारा से अलग कर दें जब तक कि वे नीति के मार्ग पर नहीं चलने लगें।

देहज भारतीय समाज के लिए अभिशाप है। दहेज ने हमारी सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को खराब कर दिया है। दहेज की कुप्रथा के कारण नारी सामाजिक तिरस्कार, तलाक और आत्महत्या की ओर बढ़ रही है। शिक्षा के प्रसार का भी दहेज की मनोवृत्ति पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है क्योंकि जो युवक जितना ज्यादा अधिक शिक्षित होता है, उसकी दहेज की मांग उतनी ही बढ़ जाती है।

एक तरह से वर की ही बोली लगाई जाती है और अंततः नारी इस प्रथा से तंग आकर खुद के जीवन को ही अभिशाप समझने लगती है। कभी–कभी तो दहेज प्रथा इतना क्रूर रूप धारण कर लेती है कि ससुराल वाले या तो बहू को आत्महत्या करने पर मजबूर कर देते हैं या फिर विष देकर मार देते हैं। इस तरह दहेज प्रथा भारतीय समाज पर बहुत बड़ा कलंक है। दहेज की इस दीमक को जन–जागरण द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है।

इसके निवारण के लिये सरकार ने बहुत सख्त कानून बनाए हैं ताकि लालची लोगों को कानून का भय हो। आज की युवा पीढ़ी भी अपनी संकल्प–शक्ति से दहेज प्रथा को समाप्त कर सकती है, क्योंकि नारी नव पीढ़ी की जननी है, अतएव उसका आदर, सम्मान आवश्यक है।

भारत की बहुत सी आर्थिक समस्याओं में महंगाई की समस्या एक मुख्य है। वर्तमान समय में महंगाई की समस्या अत्यंत विकराल रूप धारण कर चुकी है। एक दर से बढ़ने वाली महंगाई तो आम जनता किसी न किसी तरह से सह लेती है लेकिन कुछ समय से खाद्यान्नों और कई उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में भारी वृद्धि ने परेशान कर दिया है।

वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि का क्रम इतना तीव्र है कि आप किसी चीज को दोबारा खरीदने जाते हैं तो वस्तु का मूल्य पहले से अधिक हो चुका होता है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थ गेहूं के मूल्य की लगभग एक–तिहाई बढ़ोतरी इस समस्या के विकराल होने का संकेत दे रही है।

कीमतों में वृद्धि के कारणों को दूर करने के राष्ट्रीय संस्कार लिए राष्ट्र के कर्णधार यदि अपने व्यक्तिगत और दलगत स्वार्थों से ऊपर उठकर विचार करें तो देश अपने सभी विद्यमान तथा उपलब्ध साधनों के आधार पर राष्ट्र की प्रगति तथा सुख–समृद्धि के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर कर सफलता अर्जित कर सकता है। ◈

बड़े-बड़े वादे हो गए बेमानी

◈ fu'kk dekjh nkl दसवीं
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी
बालिका विद्यालय
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

हालांकि दहेज को रोकने के लिए समाज में संस्थाएं बनी हैं, युवकों से प्रतिज्ञा पत्रों पर हस्ताक्षर भी लिए गये हैं, कानून भी बने हैं परंतु समस्या ज्यों की त्यों है। इस प्रथा को रोकने के लिए वास्तव में आवश्यकता है जन-जागृति की। जब तक युवक दहेज का बहिष्कार नहीं करेंगे और युवतियां दहेज-लोभी युवकों का तिरस्कार नहीं करेंगी, तब तक यह सामाजिक कोढ़ चलता रहेगा।

Vाज देश की स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमें क्या मिला और हमने क्या खोया, यह विचारणीय हो जाता है। समस्याएं धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक–सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक कई प्रकार की होती या हो सकती हैं। यों तो हर युग–काल में किसी न किसी तरह की समस्या से मानव–सभ्यता और प्रत्येक वह भूभाग, जिसे देश कहा जाता है, आक्रांत रहते हैं पर कई बार किसी देश विशेष के सामने सभी तरह की समस्याओं का अम्बार तक लग जाया करता है।

आज अपने देश की दशा कुछ ऐसी ही बनी हुई है। वह ऊपर कही गई सभी समस्याओं से आक्रांत होकर पार पाने के लिए पूरी तरह जूझ रहा है। हमारे देश में निम्नलिखित समस्याएं हैं जिन पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है।

i;koj.k&çn"k.k % 'पर्यावरण' का शब्दिक अर्थ है चारों ओर का वातावरण जिसमें हम सब सांस लेते हैं। इसके अंतर्गत वायु, जल,

धरती, ध्वनि आदि से युक्त पूरा प्राकृतिक वातावरण आ जाता है। आज हमारी सबसे बड़ी समस्या यही है कि जिस पर्यावरण में हमारा जीवन पलता है, वही प्रदूषित होता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण है–अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रगति। अधिक उत्पादन की होड़ में हमने अत्याधिक कल–कारखाने लगा लिये हैं। उनके द्वारा उत्पादित रासायनिक कचरा, गंदा जल और मशीनों से उत्पन्न शोर हमारे पर्यावरण के लिए खतरा बन गए हैं।

परमाणु ऊर्जा के प्रयोग ने आकाश में व्याप्त ओजोन गैस की परत में छेद कर दिया है। प्रदूषण बढ़ने का दूसरा बड़ा कारण है–जनसंख्या विस्फोट। अत्याधिक जनसंख्या को अन्न–जल–स्थल देने के लिए वनों का काटना आवश्यक हो गया। इससे भी पर्यावरण का संतुलन बिगड़ा।

fuokj.k % प्रदूषण की रोकथाम का उपाय लोगों के हाथ में है। इसे जनचेतना से रोका जा सकता है। यद्यपि सरकार भी जनहित में अनेक उपाय कर रही है। हरियाली को बढ़ावा देना, वृक्ष उगाना, प्रदूषित जल और मल का उचित संशोधन करना, शोर पर नियंत्रण करना ये उपाय सरकार और जनता दोनों को अपनाने चाहिये। हर व्यक्ति इस प्रदूषण को रोकने की ठान ले तभी इसका निवारण संभव है।

ngt çFkk % दहेज प्रथा भारतीयों के लिए अभिशाप है। यह कुप्रथा घुन की तरह समाज को खोखला बनाती जा रही है। इसने नारी–जीवन और सामाजिक व्यवस्था को तहस–नहस करके रख दिया है। दुर्भाग्य से आजकल दहेज की जबरदस्ती मांग की जाती है। दूल्हों के भाव लगते हैं।

इस बुराई की हद यहां तक बढ़ गई है कि जो जितना शिक्षित है, समझदार है, उसका भाव उतना ही तेज है। दहेज–प्रथा के दुष्परिणाम विभिन्न हैं या तो कन्या के पिता को लाखों का दहेज देने के लिए घूस, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, काला बाजार आदि का सहारा लेना पड़ता है या उसकी कन्याएं अयोग्य वरों के मत्थे मढ़ दी जाती हैं।

fuokj.k % हालांकि दहेज को रोकने के लिए समाज में संस्थाएं बनी हैं, युवकों से प्रतिज्ञा पत्रों पर हस्ताक्षर भी लिए गये हैं, कानून भी बने हैं परंतु समस्या ज्यों की त्यों है। इस प्रथा को रोकने के लिए वास्तव में आवश्यकता है जन–जागृति की। जब तक युवक दहेज का बहिष्कार नहीं करेंगे और युवतियां दहेज–लोभी युवकों का तिरस्कार नहीं करेंगी, तब तक यह सामाजिक कोढ़ चलता रहेगा।

vkradokn dh leL;k % आतंकवाद एक ऐसा जहर है जिसने पूरे विश्व को विषाक्त बना रखा है। आतंकवाद का जन्म कट्टरवाद की कोख से होता है। आतंकवाद के दानव ने भारत को अपनी चपेट में कई सालों से ले रखा है। हमारा पड़ोसी राष्ट्र जब प्रत्यक्ष युद्धों में हमारा बाल भी बांका न कर पाया तो उसने देश में अशांति और हिंसा फैलाने के लिए आतंकवाद का सहारा लिया।

सीमा पार से प्रायोजित यह आतंकवाद सालों से हमारी अर्थव्यवस्था का नुकसान तो कर ही रहा है, हमारे हजारों लोग भी इस हिंसा की चपेट में आ चुके हैं। पहले पंजाब और अब कश्मीर में पाक प्रशिक्षित आतंकवादी कहर बरपा रहे हैं।

fuokj.k % आतंकवाद की समस्या मनुष्यों की बनाई हुई है, इसलिए आसानी से सुलझाई जा सकती है। जिस दिन अमेरिका की तरह पूरा विश्व दृढ़ संकल्प कर लेगा और आतंकवाद को जीने–मरने का प्रश्न बना लेगा, उस दिन यह धरती आतंक से रहित हो जायेगी।

c<rh egaxkÃ % आजादी के पहले तय तो यह हुआ था कि देश आजाद होगा तो हर घर में चिराग जलेगा पर हुआ यह कि पूरे शहर को भी एक चिराग नहीं मिला। बड़े–बड़े वादे, बड़ी–बड़ी कसमें सब बेमानी हो गये। आम आदमी की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। गरीबी, भुखमरी की पीड़ा से ग्रस्त समाज का एक बड़ा हिस्सा, जो दलित कहलाता है, आज भी वैसे ही छटपटा रहा है, तड़प रहा है। हमारे देश में महंगाई बढ़ती जा रही है।

इसके प्रमुख कारण हैं शासक तथा व्यापारी वर्ग का भ्रष्ट आचरण। हमारे यहां बाजार की यह स्थिति है कि क्या मजाल एक बार किसी चीज का दाम बढ़कर घट जाए।

fuokj.k % अगर हम बढ़ती हुई महंगाई पर नियंत्रण करना चाहते हैं तो हमें एकजुट होकर ऐसे लोगों के खिलाफ अभियान छेड़ना होगा जो लोग जन सामान्य के लिए आवश्यक चीजों को बाजार से गायब कर देते हैं, फिर उनके दाम बढ़ाकर उन्हें ब्लैक में बेचते हैं। सरकार को भी यही चाहिए कि वह जीवन के लिए जरूरी चीजों का एक दाम निश्चित कर दे ताकि व्यापारी वर्ग उन्हें मनमाने दामों में बेच न सके। चोर बाजारी करने वाले तथा काला धंधा करने वालों के साथ सरकार को सख्ती से पेश आना चाहिए।

Ò"Vkpkj % भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है। भाई–भतीजावाद, गुटबंदी, बेईमानी, मिलावट, रिश्वत, छल, कपट, धोखाधड़ी आदि भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण हैं। इस भ्रष्टाचार रूपी दानव ने संपूर्ण भारत को अपनी चपेट में ले रखा है। भ्रष्टाचार आज केवल भारत की ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की समस्या है।

fujkdj.k % भ्रष्टाचार दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं। भारतीय संस्कृति की ओर ध्यान आकृष्ट करना, चुनाव प्रक्रिया को बदलना, कर प्रणाली में सुधार। शासन व्यय में कटौती, देश–भक्ति की भावना पैदा करना, स्वदेशी चिंतन अपनाना, कठोर कानून बनाना आदि।

इन समस्याओं के अलावा भी राष्ट्र की कुछ अन्य समस्याएं हैं, जैसे बेरोजगारी की समस्या, पृथ्वी पर बढ़ता तापमान, भ्रूणहत्या, बाल मजदूरी, अन्य वे जिन पर भी हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। ◈

वृद्धाश्रमों की जरूरत क्यों?

◈ T;krh exr"k [kMdj आठवीं
के.रा.कोतकर माध्य. व
उच्च माध्य. विद्यालय
डोंबिवली पूर्व, महाराष्ट्र

हमारे देश में अब तो वृद्धाश्रमों का जमाना आ गया है। बूढ़े माँ-बाप को वृद्धाश्रमों में भेजकर बेटे अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। छोटे-छोटे नाती-पोतों के सान्निध्य का सुख भी बूढ़ों से छीन लिया जाता है। हम बड़े-बूढ़ों के अनुभवों से लाभ उठाएं, उनके ज्ञानकोश को व्यर्थ न जाने दें। उन्हें उचित आदर-मान दें।

हमारा भारत एक विशाल देश है पर हमारे देश में कई समस्याएं हैं। इन समस्याओं का समाधान ढूंढने का कर्तव्य हम जैसे नागरिकों की जिम्मेदारी है। भारत में आज भी साक्षरता की तुलना में निरक्षता कई गुणा ज्यादा है। देश के लोखों गांव आज भी अशिक्षा के अंधकार में डूबे हुए हैं। अनपढ़ किसानों को खेती की आधुनिक पद्धतियों की जानकारी नहीं मिलती। शहरों में निरक्षर मजदूर पशुओं की तरह पेट पाल रहे हैं। जब देश के अधिकतर नागरिक निरक्षर हों, तब देश की वास्तविक प्रगति की कल्पना कैसे की जा सकती है?

अनपढ़ जनता तथाकथित नेताओं के जाल में आसानी से फंस जाती है। अधिकारी भी अनपढ़ व्यक्ति का शोषण करते हैं। अपने अधिकारों और कर्तव्यों का उचित ज्ञान न होने से अशिक्षित लोग कभी आदर्श नागरिक नहीं बन सकते।

निरक्षरता के अभिशाप से लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए सरकार और कई सामाजिक संस्थाएं भरसक प्रयत्न कर रही हैं। फिर भी

समय की मांग है कि निरक्षता–निवारण के लिए विशेष प्रयत्न किए जाएं। गांव–गांव में आदर्श विद्यालयों की स्थापना की जाए। प्रौढ़–शिक्षा के वर्गों का सही ढंग से संचालन किया जाए। माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा दी जाए। गांव–गांव में पुस्तकालय और वाचनालय शुरू किए जाएं। शिक्षण सामग्री उचित मूल्य पर उपलब्ध कराई जाए।

हमारे देश के लिए वह सचमुच स्वर्ण–दिन होगा जब भारत का जन–गण निरक्षरता के अभिशाप से मुक्त होगा। 'संपूर्ण साक्षर भारत' की कल्पना न जाने कब साकार होगी?

इस संसार में उजाला है, तो अंधेरा भी है। फूलों के साथ कांटे भी हैं। यहां अमीरी है तो गरीबी भी है। मुंबई और दिल्ली जैसे महानगरों में जहां रईसों की भव्य कोठियां, इमारतें और बंगले हैं, वहां लाखों झोपड़ियां भी हमें दिखाई पड़ती हैं।

गरीबी दुर्भाग्य का सबसे दर्दनाक पहलू है। गरीबों को टूटे–फूटे घरों या झोपड़ियों में रहना पड़ता है। बरसात में टपकती छतें ही उनके भाग्य में लिखी हैं। तन ढकने के लिए उन्हें मामूली कपड़ों में गुजारा करना पड़ता है। भोजन के नाम पर वे किसी तरह पेट भर लेते हैं। कई बार उन्हें भूखे भी रहना पड़ता है। बिजली के पंखों के अभाव में उनकी गर्मियां बिलबिलाते हुए ही बीतती हैं। जाड़े की कड़कड़ाती ठंड का मुकाबला उन्हें बिना कंबल या रजाई के ही करना पड़ता है।

गरीब माता–पिता चाहकर भी अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा नहीं दिला पाते। बच्चे कुछ बड़े हुए नहीं कि उन्हें कहीं मेहनत–मजदूरी के काम में लग जाना पड़ता है। बाल–मजदूरी पर रोक लगाने पर भी दुनिया में करोड़ों बच्चे खतरनाक उद्योगों में काम पर लगे हुए हैं। बचपन की मौज–मस्ती से उनका परिचय ही नहीं हो पाता। सचमुच, गरीबी एक भीषण अभिशाप है। 'गरीबी हटाओ' का नारा कब सफल होगा?

हमारे देश में अब तो वृद्धाश्रमों का जमाना आ गया है। बूढ़े माँ–बाप को वृद्धाश्रमों में भेजकर बेटे अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। छोटे–छोटे नाती–पोतों के सान्निध्य का सुख भी बूढ़ों से छीन लिया

जाता है। हम बड़े–बूढ़ों के अनुभवों से लाभ उठाएं, उनके ज्ञानकोश को व्यर्थ न जाने दें। उन्हें उचित आदर–मान दें। ऐसा होने पर बूढ़ों के लिए बुढ़ापा अभिशाप नहीं, वरदान बन जाएगा।

कोयला, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, डीजल आदि ईंधनों की मूल्य–वृद्धि से भी महंगाई बढ़ती है। युद्ध, हड़ताल, दंगे आदि के कारण बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति पर प्रतिकूल असर होता है। जब जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में जरूरी वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता, तब महंगाई बढ़ने लगती है। कालाबाजारी, जमाखोरी आदि के कारण भी मूल्यों में वृद्धि हो जाती है।

गरीब परिवार के लड़के–लड़कियों को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ती है। चोरी, रिश्वतखोरी, डकैती, तस्करी, गुंडागीरी आदि सामाजिक बुराइयों का मुख्य कारण महंगाई ही है। यदि सरकार, व्यापारी और जनता समझदारी से काम लें तो बढ़ती महंगाई पर अंकुश लगाया जा सकता है। वस्तुओं के उत्पादन और उनकी आपूर्ति पर सरकार नजर रखे, व्यापारी कालाबाजारी से बचे और लोग सादगी का जीवन अपनाएं तो मूल्य–वृद्धि को रोका जा सकता है।

आजकल किसी भी दैनिक अखबार में दहेज–मृत्यु का समाचार अवश्य मिलेगा। कहने के लिए हमने बहुत प्रगति की है पर हम अपने समाज को नहीं बदल पाए हैं। यदि स्वतंत्रता की ताजी हवा समाज के मन–मस्तिष्क तक पहुंचती तो आज दहेज–प्रथा जैसी कुरीतियां हमारे यहां न होतीं।

सबसे अधिक दुःख तो इस बात का है कि हमारे समाज का प्रगतिशील, शिक्षित वर्ग भी दहेज को अपना समर्थन दे रहा है। दहेज–प्रतिबंधक कानून समाज पर अपना खास असर नहीं डाल पाते। सरकार का भी यह कर्तव्य है कि वह दहेज–विरोधी कानून को अधिक कठोर बनाए और उसका पालन कराए।

हमारा जीवन एक भयावह चक्रव्यूह में फंस गया है क्योंकि सभी जगह प्रदूषण है। प्रदूषण बहुमुखी दैत्य है। हम दूषित वायुमंडल में सांस ले

रहे हैं। लोगों को पीने के लिए स्वच्छ निर्मल जल नहीं मिल रहा है। दूषित जल और जंतु नाशक दवाओं के कारण सभी फसलें भी दूषित हो रही हैं। प्रदूषण के इन विविध रूपों ने इस सुंदर सृष्टि के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

प्रदूषण से पूरी तरह मुक्त होना संभव नहीं है, पर उसे कम अवश्य किया जा सकता है। इसके लिए लोगों में जागरूकता पैदा करनी होगी। वनों के विनाश को रोकना होगा और वृक्षारोपण की प्रवृत्ति में तेजी लानी होगी। यदि हम जनसंख्या की वृद्धि–दर कम कर सकें और मशीनों के उपयोग पर अंकुश रखें तो बहुत हद तक प्रदूषण की समस्या से छुटकारा पा सकते हैं। ऐसा होने पर हम धरती पर सुख–शांति से रह सकेंगे। ◈

युवाओं में नशे की आदत चिंताजनक

◈ çKk flag pkgku बारहवीं
दी क्रिएटिव ब्रेन अकादमी
ग्राम : मजा, पोस्ट : गुंजोल
राजसंमद, राजस्थान

देश के विकास के नाम पर अनेक योजनाएं तो बनाई गई हैं परंतु उनको सही रूप से लागू नहीं किया गया है, जिस कारण अनेक गरीब एवं पिछड़ी जाति के लोग इन योजनाओं के लाभ से वंचित हैं। हमें सभी लोगों तक बिना किसी भ्रष्टाचार के इन योजनाओं को पहुंचाना चाहिए।

çराचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था परंतु आज हमारे देश में अधिकतम गरीब लोग हैं। भारत की अनेक राष्ट्रीय समस्याओं, जैसे– भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, रुपये के मूल्य की गिरावट, नशाखोरी, महंगाई, आतंकवाद, प्रदूषण, जल संकट, सांस्कृतिक मूल्यों का दहन, भाषायी समस्या आदि ने हमारे इस पवित्र देश को खोखला बना दिया। वैज्ञानिक प्रगति के उन्माद से ग्रस्त मानव प्रकृति के निर्मम दोहन में व्यस्त है।

vkj{k.k % स्थान व अवसरों को किसी के लिए आरक्षित कर देना पहले से चला आ रहा है। आरक्षण होने पर उस स्थान को कोई और ग्रहण नहीं कर सका है। आरक्षण का सीधा प्रभाव शिक्षित युवकों के भविष्य से जुड़ा है। सरकारी नौकरियां सीमित हैं और आरक्षण असीमित होता जा रहा है जिसका परिणाम आगे चलकर यह होगा कि सरकारी नौकरियां केवल कुछ जाति विशेष के लिए सीमित रह जायेंगी। इस स्थिति के विरुद्ध प्रचंड प्रदर्शन हुए, आत्मदाह हुए, रेलगाड़ियों अथवा अन्य सरकारी सम्पत्ति का भी विनाश हुआ।

नशाखोरी : आधुनिक समाज में आज हानिकारक नशीली दवाओं का व्यापक प्रयोग हो रहा है। बदलती हुई सामाजिक मान्यताएं, कुछ नया करने की चाहत, तरह–तरह के तनाव आदि तमाम ऐसे कारण हैं जिनसे समाज में नशे का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। चिंताजनक बात यह है कि इसमें युवा वर्ग का प्रतिशत तेजी से बढ़ रहा है।

भ्रष्टाचार : भ्रष्टाचार का आशय भ्रष्ट आचरण से है। आज भ्रष्टाचार संपूर्ण विश्व में अपनी जड़ें फैलाए हुए है। अपना कार्य अनियमित तथा अनुचित तरीके से करवाने हेतु सरकारी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को पैसा, पुरस्कार, भेंट, कमीशन या दस्तूरी दी जाती है जिसे रिश्वत कहते हैं। यह सामाजिक, नैतिक और आर्थिक अपराध है।

प्रदूषण : वैज्ञानिक प्रगति के उन्माद से ग्रसित मानव ने प्रकृति माता को दासी के पद पर धकेल दिया है। आज सृष्टि का कोई पदार्थ प्रदूषण से नहीं बच पाया है। प्रदूषण मानवता के अस्तित्व पर नंगी तलवार की भांति लटक रहा है।

आतंकवाद : आज हमारे देश में ढेरों संगठित गिरोह फैले हुए हैं जिनके उद्देश्य बड़े सीमित और स्वार्थपूर्ण हैं। धन ऐंठना, निर्दोष लोगों, महिलाओं और बच्चों तक की हत्या करना तथा मादक पदार्थों एवं शस्त्रों के अवैध व्यापार आदि आज के इन तथाकथित मुक्तिमोर्चों के कुकृत्य हैं।

बेकारी एवं बेरोजगारी : देश में बेरोजगारी के कई स्वरूप देखने को मिलते हैं– आंशिक–अल्पकालिक बेरोजगारी। इसमें गांवों में श्रमिकों को केवल फसल के अवसर पर काम मिलता है, शेष समय वे बरोजगार ही रहते हैं। इसमें शिक्षित लोगों को अपनी कुशलता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता है जिससे इन बेरोजगारों का भार उन एक दो सदस्यों पर पड़ता है जो कमाते हैं।

भाषायी समस्या : आज हमारे देश में राजनीतिक स्वार्थों और संकुचित प्रादेशिकता ने धीरे–धीरे हिन्दी साम्राज्यवाद का हौआ दिखाकर हिंदी विरोध की ऐसी ज्वाला सुलगायी कि केंद्रीय सरकार ने पूर्व निश्चित

15 वर्ष की अवधि का प्रयोग करके अनिश्चितकाल तक अहिंदी भाषी प्रदेशों को अंग्रेजी के प्रयोग की छूट दे दी। अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रयोग के कारण हमारे देश में 250 भाषाएं लुप्त हो चुकी हैं।

Òkjrh; lH;rk dk ylr gkuk % आज हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति लुप्त हो गई है। भारतीय सभ्यता पर पश्चिमी सभ्यता हावी होती जा रही है। धीरे–धीरे हमारे भारतीय संस्कार धुलते चले गये और पश्चिमी संस्कार हावी होते चले गए। हम धोती–कुर्ता, पायजामा की जगह कोट–पेंट कमीज पर आ गए। इतना परिवर्तन तो ठीक था किंतु जब हम टाई पर आ गए तो मानो हमने भारतीय संस्कृति का गला घोंट दिया। यह केवल पश्चिमी लीक को पीटना है।

/kkfeZd dVVjrk % यह राष्ट्रीय समस्याओं का मुख्य कारण है। इसमें एक धर्म के लोग अपने आपको दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानते हैं और अपने धर्म की रक्षा हेतु अनैतिक एवं अनुचित कार्य करते हैं जिससे आतंकवाद, जातिवाद, आरक्षण आदि समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

vf'k{kk ,oa tkx:drk dh deh % अशिक्षा एवं जागरूकता की कमी के कारण सभी लोग अनेक राष्ट्रीय समस्याओं को जन्म दे रहे हैं। जागरूकता की कमी होने से पिछड़े लोगों को सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी नहीं रहती और समाज सुधार हेतु बनाई गयी योजनाएं असफल हो जाती हैं।

आज हमारे देश में व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा अनेक राष्ट्रीय समस्याओं को जन्म दे रही है। इससे सामाजिक कुकृत्य जैसे–कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि बढ़ रही है।

lek/kku

राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु हमें सबसे पहले देश की जनता को जागरूक करना होगा। लोगों को सरकारी योजनाओं के लाभ बताने होंगे, रैली एवं जनसंचार के माध्यम से लोगों को प्रदूषण, नशाखोरी एवं नशीली दवाओं के दुष्प्रभाव बताने होंगे।

हम लोगों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि करके बढ़ती समस्याओं को नियंत्रित कर सकते हैं। आपराधिक प्रवृत्ति वाले लोगों को शांति एवं एकता का पाठ पढ़ाकर बढ़ते आतंकवाद को रोका जा सकता है। शिक्षित व अशिक्षित दोनों प्रकार के लोगों को उनकी क्षमता के अनुसार रोजगार प्रदान किया जाना चाहिए। रोजगार प्रदान करने से आतंकवाद, बेरोजगार एवं जातिवाद को रोका जा सकता है।

देश के विकास के नाम पर अनेक योजनाएं तो बनाई गई हैं परंतु उनको सही रूप से लागू नहीं किया गया है जिस कारण अनेक गरीब एवं पिछड़ी जाति के लोग इन योजनाओं के लाभ से वंचित हैं। हमें सभी लोगों तक बिना किसी भ्रष्टाचार के इन योजनाओं को पहुंचाना चाहिए। ◈

रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएं

◈ eLdku आठवीं
अल्पाईन पब्लिक स्कूल
नालागढ़, हिमाचल प्रदेश

वस्तुओं की खरीद और वितरण की निगरानी करने वाले विभागों के कर्मचारी ईमानदारी से काम कर लें तो कीमतों की वृद्धि को रोका जा सकता है। बढ़ती महंगाई पर अंकुश रखने के लिए सक्रिय राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता है। यदि निम्न और मध्य वर्ग के लोगों को उचित दाम पर आवश्यक वस्तुएं नहीं मिलेंगी तो असंतोष बढ़ेगा और स्वतंत्रता के लिए पुनः खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

xरीबी की समस्या देश में सबसे बड़ी समस्या है। किसी भी व्यक्ति एवं इंसान के लिए गरीबी अभिशाप के बराबर है। यह एक पराकाष्ठा की स्थिति होती है। निर्धनता व्याप्त होने के सामान्य कारण हैं, जैसे जानलेवा बीमारियां, प्राकृतिक आपदा, कम कृषि पैदावार, बेरोज़गारी, अशिक्षा, पर्यावरण समस्या, हिंसा, भ्रष्टाचार आदि। बीमारी की ओर जाने के लिए एक व्यक्ति को निर्धनता मजबूर करती है कि वह गंदा पानी पीए, गंदी जगह पर रहे और अपर्याप्त भोजन खाए।

lek/kku

भारत में गरीबी को मिटाया जा सकता है, जैसे–

- फायदेमंद बनाने के साथ ही किसानों को अच्छी खेती के लिए उचित और ज़रूरी सुविधा मिलनी चाहिए।
- लोग जो अशिक्षित हैं, उनको जीवन की बेहतरी के लिए जरूरी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

- बढ़ रही गरीबी को जांचने के लिए लोगों के द्वारा परिवार का अनुसरण करना चाहिए।
- गरीबी को मिटाने के लिए पूरी दुनिया से भ्रष्टाचार खत्म करना होगा।
- हर बच्चे को स्कूल जाना चाहिए और अच्छी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।
- रोज़गार के अवसर होने चाहिए जहां सभी वर्गों के लोग एक साथ कार्य करे सकें।

vkradokn dh leL;k % आतंकवादी शक्तियां तथा पथभ्रष्ट नवयुवक हिंसात्मक रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों में दंगा–फसाद कर रहे हैं। यह एक सामाजिक मुद्दा बन चुका है। इसका प्रयोग आम लोगों और सरकार को डराने–धमकाने के लिए हो रहा है। भारत और समूचे विश्व में आतंकवाद एक गंभीर समस्या बनकर उभरा है। भारत में आतंकवादी घटनाएं समय–समय पर बढ़ रही हैं। उनका मकसद दहशत फैलाना है और अधिक से अधिक नुकसान करना है।

lek/kku

आतंकी समूह को खत्म करने के लिए हमारे देश में अनेक सैनिकों ने अपनी जान दे दी। आतंकवाद को रोकने के लिए हम पूरी तरह से जिम्मेदार हैं। हम यह तभी रोक सकते हैं जब हम बुरे लोगों की बातों में नहीं आएं। आतंकवाद को खत्म करने के लिए हमें राजनीति को सुधारना होगा। लोगों को जागरूक करना होगा कि वे किसी के बहकावे में नहीं आएं। देश के नागरिकों को शिक्षित करना होगा। हम कोशिश करें तो आतंकवाद का यह दानव सिर नहीं उठा सकता।

egxkÃ dh leL;k % भारत की बहुत सी आर्थिक समस्याओं में महंगाई की समस्या मुख्य है। भारत सरकार ने आवश्यक वस्तुओं की कीमतें कम करने के आश्वासन दिए किंतु कीमतें बढ़ती ही चली गईं।

जिस प्रकार रुपये की कीमत घटती है, महंगाई और बढ़ती है। वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि का काम इतना तीव्र है कि आप जब किसी चीज़ को दोबारा लेने जाते हो तो उस वस्तु का मूल्य पहले से अधिक हो चुका होता है। आजकल सभी वस्तुओं की कीमतें पहले से अधिक हो चुकी है।।

lek/kku

वस्तुओं की खरीद और वितरण की निगरानी करने वाले विभागों के कर्मचारी ईमानदारी से काम कर लें तो कीमतों की वृद्धि को रोका जा सकता है। बढ़ती महंगाई पर अंकुश रखने के लिए सक्रिय राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता है। यदि निम्न और मध्य वर्ग के लोगों को उचित दाम पर आवश्यक वस्तुएं नहीं मिलेंगी तो असंतोष बढ़ेगा और स्वतंत्रता के लिए पुनः खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

cjkstxkjh dh leL;k % बेरोजगारी की समस्या हमारे भारत में विकराल है। लूटपाट, छीना–झपटी, चोरी–डकैती, हड़ताल आदि कुव्यवस्थाएं इसी समस्या के दुष्परिणाम हैं। भारत में बेरोजगारी के अनेक रूप हैं। अनेक अशिक्षित लोग हैं जो रोजी–रोटी की तलाश में भटक रहे हैं। बेरोजगारी की समस्या से शहर और गांव में आक्रांत है। आचार्य भावे की आशंका सत्य सिद्ध हुई। प्रथम पंचवर्षीय योजनाकाल से ही बेरोजगारी घटने के स्थान पर बढ़ती ही चली गई।

lek/kku

भारत में बेरोजगारी की समस्या का हल आसान नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए मनोभावना में परिवर्तन लाना आवश्यक है। इसके लिए सरकारी अथवा नौकरियों की ललक छोड़कर उन धंधों को अपनाना चाहिए जिनमें श्रम की आवश्यकता होती है। शिक्षा प्राप्त करके स्वावलंबी बनने का प्रयास करें। सरकार को भी इन योजनाओं को विशेष प्रश्रय देना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह इस समस्या को और अधिक बढ़ने न दे।

c<rh tul[;k o lek/kku % भारत में जनसंख्या भी एक भयानक समस्या है। देश की समृद्धि के लिए सरकार द्वारा किए गए श्रेष्ठ कार्यों में गतिरोध उत्पन्न होने का एक प्रमुख कारण जनसंख्या का निरंतर बढ़ना है। भारत की आबादी प्रत्येक मास दस लाख की दर से बढ़ती है।

देश की जनसंख्या ही उसकी शक्ति का आधार है परंतु जब यह अनियंत्रित गति से बढ़ेगी तो निश्चित ही यह देश के लिए खतरनाक सिद्ध होगी। सरकार के प्रयासों के साथ हर नागरिक का छोटा परिवार रखने के लिए जागरूक होना आवश्यक है। ◈

मजदूरी के लिए मजबूर हैं नौनिहाल

◈ 'kQkyh dkVukyk आठवीं
रेनबो पब्लिक स्कूल
श्रीनगर गढ़वाल
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

देश के चरित्र को सर्वाधिक शर्मसार करने वाली समस्या बाल श्रम तथा यौन उत्पीड़न है। उस देश का भविष्य क्या होगा जिस देश में हाथों में किताब लेकर स्कूल जाने के स्थान पर उन छोटे कोमल हाथों में हथौड़ियां तथा फावड़े पकड़ा दिये जाते हैं। जिस मातृशक्ति के द्वारा प्रत्येक जीव का आगमन इस सुंदर धरती पर होता है उसी की चीत्कार से यह धरती व आकाश गूंजते हों, उससे ज्यादा शर्मसार बात क्या हो सकती है।

eमानव विकास के साथ भौगोलिक तथा सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण संसार में विभिन्न राष्ट्रों का प्रादुर्भाव हुआ। इनमें अपने गौरवशाली तथा महान परम्पराओं के कारण कई राष्ट्रों की गिनती संसार के महान राष्ट्रों के रूप में हुई। इन्हीं राष्ट्रों में भारतवर्ष भी अपनी महान परम्पराओं के कारण संसार के सिरमौर राष्ट्रों में गिना जाता है।

राष्ट्रों के प्रादुर्भाव के साथ–साथ विकास तथा अस्मिता की रक्षा के कारण अनेक समस्याएं भी खड़ी हुईं। 6वीं शताब्दी के बाद जब भारत का केंद्रीय शासन कमजोर होता गया तब अनेक विदेशी आक्रांताओं ने भारत के ऐश्वर्य को लूटने का प्रयास किया तथा वे उसमें सफल भी रहे। धीरे–धीरे पूर्ण भारत विदेशी आक्रांताओं के चंगुल में फंस गया। अनेक बलिदानों के बाद 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हो पाया। आजादी के बाद भी अनेक समस्याएं आज भी हमारे अस्तित्व तथा विकास के लिए खतरा बनी हुई हैं।

स्वतंत्रता आन्दोलन से ही अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की

नीति से इस देश में कुछ ऐसे तत्वों को बढ़ावा दिया जो देश के अस्तित्व के लिए हानिकारक थे। आजादी प्राप्ति के दिनों में उन्होंने देश का विभाजन करवा डाला। साथ ही बड़ी चालाकी से इन असामाजिक तत्वों को भारत में ही रहने की व्यवस्था कर डाली जो आज भी देश के लिए नासूर बने हुये हैं तथा देश को विभाजित करने की साजिश तथा कुठाराघात करते रहते हैं।

भारत सरकार तथा भारत के नागरिकों का कर्तव्य है कि वे उन अलगाववादी तत्वों की पहचान कर उन्हें राष्ट्रहित पर प्रहार करने से रोकें। उनके किसी भी ऐसे कृत्य को सार्वजनिक करें जिससे उनको पहचानने में सरलता हो।

भारतवर्ष की सबसे बड़ी विडम्बना रही है कि जिन पड़ोसियों के साथ हमने हमेशा मधुर व्यवहार बनाने का प्रयत्न किया उन्होंने ही हमारी पीठ में छुरा घोंपने का कृत्य किया। हमारे पड़ोसी पाकिस्तान के कृत्य से जो आतंकवाद बढ़ा, वह जगजाहिर है। निरपराध नागरिकों को मारना, सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाना जैसे कुकृत्य वे प्रतिदिन करते रहते हैं। अपने देश के कुछ कट्टरवादी संगठन देश को क्षति पहुंचाने का कार्य कर आतंकवादियों से मिलकर देश को क्षति पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। विदेशी ताकतों से धन लेकर देश की अस्मिता को खण्डित करना ही इनका उद्देश्य बना हुआ है।

आतंकवाद पर देश को एक ठोस नीति बनाने की आवश्यकता है। आतंकवादियों के प्रति किसी भी प्रकार की सहानुभूति रखना खतरे से खाली नहीं है। आतंकवादियों के लिए सख्त से सख्त कदम उठाना अनिवार्य है। जो निरीह बच्चों तथा निरपराध लोगों की हत्या के दोषी हैं उन पर दया दिखाना सांप को दूध पिलाने के समान है। भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि अपनी जान की परवाह किये बगैर देशहित में आतंकवादियों को किसी भी प्रकार का संरक्षण प्रदान न करे।

भारत एक युवा देश है लेकिन बेरोजगारी हेतु कोई ठोस नीति न होने के कारण सैकड़ों नवयुवक एवं नवयुवतियां बेरोजगारी के दंश से पीड़ित

हैं। इस कारण वे घर मानसिक यातना से ग्रसित होकर नैराश्य की ओर बढ़ रहे हैं। जिस युवा शक्ति के द्वारा राष्ट्रीय विकास दर बढ़नी चाहिये थी वही युवा शक्ति बेरोजगारी के कारण समस्या बनी हुई है। रोजगार के लिए ठोस राष्ट्रीय नीति आवश्यक है। विद्यालयों से ही रोजगारपरक शिक्षा की पहल होनी चाहिये।

आज पूरे देश को भ्रष्टाचार रूपी दानव ने जकड़ रखा है। मंत्री हो या संतरी सभी भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे हुये हैं। गरीब व्यक्ति का जीवन भ्रष्टाचार रूपी दानव ने त्रस्त किया है। भ्रष्टाचार के कारण पूरा सरकारी तंत्र पंगु बना हुआ है। हमारे राजनेताओं के हाल अत्यंत शर्मनाक है। कोई भी सरकार इस वादे के साथ सत्ता में आती है कि वह भ्रष्टाचार पर रोक लगायेगी लेकिन चन्द महीनों में ही वह आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूब जाती है।

देश के चरित्र को सर्वाधिक शर्मसार करने वाली समस्या बाल श्रम तथा यौन उत्पीड़न है। उस देश का भविष्य क्या होगा जिस देश में हाथों में किताब लेकर स्कूल जाने के स्थान पर उन छोटे कोमल हाथों में हथौड़ियां तथा फावड़े पकड़ा दिये जाते हैं। जिस मातृशक्ति के द्वारा प्रत्येक जीव का आगमन इस सुंदर धरती पर होता है उसी की चीत्कार से यह धरती व आकाश गूंजते हों, उससे ज्यादा शर्मसार बात क्या हो सकती है।

कोई भी लोकप्रिय सरकार इस जघन्य कृत्य को कभी भी सहन नहीं कर पाएगी तथा उन अपराधियों को सजा देने के लिए कठोर कानून बनाएगी। लेकिन वोट की रोटियां सेंकने वाले राजनेताओं के लिए यह तो मात्र खेल है जो उन्हें सत्ता का मार्ग देता है। राष्ट्र के चरित्र के लिए यह सबसे बड़ा कलंक है। कठोर कानून बनाकर दोषियों को कठोरतम दण्ड दिया जाये। केवल यही उपाय है अन्यथा इस प्रकार की दूषित मानसिकता के व्यक्ति उचित दण्ड नहीं प्राप्त कर पाएंगे। ◈

स्वार्थ छोड़ मिल कर चलना होगा

विकासशील देश के आगे अनेक समस्याएं रहती हैं, यही भारत के आगे भी हैं। भारत सरकार एवं जनता दोनों को आपसी मनमुटाव एवं भेदभाव भुलाकर, निजी स्वार्थ भुलाकर देश की उन्नति के लिए कार्य करना होगा, तभी हमारा देश इन समस्याओं से छुटकारा पा सकेगा।

◈ e;d flg दसवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
हुड्डा, सेक्टर–14
भिवानी, हरियाणा

Vाज़ादी के 70 सालों में भारत की तस्वीर यकीनन बदली है। भारत ने तमाम क्षेत्रों में जबरदस्त तरक्की की है और विश्व के मानचित्र पर अपनी छवि बेहतर बनाई है। विज्ञान का क्षेत्र हो, व्यापार का, खेल का या फिर कोई ओर, देश ने सभी क्षेत्रों में झंडे गाड़े हैं। इसके बावजूद आम भारतीय गरीबी, बदहाली, परेशानी की जिंदगी जी रहा है। सुकून की तलाश में उसे भटकना पड़ रहा है।

भ्रष्टाचार हमारे सिस्टम में गहराई तक घुस गया है। कहीं भी, कोई भी काम ईमानदारी से हो जाए तो हैरानी होती है। सिस्टम में चुस्ती का भी सर्वथा अभाव है। एक तो लालफीताशाही और उस पर लेट लतीफी।

लोगों का भी हाल ऐसा लगता है कि 'जो है, जैसा है' की स्थिति को उन्होंने स्वीकार कर लिया है। लोगों का सिस्टम से विश्वास हिला है। मैं क्या करूं, मेरी कौन सुनेगा? जैसे सवालों की आड़ में वे चुप्पी लगा जाते हैं जबकि ऐसे कई उदाहरण हैं कि जनता जागी है तो

सिस्टम बदला है। तो क्या इस देश में सबसे बड़ी समस्या जनता की सुस्ती ही है या फिर भ्रष्टाचार सारी बीमारियों की जड़ है या लेटलतीफी ने सारा खेल खराब कर रखा है? आखिर क्या है भारत की सबसे बड़ी समस्या?

तृतीय विश्व के प्रमुख देशों में भारत की गणना की जाती है। सन् 1947 में स्वतंत्र हुए भारत को विश्व स्तर पर उन्नति करने में अभी बहुत समय लगेगा। अभी विकास के मार्ग पर चलते हुए उसे अनेक मूलभूत समस्याओं के साथ–साथ अन्य वैश्विक समस्याओं से भी जूझना पड़ रहा है। यही कारण है कि भारत के विकास की गति बहुत मंद है। फिर भी आधुनिकता की इस दौड़ में अनेक समस्याओं का सामना करते हुए वह साहस के साथ विकास की ओर उन्मुख हो रहा है।

इस समय भारत नवनिर्माण की जटिल प्रक्रिया की ओर त्वरित गति से आगे बढ़ रहा है। यही कारण है कि विश्व के अनेक विकासशील देशों में भारत एक अग्रणी देश माना जाता है। नव–स्वतंत्र देशों के सम्मुख आने वाली सभी प्रकार की समस्याएं भारत के सामने मुंह बाए खड़ी हैं, यही वे समस्याएं हैं जो भारत की विकास गति को मंद कर देती हैं। भूमंडलीय समस्याओं के साथ–साथ भारत की स्वयं की निजी समस्याएं भी कम नहीं हैं। इन प्रमुख समस्याओं में सबसे प्रमुख तथा अनसुलझी समस्या है जनसंख्या की। इसके अतिरिक्त अशिक्षा, गरीबी, बेरोज़गारी, कुपोषण, आतंकवाद, संप्रदायवाद ने देश की एकता एवं अखंडता पर कुठाराघात किया है।

भारत के विकास–मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट उसकी असीमित जनसंख्या है जिसकी निरंतर वृद्धि ने अनेक अन्य समस्याओं को जन्म दिया है। चीन के बाद विश्व में भारत ही जनसंख्या में सबसे आगे है। मानव–महासमुद्र कहलाने वाले भारत में जन्मदर अबाध गति से बढ़ने का सबसे प्रमुख कारण यहां के लोगों का अशिक्षित होना है। अशिक्षित जनता विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है।

सबसे बड़ी समस्या है अंधविश्वास की। बच्चों को भगवान की देन

मानकर चलने वाले लोग भूल गए कि इतनी बड़ी जनसंख्या की जरूरतें कहां से पूरी होंगी। यह बढ़ती जनसंख्या भारत के विकास को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। यही कारण है कि आज स्वयं भारत सरकार द्वारा पर्याप्त संख्या में विद्यालय खोलने, निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का प्रबंध करने के बावजूद अस्सी प्रतिशत जनता अशिक्षित है।

किसी भी देश के लिए अशिक्षा एक अभिशाप के समान है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने हेतु विभिन्न सरकारी तंत्र, अस्पताल, नर्सिंग होम, संस्थाएं युद्ध स्तर पर गांव–गांव जाकर कार्य कर रहे हैं फिर भी जन्मदर पर वांछित रोक नहीं लगी है। जनसंख्या वृद्धि को तभी रोका जा सकता है जब लोगों में इसके प्रति जागरूकता एवं सजगता हो।

भारत की अन्य सबसे बड़ी समस्या निर्धनता है। यह तभी दूर हो सकती है जब तक जनता शिक्षित नहीं होती। इस पुरानी समस्या को दूर करने के लिए अनेक योजनाएं शुरू की गई थीं पर इतनी विशाल जनसंख्या की गरीबी को दूर करना बच्चों का खेल नहीं। 'गरीबी हटाओ' कार्यक्रम के द्वारा सरकार ने अनेक योजनाओं को शुरू किया पर सत्ता प्राप्त करके वे भी आराम से बैठे गए। सारी योजनाएं दुलमुल चल रही हैं। जब तक हमारे देश की अर्थव्यवस्था को आमूल–चूल परिवर्तित करके नए सिर से लागू न किया जाएगा तब तक गरीबी हटाना संभव नहीं।

भ्रष्टाचार देश की प्रमुख समस्या के रूप में उभर कर आया है। कोई भी कार्य बिना रिश्वत के पूरा नहीं कराया जा सकता। सभी सरकारी योजनाएं भ्रष्टाचार के चलते केवल ऊपर बैठे लोगों को ही लाभ पहुंचाती हैं।

विकासशील देश के आगे अनेक समस्याएं रहती हैं, यही भारत के आगे भी हैं। भारत सरकार एवं जनता दोनों को आपसी मनमुटाव एवं भेदभाव भुलाकर, निजी स्वार्थ भुलाकर देश की उन्नति के लिए कार्य करना होगा, तभी हमारा देश इन समस्याओं से छुटकारा पा सकेगा। ◈

ऐसी शिक्षा हो, रोजगार दे जो

◈ **euçhr flg** सातवीं
ए.पी.जे. स्मार्ट स्कूल
मुण्डी खरड़, मोहाली, पंजाब

सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रण में लेने हेतु विभिन्न परिवार कल्याण योजनाओं को लागू किया गया है। सभी बड़े शहरों में रोजगार कार्यालय खोले गए हैं जिनके माध्यम से युवाओं को रोजगार की सुविधा प्रदान की जाती है।

eहंगाई आज हर किसी के मुख पर चर्चा का विषय बन चुकी है। विश्व का हर देश इससे ग्रसित होता जा रहा है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो यह चिंता का विषय बनता जा रहा है। महंगाई ने आम जनता का जीवन अत्यन्त दुष्कर कर दिया है। आज दैनिक उपयोग की वस्तुएं हों अथवा रिहायशी वस्तुएं, हर वस्तु की कीमत दिन–ब–दिन बढ़ती और पहुंच से दूर होती जा रही है। महंगाई के कारण हम अपने दैनिक उपयोग की वस्तुओं में कटौती करने को विवश होते जा रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक जहां साग–सब्जियां कुछ रुपयों में आ जाती थीं, आज उसके लिए लोगों को सैकड़ों रुपये चुकाने पड़ रहे हैं।

वेतनभोगियों के लिए तो यह अभिशाप की तरह है। महंगाई की तुलना में वेतन नहीं बढ़ने से वेतन और खर्च में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है। ऐसे में सरकार को हस्तक्षेप कर कीमतों पर नियंत्रण रखने के लिए गहन अध्ययन करना चाहिए। सरकार को महंगाई कम करने के उपाय करने चाहिए ताकि महंगाई किसी को न सताए।

महंगाई के लिए तेजी से बढ़ती जनसंख्या, सरकार द्वारा लगाए जाने वाले अनावश्यक कर तथा मांग की तुलना में आपूर्ति की कमी है। बेहतर बाजार व्यवस्था से कुछ हद तक मुक्ति मिलेगी। पेट्रोलियम उत्पाद, मालभाड़ा, बिजली आदि मूलभूत विषयों पर जब–तब बढ़ोतरी नहीं करनी चाहिए। इनमें वृद्धि का विपरीत प्रभाव हर वस्तु के मूल्य पर पड़ता है। सरकार की सक्रियता ही महंगाई को नियंत्रित कर सकती है।

बेरोजगारी को बढ़ती समस्या निरंतर हमारी प्रगति, शांति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। हमारे देश में बेरोजगारी के अनेक कारण हैं। अशिक्षित बेरोजगारी के साथ शिक्षित बेरोजगारी की संख्या भी निरंतर बढ़ रही है। देश के 90 प्रतिशत किसान अपूर्ण तथा अर्द्ध बेरोजगार हैं जिनके लिए वर्ष भर कार्य नहीं होता। वे केवल फसलों के समय ही व्यस्त रहते हैं।

शेष समय में उनके करने के लिए खास कार्य नहीं होता है। यदि हम बेरोजगारी के कारणों का अवलोकन करें तो हम पाएंगे कि इसका सबसे बड़ा कारण देश की निरंतर बढ़ती जनसंख्या है जिसके फलस्वरूप देश का संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

इसका दूसरा प्रमुख कारण हमारी शिक्षा–व्यवस्था है। वर्षों से हमारी शिक्षा पद्धति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति का आधार प्रायोगिक नहीं है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी हमें नौकरी नहीं मिल पाती है।

बेरोजगारी का तीसरा प्रमुख कारण हमारे लघु उद्योगों का नष्ट होना अथवा उनकी महत्ता का कम होना है। इसके फलस्वरूप देश के लाखों लोग अपनी पैतृक व्यवस्था से विमुख होकर रोजगार की तलाश में इधर–उधर भटक रहे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बेरोजगारी के मूलभूत कारणों को खोज कर सर्वप्रथम हमें अपने छात्र–छात्राओं तथा युवक–युवतियों

की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा। यह तभी प्रभावी हो सकता है जब हम अपनी शिक्षा पद्धति में सकारात्मक परिवर्तन लाएं। उन्हें आवश्यक व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करें। इन विद्यालयों में तकनीकी एवं कार्य पर आधारित शिक्षा दें जिससे उनकी शिक्षा का प्रयोग उद्योगों व फैक्ट्रियों में हो सके और वे आसानी से नौकरी पा सकें।

सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रण में लेने हेतु विभिन्न परिवार कल्याण योजनाओं को लागू किया गया है। सभी बड़े शहरों में रोजगार कार्यालय खोले गए हैं जिनके माध्यम से युवाओं को रोजगार की सुविधा प्रदान की जाती है।

भ्रष्टाचार एक बीमारी की तरह है। आज भारत देश में भ्रष्टाचार को समय रहते नहीं रोका गया तो यह पूरे देश को अपनी चपेट में ले लेगा। भ्रष्टाचार के कई कारण हैं, जैसे असंतोष स्वार्थ और असमानता। अतः इन समस्याओं का हल खोजना बहुत जरूरी है। ◈

कठोर कदमों के द्वारा सरकार को नशा रोकने के प्रयास करने चाहिए। इस संदर्भ में अभी हाल ही में बिहार सरकार द्वारा शराबबंदी का लिया गया निर्णय काफी सराहनीय है तथा अन्य राज्यों की सरकारों को भी इस तरह का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा नशे के विरुद्ध एक व्यापक जन-जागरण अभियान की आवश्यकता है।

नशाबंदी के लिए सब हों एकजुट

◈ **vkfnR; oek** बारहवीं
राजकीय सहशिक्षा उच्च माध्य. विद्यालय
भाटी माईन्स, दिल्ली

vाज हमारे देश के सामने अनगिनत समस्याएं फण फैलाए खड़ी हैं जो दिनों–दिन अपना विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। मानव समाज तथा राष्ट्र द्वारा इन समस्यायों के निदान के भरपूर प्रयास के बावजूद ये सुरसा के मुख के समान बढ़ती ही जा रही हैं। वैसे तो आज के समय में अनेक समस्याएं राष्ट्रीय समस्या का रूप लेती जा रही हैं फिर भी उनमें मुख्य समस्याओं का यहां उल्लेख कर रहे हैं।

vkradokn % पूरे विश्व में आतंक का साया मंडरा रहा है। रोज नए–नए आतंकवादी संगठन पैदा हो रहे हैं और विश्व के सामने अपनी ताल ठोक रहे हैं। भारत के राज्य नागालैण्ड, मिजोरम, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, असम सभी राज्यों में आतंकवादी गतिविधियां जारी हैं तो दूसरी तरफ भारत के अंदरूनी राज्य मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश आदि नक्सलवाद नाम के आतंकवादी गुट से त्रस्त हैं।

आतंकवाद को समाप्त कैसे किया जाए, यह एक कठिन प्रश्न है। इसे

समाप्त करने के लिए जी–जान लगाने की हिम्मत की आवश्यकता है। हिम्मत के साथ–साथ आतंकवाद को कुचलने के लिए पूरी सावधानी, कुशलता और तत्परता की आवश्यकता है।

lkçnkf;drk % वास्तव में सांप्रदायिकता की लड़ाई किसी मत या धर्म या सिद्धांत की लड़ाई नहीं होती, बल्कि यह सांप्रदायिक अंधेपन की लड़ाई होती है। इन्हीं अंधों को फटकारते हुए महात्मा कबीर ने कहाः–

हिंदू कहत राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लरै मरतु हैं, मरम कोई नहीं जाना।।

सांप्रदायिकता विश्व भर में व्याप्त बुराई है। इग्लैण्ड में रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, मुस्लिम देशों में शिया और सुन्नी, भारत में हिन्दू–मुस्लिम झगड़े उभरते रहे हैं। इन झगड़ों में जैसा नरसंहार होता है, जैसी धन–संपत्ति की हानि होती है उसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

सांप्रदायिकता की समस्या कठिन अवश्य है परंतु असंभव नहीं। सांप्रदायिकता का अंधापन अज्ञान और अविवेक से उत्पन्न होता है। इसलिए शिक्षा का प्रसार सर्वोत्तम उपाय है। शिक्षित व्यक्ति धार्मिक नेताओं के बहकावे में कम आता है। धर्मों के अनुयायी दूसरे के मन का सम्मान करें, उन्हें स्वीकारें, अपनाएं, उनके कार्यक्रमों में सम्मिलित हों, उन्हें उत्सवों पर भाईचारे का परिचय दें तथा सरकार भी धार्मिक तुष्टीकरण की नीति का परित्याग करे।

çn"k.k % प्रदूषण का जन्म अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रगति के कारण हुआ है। मनुष्य की इस अंधाधुंध प्रगति का दुष्परिणाम यह हुआ कि हमारा समूचा परिवेश जीवन घातक तत्वों से भर गया है। अविवेकपूर्ण औद्योगीकरण और परमाणविक प्रयोगों के कारण विश्व भर का मौसम चक्र बिगड़ गया है। वैज्ञानिकों की चेतावनी है कि यदि इसी प्रकार ऊर्जा का प्रवाह होता रहा तो हिमखंड पिघलेंगे, बाढ़ें आएंगी, समुद्र जलस्तर में वृद्धि होगी। रहने योग्य भूमि और कम होगी, ओजोन परत में छेद के कारण धरती का पर्यावरण विषाक्त हो जाएगा।

प्रदूषण से मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है इस समस्या के प्रति सचेत होना। अन्य उपाय हैं– आसपास पेड़ लगाना, अनावश्यक शोर को कम करना, वनों की कटाई पर रोक लगाना, औद्योगिक कचरों का सही ढंग से निपटारा करना आदि।

cjkstxkjh % आज भारत के सामने जो समस्याएं फण फैलाए खड़ी हैं उनमें से एक महत्वपूर्ण समस्या है बेरोजगारी। लोगों के पास हाथ है पर काम नहीं, प्रशिक्षण है पर नौकरी नहीं है, योजनाएं और उत्साह है पर अवसर नहीं हैं। बेकारी का सबसे बड़ा कारण है–बढ़ती हुई जनसंख्या। हमारे देश में जनसंख्या का विस्फोट जितना जबरदस्त है, कामों के अवसरों का विकास उतना तीव्र नहीं है।

प्रत्येक समस्या का समाधान उसके कारणों में छिपा रहता है। व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, मशीनीकरण पर नियंत्रण, रोजगार के नये अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू करना चाहिए।

egxkÃ % वर्तमान में अनेक समस्याओं में से एक महत्वपूर्ण समस्या है महंगाई। बाजार में महंगाई तभी बढ़ती है जबकि मांग अधिक हो, किंतु वस्तुओं की कमी हो जाए। महंगाई बढ़ने के कुछ बनावटी कारण भी हैं, जैसे कालाबाजारी, जमाखोरी। इससे बाजार में अचानक वस्तुओं की आपूर्ति कम हो जाती है और उनकी कीमतें आसमान छूने लगती हैं।

दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि रोकने के लिए ठोस उपाए किये जाने चाहिए। कालाबाजारी तथा जमाखोरी के खिलाफ सख्त नियम बनाने चाहिए। इस दिशा में जनता का भी कर्तव्य है कि संकट के समय संयम से काम ले तथा आवश्यकता पड़ने पर अपनी जरूरतों को कम करके महंगाई को चुनौती दे।

u'kk[kkjh % नशाखोरी सभी व्यसनों की जड़ है। नशे के संपर्क में आने से हमारे सारे संस्कार, विचार, सद्भाव बाहर निकल जाते हैं।

संवेदना शक्ति नष्ट हो जाती है। आज हमारा देश पूरी तरह नशे की गिरफ्त में पहुंच गया है। शराब से भी अधिक हानिकारक नशा आज बाजार में ड्रग्स और इंजेक्शन के रूप में खुलेआम बिक रहा है।

कठोर कदमों के द्वारा सरकार को नशा रोकने के प्रयास करने चाहिए। इस संदर्भ में अभी हाल ही में बिहार सरकार द्वारा शराबबंदी का लिया गया निर्णय काफी सराहनीय है तथा अन्य राज्यों की सरकारों को भी इस तरह का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा नशे के विरुद्ध एक व्यापक जन–जागरण अभियान की आवश्यकता है।

c<rh tul[;k % भारत के सामने अनेक समस्याएं चुनौती बनकर खड़ी हैं। जनसंख्या विस्फोट उनमें से सर्वाधिक भीषण है। जिस तेजी से हमारे देश की जनसंख्या प्रतिपल बढ़ती जा रही है, उसी तेजी से हमारा देश समस्याओं की बाढ़ में घिरता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि अपने आप में कई राष्ट्रीय समस्यायों को जन्म देती है जिससे भ्रष्टाचार पैदा होता है।

जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए आवश्यक है कि हर व्यक्ति अपने परिवार को सीमित करे। एक से अधिक संतान को जन्म न दे। लड़के–लड़की को एक समान मानने पर भी जनसंख्या पर नियंत्रण हो सकता है। परिवार नियोजन के साधनों के उचित उपयोग से जनसंख्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। ◈

ENGLISH

India is a secular country

◈ **Apurva** X
D A V Public School
Vasant Kunj, Delhi

Our nation has many kinds of problems. Some are created by diversity, some by people and others by climate but the situation should be managed by the government. Today India is standing in front of the world as a country with caste system, vast politics and diverse culture. From my opinion this is not even interval, we have to progress a lot, fight a lot and receive a lot.

We have travelled a lot from ashes of Mesopotamia to the modern metropolis. But the thing which had remained the same throughout the time was National Problem of the country or state. With my opinion, such problems need sittings and meetings for finding solution. We got our independence on 15th August 1947 and then began the journey from a slave country to a developed country. Authorities and departments were created, courts were polished and India became a proper democratic power.

India has been recognized many times by the world because of its national problems. Such problems could be environmental, crisis or war conditions. As we know, all five fingers are not of the same length and like, so all problems has not same solutions. This year only we had faced problems like famine in Latoor, floods in Uttarakhand and fire explosions in Mumbai but our rescue teams had worked like angles to the suffered ones. In politics and finance, many losses were

also observed. Pakistan and China are regularly interfering and invading our national borders.

India is a secular state with a diverse caste, religion and linguistic groups. Ayodhya is timely involved in Hindu Muslim fights. Areas like Ajmer, Meerut and Aligarh which consist of high Muslim ratio than Hindu are in news for many a time and lastly, the state of India which has now become a world class matter in U.N., yes it is Jammu & Kashmir. Can we not live with harmony with unity in diversity? My side says its solution is literacy. Education makes an individual aware about his/her rights and duties which also include religious unity. Mahatma Gandhi was not only the father of nation, a lawyer and rebellion who fought for independence but was also a great inspirational leader who had already proved his thinking as idea for future world. He had always said that a nation can't prevail nationalism without being secular.

From last decade, pollution level has increased to a certain extent which is now becoming a national problem. Delhi, the capital territory had been ranked as world's most polluted area in 2013-14. Kanpur has many industries which are polluting the Ganga and the Yamuna highly. God has not made India to face these parameters because of its bio-diversity.

India lies in sub-tropical region which automatically gives certain kind of specialties and environmental crisis also. We have glaciers, mountains, deserts, rivers and deltas for management of these resources. We need hi-tech and well skilled facilities for solving problems. Our neighborhood consists of Himalayas which are considered to be the father of many rivers flowing in India. If rivers are there then floods are its monsoon gifts. Such a nation should have separate authorities to solve environmental problems.

More than 65 years had passed from when we got independence. This gives any nation a chance to improve its

constitution to avoid corruption and unconstitutional practices. But every new month saw some scam or removal of any politician. So we have improved this much that we can't even stop these practices. What is the main purpose behind world's longest written constitution? Our authors of constitution had found many solutions to these national problems but were unsuccessful to read clever minds of these corrupt individuals. CBI, NIA and NDA are setup for finding solution after crime but they are not able to fail them in beginning.

As the discussion prevails, our nation has many kinds of problems. Some are created by diversity, some by people and others by climate but the situation should be managed by the government. Today India is standing in front of the world as a country with caste system, vast politics and diversed culture. This is not even interval, we have to progress a lot, fight a lot and receive a lot. This is just a trailer. In future this peninsular country will decide the future of world. This would be the possible future of the world. This would be possible only when we have solutions for our national problems because problems don't have end, we have to pause them. ◈

Unemployment is one of the biggest crises our nation is facing today. Unemployment has been escalating because people lack skills and education. It has become more difficult to find jobs that match their skills and knowledge. The higher unemployment rates are evident from the studies in the past couple of years.

Terrorism is one of the growing problems

◈ **Sree Lakshmi A.S.** VI
Bharatiya Vidya Bhavan's
Vidyashram
Hyderabad, Telengana

What are the most serious and biggest problems facing our nation today? Any idea? Well, if we ask this question to people on the streets, we are most likely to get a bunch of diverse answers. No doubt, our nation has gone through several disasters over the past decades. Even today, we have some serious and severe problems. The following are the topmost contemporary and serious problems of present time.

Terrorism

Terrorism is one of the growing problems of our nation today. Several people are losing their life everyday due to terrorist attacks. Terrorism could make it impossible to imagine any free society. People are living in terrorist prone areas of our nation like Kashmir, where freedom has been totally ditched. Following the terrorist attacks of 9/11 in Mumbai, the Bush's government had announced a global 'war on terror', relating to open and secret militaristic activities, unique security law, all to bar the funding of terrorism and much more. The IS

terrorist group has now gained power around the world. We have to fight against terrorism to make our nation very powerful as well as peaceful.

Drug Abuse

A large number of youths are prone to drug abuse. Peer pressure, family issues or an urge to experience a thrill are few of the reasons for the increase of this bad habit. The truth is that drug addiction is actually a frustrating disease and giving it up can take much more than good motives or even an intense willpower. Believe it or not, drugs affect our brain in such a way that instills compulsive drug use. As a result walking away from it is not easy, even for people who are completely ready to give up the addiction. To eradicate this evil habit we have to start classes/de-addiction campaigns in the schools/colleges as presently students are greatly indulged in these nefarious activities.

Pollution

Pollution is one of the major problems we are facing today. There are three types of pollutions - land pollution, water pollution and air pollution. We are dumping wastes from households, factories and industries on land, which are hazardous to health. Fertilizers and pesticides are used to increase production of food crops, which adversely affect the health of animals and humans. Industrial wastes discharged into rivers, lakes and seas cause water pollution. Air pollution caused by burning of coal, petrol and emission from vehicles.

Spread of infectious diseases

People nowadays are much terrified of epidemic diseases. They fear that such diseases would wipe out the mankind in the coming future. Infectious diseases like AIDS, Yellow Fever, Ebola have been causing millions of deaths globally each year. In the last few years, we have seen a great deal of

handwringing and fretting over swine flu, bird flu and various health problems. A breakout could happen in just one place or even grow in many nations. Timely taking of preventive measures and conducting various camps in blocks / panchayat levels to give awareness to people etc can minimize spreading of infectious diseases.

Unemployment

Unemployment is one of the biggest crises our nation is facing today. Unemployment has been escalating since people lack skills and education. It has become more difficult to find jobs that match their skills and knowledge. The higher unemployment rates are evident from the studies in the past couple of years. People even in advanced and emerging countries are struggling to find jobs today. The government should take steps to do away with unemployment.

Poverty, hunger and water crisis

Poverty, hunger and lack of pure drinking water are the biggest threats still facing our nation. A good percentage of people in our nation are still living in absolute poverty. There are lots of people who are forced to drink contaminated water in order to survive. It usually takes a lot of water for cultivation, domestic purposes, cleaning of hotels/restaurants, manufacturing activities, mining procedures etc.

Population Growth

Growth of population is one of the severe problems our nation facing today. With growing population, the country has to suffer from other bigger issues like unemployment, poverty, shortage of natural resources etc. We are already facing the scarcity of resources now. If the population goes up at the same rate, our future generations will have no option but to suffer. Everybody should be educated for birth control.

Child labour

Child labour is defined as work which deprives children of their childhood and right to free existence. Every day thousands of children work as labours in fields, homes, farms, factories and in the streets. Out of these a good portion are engaged in hazardous jobs where they are exposed to chemicals and pesticides on farms or machines in the factories. Labouring prevent them from getting an education and hinders their mental, social and physical developments. These days, one out of every five people lives below the poverty line.

There are numerous other problems prevailing in our nation. We actually need to work on solving these problems instantly by running several awareness campaigns in state or national level projects. State and central government authorities should also take steps to minimize the problems like unemployment, terrorism, spreading of diseases etc. We certainly should do something about it and make the country a good place to live in. ◈

Money can give us luxury but not relief

Let's be advanced and speak for good cause. From the very beginning of our life we are taught like what work we can do. But how many promises are we really able to fulfill? Let us go to the brief of the scenario holding up in our country.

◈ **Diksha Kushwaha** IX
Bal Bhavan Public School
Mayur Vihar, Delhi

If we see our country we can say that it is democratic and not only democratic but the biggest democratic country of the world. But this statement has many flaws and it is partially incorrect. Because we are still in the hostage of several heinous evils of society. It is not unique to say that everyday our mind gets contaminated due to the pages of the newspaper. Have we seen any of the newspaper containing all positive news or headlines? The answer must be no. As everyday there is the news always ready to hit in the motor section of our mind and awaking up to the fact of our society that we are not safe. I know there must be not a single thing having all positive points.

There are several social evils which are indeed emancipating our country. They are barriers which push back the efforts in the contribution of country's growth. And if we analyze its conclusion is same for all i.e. currency, money and finance. If anyone asks me the importance of money then I'll reply

“Money can give us luxury but the relief of being human will be destructed.” Yes, money will help us to buy property, luxury but we are forgetting that if greed for money will increase many people will fall in the mouth of death.

As we read in the introduction that for every social problem the radical is same throughout that is money. Now to what say if the system of currency gets vanished. We know then the conflict between people of getting higher rank will also get deteriorated. Then again barter system may get introduced. In this case we get to see that existence of money is only for the survival or livelihood. But nowadays people have made it the rage. From rage I mean to say an addiction. Hence scams, robbery, murder, kidnapping are now in fashion. Nowadays these phrases are the most favourite of the press. Seriously even the commons also get so much frustrated that they have disconnected their news channels.

In these situations we are only left with the sayings : “what can I do? Who cares? That’s not my business. Do you really want to indulge in this? Yeah! That’s quite unfair. I can understand”. But these casual answers will not improve the situation because we are the building blocks of society. So, first correction should be there in our reactions. I must approach first. What happens if nobody cares but I will rebel… now or never? These are difficult to adapt but at the same time necessary also. Let’s be advanced and speak for good cause. From the very beginning of our life we are taught like what work we can do. But how many promises are we really able to fulfill? Let us go to the brief of the scenario holding up in our country.

Corruption

This is a common word which can be heard in our daily life. This is something which is terminating the morality of our society inertly. Corruptness is something which is hidden in

someone's heart and soul. He attempts to malpractice with other's emotions and feelings.

Unemployment

This problem named unemployment has exploited the people having lower skill a lot. This leads to unhappiness among people. Unemployment puts dispute among the highly educated people as well as illiterate people.

Poverty

The long term cause is poverty which exerts a high blow of higher role on the rich or clergy people. Let us consider the figures here having imbalance in the status of higher and poorer one.

People in today's world can take any statement as an abuse. This leads to various crimes taking place in our country. These crimes like theft, murder, robbery, scams etc which hurt the commons and any rebellion can be taken place in our country.

Measures— S---Steps, O---Of, L---Leveling, U---Unity, T---Trial of, I---Inculcation, O---Of, N---Nobility.

Now summering up all the words we get the sentence derived, "Steps of leveling, unity, trial of undulation of nobility". This sentence clearly meant to say that at particular level we need to level up the situation which is dissected by everyone against opinions. By unity we can make more reliable situation when brotherhood is there and love is the prominent feature of livelihood. By all these things we can conclude a society which is nurtured and enhanced by love, fraternity, prosperity and nobility. ◈

Child labour destroys childhood

◈ **Archit Gupta** VIII
Rainbow English Sr. Sec School
Janakpuri, Delhi

Illiteracy refers to the inability to read and or write. The problem of illiteracy is a major social issue in India. The problem has spread throughout the country in a wide way. It is one of the most dangerous obstacles in the growth of the country.

Social issues (also social problem, social evil and social conflict) refer to any devised condition that is opposed either by the whole society or by a section of the society. It is an unwanted social condition often objectionable, the continuance of which is harmful for the society. India is facing a large problem such as cast system, child labour, illiteracy, gender, inequality, superstitions, religious conflicts and many more. It is high time to get relief of these undesirable social evils.

Major social issues: We have prepared a list of major social issues in India. They are briefly discussed below in following order.

1. Caste System, 2. Poverty 3. Child labour 4. Illiteracy 5. Child marriage 6. Low status of woman 7. Gender inequality at work 8. Dowry system 9. Sati practice 10. Alcoholism 11. Superstition 12. Sanitation and Cleanliness 13. Religious conflicts 14. Juvenile delinquency.

Caste System: Caste system is a system of defending class or assigning status to individuals from the time of birth. In India, the caste system is mainly profession based. India has been a victim of caste system since ages. The causes, effects and solutions of caste system in India are discussed below

Causes: The main reason behind the growth of cast system in India is the assignment of cast based on job specialization. There were different types of jobs in the society which were done by society based on their capability. This division of job based on specialization resulted into caste system.

Negative effects of caste system: Caste System has many disadvantages such as it promotes inequality and under morality in nature. Caste system is also a danger towards the national integration of the country.

Solution: Education will help the people to become aware of disadvantages of caste system. There should be special classes at schools that imparts value and moral education to the children.

Poverty: Poverty refers to a situation when people's basic needs are not fulfilled. When people don't have the necessary food to eat or clothes to wear or shelter to stay then it is called poverty. Life becomes very difficult for people with income below the poverty line. The causes, effects and solutions for poverty in India are discussed below.

Causes: In case where the resources and opportunities are limited and the population is high, there arises a situation of joblessness which ultimately leads to poverty.

Effects

Low quality food may lead to bad nutrition. Poor people will always have to depend on others to survive. The low standard of living prevails among poor people.

Solution: There is a need for initiatives of paid leave to the workers. The education system should be reformed and initiatives should be taken to bring more children to schools.

Child labour: Child labour is a system of involving children in any economic activity. Child labour can be seen throughout the country in a wide way. The causes, effects and solution of child labour are briefly mentioned below

Causes: Poverty and Illiteracy. If the above problems can be resolved from the Indian society, then the country will have less social issues.

Effects: The negative effects or major disadvantages of child labour includes: Child labour destroys their childhood. Child labour obstructs personal growth. The standard of living of people remains low.

Solution: The main solution to child labour is imparting education and knowledge to the children. If the incomes of the parents can be increased then it is possible for children to get education.

Child Marriage: Child marriage refers to the marriage of individuals below the prescribed limit age. Marriage is to be considered legal as per Indian law when the groom's age is 21 and above and bride's age is 18 and above. Gender equality and women education are very important to stop the evil practice of child marriage.

Illiteracy: Illiteracy refers to the inability to read and or write. The problem of illiteracy is a major social issue in India. The problem has spread throughout the country in a wide way. It is one of the most dangerous obstacles in the economy's growth.

Reason: Many people stay illiterate due to some physical or mental disabilities. Other racial evils like caste system, gender and inequality also cause illiteracy.

Disadvantage: Illiterate people find it very difficult to secure a good job and earn livelihood.

Low status of woman: Low status of woman refers to the inferior position of woman in the society. This reflects the narrow mindset of the society but widely prevalent in the backward area.

Causes: Narrow mindset of the society is the main cause behind this problem. Women in India are considered inferior than men since ages. A large part of the society believes that men are more capable to earn than women.

Negative impact: The negative impact of the lower status of women is that women do not get the adequate chance to do something to contribute to the society.

Solution: The solution to the problem is the empowerment of women for solving the problem. Mass media campaign should be promoted.

Sati System: Sati system or Sati pratha is one of the cruelest evil, inhuman and immoral social practice prevailing in our country.

Causes: Sati was also practiced by women to show her love and devotion towards her husband. In the backward areas widows were treated as untouchables and were forced to commit as sati.

Solution: The solution for the evil practice of sati is to educate the people through mass communication. Bringing a change in the perspective of the people that widow cannot remarry with anyone. ◈

Communal violence in India is alarming

◈ **Krishangi Kaushik** VII
Delhi Public School
Nazira, Assam

Population control and economic development go hand in hand. There is an urgent need to step up our efforts for checking population growth by removing female illiteracy in a short time span and by involving panchayats and other grass root organizations. International aid agencies are willing to extend financial help if we can formulate throughout and can implement them effectively as per the agreed time schedule.

There are many national problems in India. But the major ones are (a) the population problem, and (b) communal violence.

Population problems

Fifty years of independence in India have brought with them a mowed bag of achievements and failures. Now-a-days people are more concerned with the quality of their life and higher standard of living perceived. Fewer children are compatible with their life style in highly developed countries like Sweden and China. They have not only a low population growth rate but they have almost reached negative growth rate.

Population control and economic development go hand in hand. There is an urgent need to step up our efforts for checking population growth by removing female illiteracy in a short time span and by involving panchayats and other grass root organizations. International aid agencies are willing to extend financial help if we can formulate throughout and can

implement them effectively as per the agreed time schedule. Such a direct approach to check population growth should be supplemented by indirect method of economic development which naturally leads to lower population growth rate. Once the people start enjoying a higher standard of living they would like to maintain by planning and limiting the size of their families. This alone is the surest guarantee of a check on population growth.

Communal Violence

Communal violence in India has assumed alarming proportions. Hardly a year passes without a communal incident in one part of our country or the other. It dislocates social and economic life behind a trail of bitterness and terrible memories.

The task of curing India of communal virus is no less difficult than transforming her from a semi feudal superstition ridden society into a modern enlightened society. The hold of the past on our people has to be loosened by developing in them futuristic orientation. People of various communities and religious persuasion joined together in the common endeavor to overcome their present disabilities and to attain a prosperous future would have little time and inclination for petty squabbles and recriminations.

While elimination of communal feelings requires multi pronged strategy involving education, social and political measures. Prevention of communal conflagration requires alertness and immediate response from the law and order administration. The district administration should regularly update itself about the various developments likely to cause communal ruckus.

It can initiate preventive detention of mischievous elements from the concerned communities and can thus reduce the chances of a communal conflagration. The local magistrates

should keep themselves updated with the happenings in religious congregation and should be on the lookout for any serious consequences of communal trouble. Timely information can ensure preparedness of the administration for unpleasant situations as it will not be caught napping.

From the above discussion we can find that India has been suffering since Independence. We should not always depend upon Government. Educated people, social scientists etc should take steps to fight against it. ◈

The Indian economy is characterized by huge unemployment both in rural and urban areas. Unemployment is a major problem for Indian economy. India is basically an agricultural country. Most people are engaged in agriculture due to want of alternative occupation. A large part of the population engaged in agriculture can be removed without reducing agricultural output. This is called disguised unemployment.

Educated people secure a respectable position

◈ **Saksham Jain** X
U.P.S.C. Jain Public School
Chandigarh

India suffers from over population. At present the population of India is around 1.2 billion. Population is increasing at an explosive rate. Thanks to the advances in medical science and other public health measures. The death rate has been greatly reduced. The growth of population in relation to the growth of economy is much faster resulting in the incidence of malnutrition, unhealthy conditions of living and so on. A high birth rate accompanied by a low death rate cannot adjust population to the means of living. The population growth rate in India is still quite high compared to developed countries. For this the rapidly growing population swallows up the increased output and our country remains economically backward.

This necessitates rapid economic development to meet the requirements of increased population. Create awareness among the people of India regarding the demerits of population explosion. Encourage people to adopt birth control

methods. Educate people to take steps to control population. There is deficiency of capital equipment. The varied natural resources of India remain under utilized due to deficiency of capital equipment. It may be said that the vast resources like land, water and natural resources should be fully and at the same time properly utilized for the economics, for the benefit of the people at large. Under utilization of natural resources is yet another major problem for Indian economy.

Steps should be taken to modernize capital equipment. Private investment should be encouraged to make investment in capital intensive sector. Easy finance should be made available to businesses engaged in large scale industries. In India there is a great problem of securing adequate revenues through taxation. A large number of people live below the subsistence level. Again a high rate of taxation discourages private incentive as well as the free flow of foreign capital.

Encourage people to opt for higher education and professional courses. This would enable them to come out of poverty trap. An increase in their earning would result in increased collection in the form of direct and indirect taxation.

The Indian economy is characterized by huge unemployment both in rural and urban areas. Unemployment is a major problem for Indian economy. India is basically an agricultural country. Most people are engaged in agriculture due to want of alternative occupation. A large part of the population engaged in agriculture can be removed without reducing agricultural output. This is called disguised unemployment. They should be withdrawn from agriculture with a view to increasing their marginal productivity.

Educated people are more likely to secure a respectable occupation. Cottage industries should be promoted in rural areas. Industries that employ a large no of people should be encouraged. The problem of disguised unemployment can be

tackled by creating better opportunities of employment. Indian economy suffers from the problem of deficiency of per capital. People are too poor to save and invest to make for rapid economic development. As a result the per capita availability of capital like steel and energy is extremely low in India as compared to developed countries.

Check on excessive population growth. The natural resources of the country should be approximately utilized so that every section of the society can get its benefits. In India the per capita real income is very low resulting into low per capital purchasing power. This is due to the poor income of the people. For this the purchasing power of the people is extremely low.

Indian industries should either set up their own research and development centers. They can also enter into technical collaboration with foreign partners and manufacture the finished products in India.

India is very backward in industry. A large portion of the working people is engaged in agriculture. India imports a large quantity of fighter planes and defense equipment. Many of the electrical equipment of daily use are imported from other countries.

Both Indian and foreign investors should be encouraged to make products in India. Industries should be encouraged to manufacture defense equipments like fighter planes etc in India. India has defective economics infrastructure. It means that in India there are inadequacy of the means of transport and communication, irrigation and power. They retard the economic progress of India.

However attempts have been made to improve the transport and power systems. Agencies like industrial finance corporation, National industrial development corporation, industrial development bank, re-finance corporation, industrial

credit and investment corporation have been set up for the supply of long term finance to the large scale industries in India. Companies engaged in building infrastructure such as roads, dams, bridges etc should get easy finances. Foreign financial institutions can be encouraged to invest in building the infrastructure of India.

In spite of the problems listed above, if we compare the present economical condition of our country with the pre-independence period, we find that Indian economy was broken after independence of India. The present position of Indian economy though not satisfactory is much better than it was some 50-70 years ago. With the beginning of economic planning an era of economic development started. ◈

Even though India is one of the best democratic countries in the world, now-a-days the corruption done by our govt. offices is increasing rapidly. Accepting bribes, other gifts to canvas during elections are still happening in many states in India. The lokpal bill aims to remove corruption.

Terrorism must be strictly abandoned

◈ **Udith Krishnan** V
M. G. M. Central School
Karuvatta, Kerala

The developing country India is the seventh largest and second most populaus country in the world. Our country is known for the rich cultural heritage, tradition and unity in diversity. But even today, after 69 years of independence we are facing so many problems.

From the first day onwards we are trying to wipe out poverty from our land. We are aiming to do it through Pradhan Mantri Antydaya Annayojna. Being an agricultural country we are facing crisis in the agricultural sector. So many plans have been included in the five year project of our country as a solution for many problems.

The population explosion is also an issue of national concern. We are not able to use our natural and human resources in an effective manner as other countries do.

We can't perform well in Olympics or others events. Our talents are all going to other countries for better job

opportunities. If we can provide such things in a better way our country can develop with the young upcoming talents. One of the major national issues faced by our country is terrorism causing the death of many soldiers. Terrorist's attacks are making a great loss for our country. Terrorism must be strictly abandoned. Increase in number of crimes is a shocking fact which is a shame to our country. Strict laws must be implemented for better prevention. The unethical activities of the political parties or leaders also affect our country badly.

Even though India is one of the best democratic countries in the world, now-a-days the corruption done by our govt. offices is increasing rapidly. Accepting bribes, other gifts to canvas during elections are still happening in many states in India. The lokpal bill aims to remove corruption.

Thousands of students are completing their education each year. But we don't have enough job opportunities for all. This situation has to be changed. Programmes like (NREGS) National Rural Employment Generation Scheme must be implemented. The polluted rivers, lakes and lack of sanitation facilities are bad marks for developing countries like India. For this 'Swatch Bharat Abhiyan' was started to make our India clean and healthy.

In the upcoming years India will be a developed and independent nation in all aspects. Strict enforcement of swadeshi products will help us to become self-sufficient. Like this by solving big and small issues, we can build up an India that is clean, healthy and peaceful to live irrespective of caste, religion or any other differentiation. Hoping for a better India I conclude my essay here. Jai Hind. ◈

All the problems in India are due to corruption. It is not new. It has been prevalent in society since ancient times. It has become so common that people are now averse to thinking of public life with it. It has been defined variously by scholars. But the simple meaning of it is that corruption implies perversion of morality, integrity, character or duty out of mercenary motives i.e. bribery without any regards, honour and justice.

Unemployment is a serious problem

◈ **Chaitanya Lonare** X
Om Sai Central Public School
Chindwara, M.P.

National problems are not a new phenomenon in India. They are prevailing in India since ancient period. India has been fighting against it since a very long time. India can only fight it by becoming united as the proverb says 'Unity in Diversity".

National problems are in the form of poverty, illiteracy, unemployment, child labour, corruption, increasing population, price hike and natural problems such as pollution, global warming etc. There are also superstitious problems such as child marriage, untouchability, depriving of small castes and people. Many other crimes or say criminal problems such as robbery, kidnapping, rape, ravishment or violence are also uprising.

India is one of the poorest countries in the world. Many Indian people do not get two meals a day. They do not have good houses to live in. Their children do not get proper schooling. Poor people are the depressed and deprived class. They do not get proper nutrition and diet. Their conditions have not sufficiently improved even long after over 69 years of our

independence. Poverty is a national problem and it must be solved on a war footing.

Prices are ever increasing. Economists say a rise in prices is a sign of development and prosperity. But during the last two decades, prices of almost all the essential commodities have been increasing at an alarming rate. Not to speak of rising prices, things of daily use are sometimes not available in the market. Big businessmen hoard things and sell these in black.

Adulteration of eatables is a big health hazard. Due to price hike, there is a shortage of cooking gas, oil etc. in the kitchen of the poor. Over population has been the major problem in India. The population of India is an estimated 1.27 billions. Though India ranks second in population, it ranks 33 in population density. Indira Gandhi the then Prime Minister of India had implemented a forced sterilization programme in the early 1970s but the programme failed.

Next in the list is 'unemployment' which is a serious problem in India. It is becoming more and more serious day by day. Many of the Indians are jobless. This problem is rising fast. Every able bodied man and woman must get employment. If not the problem of unemployment will create difficulties for the development of the country.

The other and the most important is child labour. It has been an international concern because it damages, spoils and destroys the future of children. It is a great social problem. Yet there are millions of deprived children in our country who have never known a normal, carefree childhood.

Next one is illiteracy. It refers to the state of being unable to read or write. It is a great hurdle for the economic development of India. It entangles a man or a nation and eats into the vitality of life. It is a burning question today in India. It should be eradicated root and branch to make our life happy and prosperous.

Child marriage, untouchability, superstition, pollution, global warming etc are also prevailing in India. To root out such evils from the society we have to make our country unite. We have to make a good and responsible man and woman for our country's growth. It is very important to spread awareness in the society for the sake of the society.

Children are the future of India. They should be prepared well for their future and they should get perfect schooling and education. Adulteration of medicines and food supplements should be banned all over India so that poor people can also afford a luxurious life.

It is our duty to pay taxes to the income tax department. By paying it we and all Indians can get their commodities at a cheap scale. Corruption and reservation are the worst issues prevailing in India. They should be banned so that each and every people of India could get equal opportunity in getting education, jobs and social prestige.

India is not a poor country but all its money have been hidden as "black money" by the rich and powerful people. Every people should pay tax and if they don't, there should be raid in their houses.

Every Indian is equal before the law. But the deprivation of lower castes has defied this saying. We should treat everyone as our brother and sister. There is nowhere written that these people are very irregular and should be deprived. Government should treat these people as the Indians, not like their castes.

We should also take care of our environment. It is very much important to take care of it. Otherwise our country will become hell for living. Governments should start much more programmes like the Van Mahotsava. India is our heaven itself to live in. So by improving India we are improving ourselves. ◈

Poverty is responsible for mal-nutrition

◈ **Vijaya Bohra** XI
The Creative Brain Academy
Rajsamand, Rajasthan

Government should also play its role by making policies in favour of all, formation of laws against these problems, strict laws for violation of laws and the most important proper implementation. Also there must be renewal of laws, checking the condition of society, observing the results of laws on a regular basis. Hence, all the problems prevailing in nation must be eradicated as soon as possible.

India got freedom in the year1947 and it has become a developing nation but still there are many challenges in front of us. Nearly 260 million people who are below poverty line have to join mainstream, 100 % literacy, health for all, removal of corruption, food security. Breaking the caste barriers etc. are the burning issues which must be solved by the joint efforts of government, public and the responsible institutions. All the groups of society should give their contribution in eradication of all the national problems. Literacy and equal rights to the women can help resolving the problems. Education and employment are the two major factors which may control a number of problems such as terrorism, poverty, crimes, discrimination, communal riots etc.

Various problems

Many problems prevail in our society are responsible for the slow growth and development of India. These problems are

like the barriers which restrict India's becoming a developed nation. So many problems exist in our society. Some of the major national problems are— poverty; corruption; inflation; communal violence; educated unemployment; illiteracy; discrimination; crisis in education system; and other problems.

Poverty

Poverty refers to a situation when people's basic needs are not fulfilled. When people don't have the necessary food to eat or clothes to wear or shelter to stay then it is called poverty. Life becomes very difficult for people with income below poverty line. The negative effects of poverty are mentioned below—

Poor people will always have to depend on others to survive. Low quality foods may lead to bad nutrition. Poor people have less liberty for the choice of profession. Poverty may affect the moral & self esteem of people living in extreme hardship. Due to the large number of poor people there is limited scope for economic development of nation.

Malnutrition

The poverty is also a cause of many other national problems. The poverty is responsible for the malnutrition. Due to poverty the people can't afford two times meal in a day and in case they can afford food it is not a food with the proper amounts of nutrition required.

Corruption

In simple words the meaning of corruption is that corruption implies perversion of morality, integrity, character and duty out of mercenary motives i.e. bribery without any regard to honour.

Corruption is a global problem. It affects developing countries more than the developed countries. In India the corruption is not a new phenomenon and it prevails since the ancient time.

Corruption in India has become so common that people now are averse to thinking public life with it. Dishonesty, exploitation, malpractices, scams and scandals are manifestation of corruption.

Inflation

It refers to rise in the price of goods and fall in value of money. It refers to the problem of rising prices. The problem has been with us for a long time. The trend of rising prices in India has in time aroused dismay, consternation and anger.

Communal Violence

When the misunderstanding between two communities takes the form of violence, it is called communal violence. Riots are the form of violence.

Causes— social issue; religious matter; and politically influenced. These are easy to spread in areas where one community is minority and other is in large majority. The Indian states— U.P. Bihar and Jammu & Kashmir mainly suffer from this problem. The religiously sensitive areas are affected.

Effects— destroys the peace & harmony; large life loss; property loss; restriction in nation's development; breaks unity of two communities; and many innocent people suffer.

Suggestion— making laws and strict punishment. Even after many years of independence many major problems prevail in our country. These problems are to be solved by the joint efforts of the government and the public. Many problems are present only in the rural areas. These are to be solved. To stop problems like corruption which are both sided, both the government and the public has to put effort to stop corruption making India clean, healthy, corruption free, completely literate, free of discrimination. This must be the aim of all the citizens. With the government efforts citizens must also fulfill their duties. They must be aware of all their duties. ◈

By modernizing farm techniques which guarantee a definite success an increase in youth participation on agricultural fields is economically possible. Technological advancement should be passed to small farmers. The farmers should be helped to shift to cultivating crops that would be economical, where existing crops would not do well under drought and bad weather conditions.

Crop insurance is a must

◈ **Amrit S.** VIII
Adhyapana School
Madurai, Tamil Nadu

Farmer is the soul of the country. From millionaire to roadside vendors everyone depend on farmers. They are called farmers because they not only farm their land but they farm our lives. They are selfless people who work very hard though they reap very little profit. The nutrients are abundant. Food which we get in India is because of them. While we are marching towards industrialization, they are living bound to nature. According to me for a country which has the capacity to produce three thousand crops in a year, the ceaseless cases of suicides by farmers are national problems which need urgent mending. People do not consider this issue seriously. Death count of disaster raises more sympathy than suicide of farmers. We must look critically into the issue, resulting in farmer's death.

Problems

(a) Agriculture is an unorganized activity today. Indian agriculture is an unorganized sector. No systematic,

institutional and organized planning is involved. Institutional finances are not adequately available.

(b) Most farms are small and economically unfeasible. Farmers own as little of two acres. So, they become vulnerable as cultivation on small area is not economical. Also in many cases farmers pay lease to owners of the land. So their earnings are lost.

(c) Middlemen and economic exploitation of farmers.

(d) Government programs do not reach small farmers.

(e) High indebtedness and exorbitant interest rates.

(d) Real estate mafia.

Solutions

(a) Multiple Crops: Cultivation of multiple crops such as coconut, turmeric, pine apple, banana, papaya, ginger will yield profitable results to the farmer.

(b) Special agriculture zone: Agricultural zones has to be established like industrial zones where only farming and agriculture practice are allowed.

(c) Need to modernize agriculture: By modernizing farm techniques which guarantee a definite success, an increase in youth participation on agricultural fields is economically possible. Technological advancement should be passed to small farmers. The farmers should be helped to shift to cultivating crops that would be economical, where existing crops would not do well under drought and weather conditions.

Educate the farmers

Many farmers in India are not aware of crop rotation. The government has ignored education in agricultural sectors in particular in rural areas. This is the reason farmers are not

adequately aware of various schemes.

Clubbing of small fields may help

Several farmers who own small pieces of land can join together and combine everything to one large chunk.

Need for meaningful crop policy

Crop insurance is a must and claim should be easy. Traditional crop insurance is based on field loss assessment which is often not feasible. We can use index based insurance which is transparent and all the insurers are treated equally. It has low operational, translation costs while ensuring quick payouts.

Need for better water management

Irrigation facilities that are currently available do not cover entire cultivable land. In most cases, it is not the lack of water but the lack of proper water management. Improved modern methods of rain water harvesting should be developed.

Interstate cooperation on water resources connecting rivers throughout the country, construction of national waterways will help to divert surplus water to needy areas.

Alternate sources of income for farmers

In drought affected areas, government should take employment generation programs to reduce dependence on agriculture as sole source. Such programs should be standardized.

Farmers should be enabled to divide their activities into 3 parts, one for crop production, one for animal husbandry or fisheries and one for timber production. ◈

India suffers from over population

◈ **Pooja** VIII
T.I.T. Sr. Sec. School
Bhiwani, Haryana

India has to depend on foreign countries for the supply of machinery capital goods and technical knowledge. Indian industries should either set up their own research and development centers. They can also enter into technical collaboration with foreign partners and manufacture the finished products in India.

We have many national problems. In this essay we discuss some problems and their solutions.

India suffers from over population

At present the population of India is around 1.2 billion. Population is increasing at an explosive rate. Thanks to the advances in medical science and other public health measures, the death rate has been greatly reduced.

Solution

(a) This necessitates rapid economic development to meet the requirements of increased population.

(b) Create awareness among the people of India regarding the demerits of population explosion.

(c) Encourage people to adopt birth control methods.

(d) Educated people are more likely to take steps to control population.

Unemployment

The Indian economy is characterized by huge unemployment, both in rural and urban areas. Unemployment is a major problem for Indian economy. India is basically an agricultural country. Most people are engaged in agriculture due to want of alternative occupation. A large part of the population engaged in agriculture can be removed without reducing agriculture output. This is called disguised unemployment. They should be withdrawn from agriculture with a view to increase their marginal productivity.

Solution

1. Educated people are more likely to secure a respectable occupation.
2. Cottage industries should be promoted in rural areas.
3. Industries that employ a large number of people should be encouraged.
4. The problem of disguised unemployment can be tackled by creating better opportunities of employment.

Poverty

First of all the poor governance system and the lack of will power are two main causes of poverty. The people at the helm of affairs are not willing to address the problem of poverty. Therefore they do not provide any solution. Rather they are part of the problems. They are not serious at all in uprooting this problem. Instead they are promoting it through their poor governance.

Solution

If we take remedial measures, after knowing its roots, we will be able to abolish this dire problem.

(a) First of all, we must improve our governance system. But before doing this we will need determination because determination is the basic thing before doing anything.

(b) Secondly, we must give right direction to our directionless and misdirected policies. Personal agenda and motives must be kept aside. Policies must be formed for the well being of the people. The people in power should also rectify themselves.

(c) We must get rid of the evil grips of IMF and other leading agencies.

Pollution

The characteristic issues in India become more certified reliably and the country is changing into a bit of a wreck on this front with an authentic unlucky efficiency of direction and in overabundance of 1 billion people.

Solution

Government should change regulations and laws that blacklist felling of trees inside India. People use more eco-friendly materials to reduce pollution. Government should aware everyone.

Lack of technical knowledge

India has to depend on foreign countries for the supply of machinery capital goods and technical knowledge. Indian industries should either set up their own research and development centers. They can also enter into technical collaboration with foreign partners and manufacture the finished products in India.

We have many problems to solve. But people should know their responsibility towards the nation and cooperate with the government. ◈

Drug addiction is a problem that has been increasing immensely in our society today. Addiction can trap anyone. It can lead to harming one's body, causing problems in family structure and contribute to the delinquency in the society. Drug addiction is a chronic often relapsing brain disease. This is because the abuse of drugs leads to changes in the structure and function of the brain.

Agriculture must be made profitable

◈ **Aniket Purshottam Pandey** IX
Shreyas Convent
Nagpur, Maharashtra

There are millions of people all over the world who do not have access to water or if they have access that water is unable to be used. Clean drinking water is a scarce for at least there are millions of people across this globe who spend their entire day searching for it. Yet people who have access to safe, clean drinking water take it for granted and don't use it wisely.

Solutions for water scarcity

There are plenty of opportunities out there that people can use in order to learn more about the world around them. By educating those who are not dealing with water scarcity, they can be in a position to help. There are plenty of technologies out there that allow us to recycle rain water and other water that we may be using at our home. There has been a lot of work in the world of water conservation but there is also a lot of that needs to be done in order to ensure that the rest of the world is able to conserve water.

Poverty

Poverty refers to a situation when people are deprived of basic necessities of life. It is often characterized by inadequacy of food, shelter and clothes.

Causes of poverty

Poor agriculture, growing population, gap between the rich and the poor, corruption and black money are the main causes of poverty.

Solution

We have to solve the problems of India's poverty: Farmers must get all facilities for irrigation. They should be trained and educated. Agriculture must be made profitable. The ever rising population should be checked. Family planning schemes should be introduced.

Corruption

Lack of empathy and bad governance causes corruption. Corruption is further reinforced due to poverty and inequality.

How to stop corruption and prevent it?

Give better salary in jobs. Increase the number of workers. Law to dismiss from service if found to be involved in corruption. Camera should be used in most government offices. Speed up the work process in government offices. Make media responsible and fix laws to be so. Crime and corruption are top problems in emerging and developing nations.

Environmental pollution refers to the introduction of harmful pollutants into the environment. The major types of environmental pollution are air pollution, water pollution, noise pollution, thermal pollution, soil pollution and light pollution. Deforestation and hazardous gaseous emissions also lead to

environmental pollution. Air pollution is one such form that refers to the contamination of air, irrespective of indoors or outdoors. It occurs when any harmful gases, dust, smoke enters into the atmosphere and makes it difficult for plants, animals and humans to survive as the air becomes dirty.

Water pollution is caused by the intentional or unintentional release of toxic chemical materials, contaminants and harmful compounds into various bodies of water such as rivers, lakes and the ocean. Sewage treatments should be done. Prevent river water from getting polluted.

Unemployment is a situation where, in the person, willing to work fails to find a job that earns him living. Unemployment means lack of employment. In simple way unemployment means the state of being unemployed.

Caste systems are a form of social and economical governance that is based on principles and customary rules. Caste systems involve the division of people into social groups (castes). The systems of caste are causing inequality among the people.

Drug addiction is a problem that has been increasing immensely in our society today. Addiction can trap anyone. It can lead to harming one's body, causing problems in family structure and contribute to the delinquency in the society. Drug addiction is a chronic often relapsing brain disease. This is because the abuse of drugs leads to changes in the structure and function of the brain. For solution of this problem one should avoid undue peer pressure. One should take education and counseling.

There is a wide array of factors that has led to the increasing spate of farmer suicides in India. The lands are not as productive as before. The markets are failing, the debts are piling up and the pests cannot be kept at bay. More than an economic problem this has now assumed political and humanitarian dimensions especially since the past decade.

Problems faced by farmers in India

Problems in maintaining farm livestock owning to increasing costs. Problems are getting worse because of reluctance of commercial banks, lack of proper irrigation, absence of mechanization, insufficient transport facilities.

Solutions that can help the farmers

1. They need to be educated about various facets of farming.
2. Centers of excellence need to be set up to help them.
3. Agricultural universities need to discover new science based practical and technology.
4. Insurance is needed.
5. They need to be given better access to credit and at better terms and conditions.
6. Land holdings should be consolidated.
7. Organic manure should be used.
8. Mechanization is needed.
9. Markets should be regulated.
10. Direct provision of capital to farmers by government.
11. Encouraging integrated, contract and co-operative farming.
12. Developing water sheds. ◈

Since the Indian constitution was completed in 1949, education has remained one of the priorities to Indian government. The first education minister Maulana Azad founded a system of education which aimed to provide free education at the primary level. Primary education was made free and compulsory for children from 6-14 and child labour was banned. The government introduced incentives to education.

Corruption is wide-spread in India

◈ **Dipanshu Sharma** X
Sarvada Modern Sec. School
Karawal Nagar, Delhi

The population of India is an estimated 1.27 billion though India ranks 2nd in population. Indira Gandhi the former prime minister of India had implemented a forced sterilization programme in the early 1970s but the programme failed. Officially men with two children or more were required to be sterilized but many unmarried young men, political opponents and ignorant poor men were also believed to have been affected by this programme. The programme is still remembered and regretted in India and is blamed for creating a public aversion to family planning which hampered Govt programmes for decades.

Poverty

Indians suffer from substantial poverty. 21.9% of its population is below its official poverty limit. The world bank in 2011 based on 2005's PPS international comparison program estimated 23.6% of India's population or 276 million people living below $1.25 per day on purchasing power parity. According to united

nation's millennium development GOD (MDG) programme 270 millions or 21.9% people lived below poverty line of $1.25 million in 2011-2012 as compared to 41.6% in 2004-05 official figures estimate that 27.5% of Indians lived below the national poverty line in 2004-05. A 2007 record by the state run national commission for enterprises in the unorganized sector NCEUS found that 25% of Indians or 236 millions people lived on less than 20 rupees per day with most working in "informed labour sector with no job of social security, live in object poverty". Indira Gandhi prime minister of India in 1971 election campaign gave the slogan "garibi hatao desh bachao" but it helped little to the cause of poverty eradication in India. It was part on the 5th five year plan.

Poor education

Since the Indian constitution was completed in 1949, education has remained one of the priorities to Indian government. The first education minister Maulana Azad founded a system of education which aimed to provide free education at the primary level. Primary education was made free and compulsory for children from 6-14 and child labour was banned. The government introduced incentives to education for instance, the provision of mid day meals in schools were introduced.

Many similar initiatives echoed and the largest of such initiatives is "Sarva Shiksha Abhiyan" which actively promoted "education for all". In line with this the united progressive alliance (UPA) aimed to increase their expenditure on education to 6% of its gross domestic product (GDP) from values fluctuating about 3% through their national common minimum programme (NCMP) in 2004. "The right of children to free and compulsory education" act was also imposed in 2009. Despite these initiatives education continues to persist as impediment to development.

Corruption

Corruption is widespread India. India is ranked 76 out of a 179 countries in transparency international's corruption perceptions index but its score has improved consistently from 2.7 in 2002 to 3.1 in 2011. In India corruption takes the form of bribes, tax evasion, exchange controls, embezzlement etc. A 2005 study done by transparency international (unreliable source) India found that more than 50% (dubious) had firsthand (dubious) experience of paying bride or peddling influence to get a job done in a influence to get a job done in a public office. The chief economic consequences of corruption are the loss to the exchequer, an unhealthy climate for investment and an increase in the cost of government subsidized services.

The IT India study estimates the monetary value of petty corruption in 11 basic services provided by the government like education, healthcare, judiciary, police etc to be around Rs. 21,068 crores. India still ranks in the bottom quartile of developing nations in terms of the ease of doing business and compared to China and other lower developed Asian nations, the average time taken to secure the clearances for a startup or to invoke bankruptcy is much greater. Recently a revelation of tax evasion (Panama's paper's leak) case involving some high profile celebrities and business has added spark to the fumes of corruption against the elite of the country. ◈

Every problem has a solution

◈ **Zainab Ali** VII
Delhi Public School
Danapur Cantt. Patna, Bihar

Poor people move from village to towns and from one town to another in search of work. Since they are mostly illiterate there are very few employment opportunities open for them. Due to unemployment many poor people are forced to live an unfulfilled life.

Indian economy suffers a no of problems, one of which is unemployment. The Indian economy is characterized by huge unemployment both in rural and urban areas. Unemployment is a major problem Indian economy comes across. Unemployment occurs when people who without work are actively seeking paid work. Unemployment is often used as a measure of the health of the economy. India is basically an agricultural country. Agriculture is the most labour absorbing sector of the economy. A large part of the population engaged in agriculture due to want of alternative occupation. They should be withdrawn from agriculture with a view to increase their marginal productivity.

Poor people move from village to towns and from one town to another in search of work. Since they are mostly illiterate, there are very few employment opportunities open for them. Due to unemployment many poor people are forced to live an unfulfilled life.

“Every problem has a solution”. The meaning of this phrase fits with the fact that we are talking about. We can solve the problem of unemployment by taking long as well as short measures. Educated people are more likely to secure a respectable occupation. Population growth has to be checked. Family planning should be made prospective. People should be encouraged to go for skill based education. Industries that employ a large number of people should be encouraged. Each one should give financial help to the unemployed to set up some industries or start some business. Cottage industry should be promoted in rural areas. Government should promote the establishment of industries by private sector. Thus the problem of unemployment may be solved.

Indian economy is a developing economy. By taking the remedial measures to tackle the economic problems India can surely target to become a developed economy. The current economic scene in India is more or less encouraging but we are still way behind achieving full employment, poverty eradication, education for all industrialization and unemployment. ◈

Corruption is a major problem

◈ **Rudhi Gupta** IX
Mount Carmel School
Dwarka, Delhi

In countries like India having a large population, education is one of the main priorities. More and more people are getting educated though in some parts like Haryana and Rajasthan people don't prioritize the fact that education is important for everyone and especially for girls.

There are a lot of social issues and national problems in Indian society. Over the years there are only a few problems that have been acted against while some are rapidly worsening. These problems lie in between India becoming a developed and prosperous country.

Poverty

India suffers from substantial poverty. In 2012 the Indian government stated that 21.9% of its population is below its official poverty limit. The best way to reduce poverty is to create well paid and good jobs for the underprivileged and raise the minimum wages. More and more women and girls should be educated so that they can get good jobs and they can earn for their own living and their families. When women have equal access to education and go on to participate fully in business and decision making, they are the key driving force against poverty.

Dowry

The dowry system is thought to put great financial burden on the bride's family. In some cases the dowry system leads to crime against women, ranging from emotional abuse to even deaths. The payment of dowry has long been prohibited under specific Indian laws including the dowry prohibition act 1961 and subsequently by sections 304 B and 498 A of the Indian penal code but even now in some parts of India like Haryana, Rajasthan and Punjab dowry is still practiced. People openly demand dowry in spite of it being considered as crime.

This is mainly because there is no fear of law. The existing laws are not implemented strictly and the cases filed take a long time for the verdict. Therefore such cases should be taken seriously and actions should be taken, like life imprisonment or even they should be sentenced to death for strictness. Only then people will stop practicing dowry because they will fear the consequences.

Unemployment

Unemployment is a serious issue in countries like India. Countries with a large population usually face this problem but if population is considered as an asset rather than a liability to the country. Countries can develop faster. Investments in the field of education, medical care and proper training can help in reducing unemployment and poverty. Illiteracy will be reduced and India will take steps to become a developed country. Countries like Japan, lacking natural resources have made investments on people and almost every citizen of Japan is literate and well off. People have got jobs and thus Japan is a rich and developed country now. Also to reduce unemployment, population should be controlled by reducing the birth rate.

Corruption

Corruption in India is a major problem that adversely effects

the economy. Corruption is a form of dishonest or unethical conduct by a person entrusted with a position of authority often to acquire personal benefit. It includes bribery and embezzlement though it may also involve practices that are legal in many countries.

A study conducted by transparency international in 2005 found that more than 62% of Indians had firsthand experience of paying bribes or influence peddling to get jobs done in public offices successfully. Bribing is at the rise and people are trained at bribing. Better salaries should be given to people working in offices and banks. Number of workers should be increased in the government sectors and only trustable officers should be given the high posts.

Sanitation

Sanitation is the hygienic means of promoting health through prevention of human contact with the hazards of wastes as well as the treatment and proper disposal of sewage or waste water. Sanitary sewers, sewage treatment, surface runoff management, solid waste management, excreta management can help in promoting sanitation. A lot of diseases are found to be caused just because of improper sanitation.

In rural areas, more and more toilets should be installed in every house. There should be at least one toilet in every house of a rural area. In public toilets, sanitation is not good. The toilets are stinking and are not maintained. We should not just keep on constructing toilets but maintain proper hygiene in bathrooms and washrooms also.

Religious Violence

Constitutionally India is a secular state but large scale violence has periodically occurred in India since independence. In recent decades communal tensions and religion based politics have become more prominent. In Jammu & Kashmir since

March 1990 estimates of between 2,50,000 to 3,00,000 pandits have migrated outside Kashmir due to persecution by Islamic fundamentalists in the largest case of ethnic cleansing since the partition of India.

Poor response to education

In countries like India having a large population, education is one of the main priorities. More and more people are getting educated though in some parts like Haryana and Rajasthan people don't prioritize the fact that education is important for everyone and especially for girls.

Some people who want to get their children educated, get only the boys educated uptill class 12th. They consider it to be a big thing but they do not realize that girls are the future of the country. Girls must be educated in every part of India. Only in south India and some parts like Mizoram, Tripura, Punjab are well educated. The 'Sarva Shiksha Abhiyaan' has made education for everyone available and compulsory but some more initiatives are to be taken. People are increasingly being encouraged to get their children educated but the response is not so good in some states like Rajsthan, Hyderabad, Bihar etc. ◈